आम आदमी का अपना दैनिक अखबार

तरुण छत्तीसगढ़

■ रायपुर,गुरुवार 3 अगस्त 2023 ■ श्रावण कृष्ण पक्ष-2 ■ वर्ष- 39 ■ अंक-126 ■ पृष्ठ-8 ■ डाक संस्करण 4 अगस्त 2023 ₹ 1.00

E-mail:
tarunpressraipur@gmail.com
tarun_press@yahoo.co.in
Web:
www.tarunchhattisgarh.in
facebook.TarunChhattisgarh
Twitter - Tchhattisgarh36
Instagram -tarunchhattisgarh.raipur
phone: 0771-2543112

संक्षेप

बघेल ने दी राज्यपाल को जन्मदिन पर बधाई

रायपुर,3 अगस्त। मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने आज प्रदेश के राज्यपाल बिस्वा भूषण हरिचंदन को जन्मदिन पर बधाई दी है। मुख्यमंत्री ने अपने बधाई संदेश में कहा राज्यपाल हरि चंदन के दीर्घायु और स्वस्थ जीवन की कामना करते हुए उन्हें शुभकामनाएं दी हैं।

आधी रात गांव में मची अफरा तफरी

जशपुर,3 अगस्त। बीती रात एक गाँव मे उस वक़्त अफरा तफरी मच गई जब एक दंतैल हाथी अचानक एक बस्ती में घुस गया ओर मकान तोड़ने लगा । रात को हाथी की दस्तक देख बस्ती के लोग जान बचाकर भागने लगे । इसी भागने के क्रम में एक महिला को दंतैल ने कुचल दिया और महिला की मौत हो गयी। घटना जिले के कांसाबेल वन परिक्षेत्र की है। बीती रात यहां के देवरी गांव में एक दंतैल ने न केवल जमकर उत्पात मचाया बल्कि एक 50 वर्षीय महिला की जान भी ले ली । बताया जा रहा है कि आधी रात को दंतैल हाथी बस्ती में घुस गया और घरों में तोड़ फोड़ करने लगा ।हाथी देख लोग घर छोड़कर भागने लगे । लोगो को भागते देख हाथी ने भी ग्रामीणों को दौड़ाना शुरू कर दिया ।इसी क्रम में सुमति बाई नाम की एक महिला दंतैल के चपेट में आ गयी। घटना की सूचना के बाद वन अमला मौके पर पहुंच गया है।

स्कूल वाहन पलटा 17 बच्चे घायल

मोहला-मानपुर,3 अगस्त। जिले में स्कूली बच्चों से भरी पिकअप वाहन अचानक अनियंत्रित होकर पलट गई. इस हादसे में कुल 17 बच्चे घायल हुए हैं. जिसमें कुछ बच्चों को चोटें आई है तो कुछ गंभीर हैं. सभी घायलों का इलाज अस्पताल में जारी है. यह मामला खड़गाव थाना क्षेत्र का है. बताया जा रहा ही कि सभी स्कूली छात्र छत्तीसगढ़िया ओलंपिक में भाग लेकर अपने घर वापस लौट रहे थे तभी यह हादसा हुआ. इस हादसे से शिक्षा विभाग पर सवाल उठता है कि आखिर बच्चों को लापरवाही पूर्वक पिकअप वाहन से क्यों लाया लेजाया जा रहा था. जानकारी के अनुसार, प्रदेशभर में छत्तीसगढ़िया ओलंपिक चल रहा है. जिसमें स्कूली बच्चे अलग-अलग खेलों में हिस्सा ले रहे हैं. वहीं मोहला-मानपुर जिले के ग्राम बोगा फुलकोड़ो में भी खेल आयोजित किया गया था. जिसमें स्कूली बच्चे हिस्सा लेने पहुंचे थे. छत्तीसगढ़िया ओलंपिक में हिस्सा लेने के बाद सभी बच्चे पिकअप वाहन में सवार होकर अपने गांव लौट रहे थे तभी ग्राम फुलकोड़ो और भर्रीटोला के बीच वाहन अनियंत्रित होकर पलट गई.

मानसिक रोगी ने की पत्नी व 3 बेटियों की हत्या

■ तरुण छत्तीसगढ़

जांजगीर-चांपा,3 अगस्त। छत्तीसगढ़ के जांजगीर जिले से दिल दहला देने वाली घटना सामने आई है. यहां एक शख्स ने अपनी पत्नी सहित 3 बच्चों की निर्मम हत्या कर दी. इस हत्याकांड से इलाके में सनसनी फैल गई है. घटना की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंच गई है. पुलिस मर्ग कायम कर जांच में जुट गई है और आरोपी को हिरासत में ले ली है. यह मामला पंतोरा चौकी थाना बलौदा का है. बताया जा रहा है की मां अपने तीन बेटियों के साथ घर में सो रही थी तभी आरोपी ने रांपा (फावड़ा) से मारकर सबको मौत के घाट उतार दिया. जानकारी के अनुसार, बलौदा थाना क्षेत्र अंतर्गत पंतोरा चौकी के देवरी गांव में पति ने पत्नी सहित तीन बच्चियों पर रांपा से हमला कर उनकी हत्या कर दिया. मृतकों का नाम पत्नी मोंगरा 40 वर्ष, पूजा 16, भाग्य लक्ष्मी 10, याचना 6 वर्ष है. हत्या के वारदात

को अंजाम देने के बाद आरोपी घर का दरवाजा बंद कर फरार हो गया. इस हत्याकांड को अंजाम आरोपी ने 31 जुलाई की रात को दिया था. इस घटना की जानकरी 2 अगस्त की रात को लगी. जिसके बाद गांव के सरपंच की सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची. घटनास्थल पर पहुंचकर पुलिस जांच में जुट गई है. वहीं आरोपी को हिरासत में ले लिया गया है.

बताया जा रहा है कि इस हत्याकांड का आरोपी देशराज कश्यप की मानसिक स्थिति ठीक नहीं है, विगत 10 साल से उसका इलाज चल रहा है. फिलहाल, इस पूरे मामले में पुलिस जांच कर रही है. घटना की जानकारी देते हुए एसपी विजय अग्रवाल ने बताया कि पुलिस को कल रात सरपंच से सूचना प्राप्त हुई थी कि गांव के एक घर में महिला समेत तीन बच्चों का शव पड़ा हुआ है. प्रथम दृष्टया देखने से लगता है कि उनके साथ कोई घटना हुई है. घटना की सूचना पर चौकी प्रभारी अपने बल के साथ पहुंचे. बाद में एसडीओपी और एफएसएल की टीम मौके पर पहुंची. इस मामले में पता चला कि मृतिका का पति पिछले आठ 10 साल से मानसिक रूप से अस्वस्थ चल रहा है और घटना के बाद से वह फरार है. जिसके बाद इस मामले में तुरंत मर्ग कायम कर आज सुबह पंचनामा की कार्रवाई की गई है. साथ ही पोस्टमार्टम के लिए शवों को रवाना कर दिया गया है. इस हत्याकांड मामले में मृतिका के पति को हिरासत में ले लिया गया है. इस मामले में 302 के तहत अपराध पंजीबद्ध कर आगे की कार्रवाई की जा रही है.

ज्ञानवापी परिसर मामला : एएसआई सर्वे को मिली हरी झंडी

हाईकोर्ट ने मस्जिद कमेटी की याचिका को किया खारिज

लखनऊ,3 अगस्त। वाराणसी के ज्ञानवापी परिसर के एएसआई सर्वे को लेकर आज इलाहाबाद हाई कोर्ट मुस्लिम पक्ष की याचिका पर फैसला आ गया है। हाईकोर्ट ने मस्जिद कमेटी की याचिका को खारिज कर दिया है और ज्ञानवापी परिसर में एएसआई सर्वे पर हाईकोर्ट ने रोक लगाने से इंकार किया गया है। आज या फिर कल से यह सर्वे शुरू हो सकता है। जिससे हिंदू पक्ष को एक बड़ी राहत मिली है। बता दें कि, इलाहाबाद हाई कोर्ट ने आज मुस्लिम पक्ष की याचिका पर अपना फैसला सुनाया है। अब ज्ञानवापी परिसर के एएसआई सर्वे पर रोक नहीं होगी। दरअसल ज्ञानवापी के सर्वे कराए जाने के वाराणसी जिला अदालत के फैसले के खिलाफ मुस्लिम पक्ष ने 21 जुलाई को हाईकोर्ट में याचिका दाखिल की थी। जिस पर चीफ जस्टिस प्रीतिंकर दिवाकर की सिंगल बेंच ने सुनवाई पूरी होने के बाद 27 जुलाई को अपना फैसला सुरक्षित रख लिया था। इस पर ही आज हाईकोर्ट ने अपना फैसला सुनाया है और यह फैसला हिंदू पक्ष के लिए राहत की खबर है। इस फैसले से पहले अंजुमन

इंतजामिया मसाजिद कमेटी की तरफ से हाईकोर्ट में एक सप्लीमेंट्री एफिडेविट दाखिल किया गया। जिसमें अदालत से अपील की गई थी कि वाराणसी ज़िला अदालत के सर्वे कराने के फैसले और हिंदू पक्ष की याचिका खारिज की जाए। इसके लिए 1957 के जनरल सिविल रूल के नियम 17 का हवाला दिया गया था। मस्जिद कमेटी के सीनियर एडवोकेट फरमान नकवी का कहना था कि सर्वे के लिए होने वाला खर्च एडवांस में उस पक्ष की तरफ से जमा होना चाहिए था, जो पक्ष ऐसा चाहता है, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। इसलिए हिंदू पक्ष की अपील और वाराणसी जिला कोर्ट का,स्ढ्ढ से ज्ञानवापी परिसर का सर्वे कराने का फैसला रद्द किया जाए।

प्रतिबंध के बाद भी पंचायत लाल ईंटों से करा रहा निर्माण

कांकेर,3 अगस्त (हेमंत बेश्रा)

शासकीय निर्माण कार्य में लाल ईंटों से काम कराने पर भले ही शासन ने रोक लगाई हो लेकिन इसका असर नरहरपुर तहसील में दिख ही नहीं रहा है। ताज़ा उदाहरण कांकेर जिले के तहसील नरहरपुर का है। ग्राम पंचायत मानिकपुर के आश्रित ग्राम झलियामारी व हटकाचारामा मे पीडीएस गोदाम निर्माण, कन्हनपुरी मे आंगनबाड़ी निर्माण, ग्राम पंचायत बाबूसाल्हेटोला के आश्रित ग्राम बागोड़ मे महिला स्व.सहायता समूह भवन निर्माण, जिला सहकारी बैंक अमोडा में प्रतिबंधित लाल ईंटों का उपयोग किया जा रहा है! जिसके वजह से बड़ी मात्रा मे लाल ईटो का निर्माण हो रहा है और जंगलो के लकड़ियों को इन ईंट भट्ठों में जलाया जा रहा है। जिससे हर वर्ष हजारों पेड़ कट रहे हैं। पर्यावरण के संरक्षण के लिए शासन द्वारा तीन वर्ष पूर्व ही लाल ईंटों से किसी भी शासकीय भवनो के निर्माण पर पूरी तरह से रोक लगा दी गई है। इस आदेश के बाद क्षेत्र के कई बेरोजगारों ने फ्लाई ऐश ईट के निर्माण की कि इकाई शुरू कि है लेकिन आज भी क्षेत्र में लाल ईंटों का उपयोग पहले की तरह ही हो रहा है। इन भवनों का निर्माण कार्य ग्राम पंचायतों के द्वारा कराया जा रहा है। इस सम्बन्ध मे जब तकनीकी सहायकों से जानकारी ली गई तो कुछ बोलने व बताने से बचते नज़र आये। अब देखना यह होगा कि सम्बंधितों पर क्या कार्रवाई की जाती है।

क्या कहते हैं अधिकारी

तहसील नरहरपुर अंतर्गत जिन जिन गांवों में सरकारी भवनों में लाल ईंट का उपयोग किया जा रहा है वहां जिला पंचायत के टीम द्वारा जांच कराया जाएगा !जांच में जो भी पाया जाएगा उसके अनुसार कार्यवाही की जाएगी साथ ही खनिज विभाग और एसडीएम को निर्देशित किया जाएगा कि इस संबंध में जांच करके उचित कार्रवाई करें।

सुमित अग्रवाल,जिला पंचायत सीईओ, कांकेर

करेंट लगने से दादा-पोते की मौत

महासमुंद,3 अगस्त ■ तरुण छत्तीसगढ़

छत्तीसगढ़ के महासमुंद में करेंट लगने से दादा और पोते की मौत हो गयी। घटना कोमाखान थाना इलाके के खुर्शीपारी के एक फार्म हाउस का बताया जा रहा है। जहाँ मुख्य गेट में करेंट फैला था, जिसके चपेट में आने से दादा और पोता का मौत हो गया। वहीं सूचना पर पुलिस मौके पर पहुँचकर मर्ग कायम कर मामले की जांच में जुट गयी है। जानकारी के मुताबिक गिरधारी लाल पांडे उम्र 70 वर्ष रोज की तरह दोपहर में फार्म हाउस का काम खत्म कर घर के लिये निकल रहा था। जैसे ही वह मेन गेट खोला तो उसे करेंट लगने से उसकी मौत हो गयी,वहीं मृतक का पोता डिगेश उम्र 15 वर्ष दादा को मेन गेट पर गिरा हुआ देख जैसे ही वहाँ पहुँचा तो वह भी करेंट की चपेट में आ गया। जिसके बाद परिजनों ने डिगेश को नुआपोड़ा उड़ीसा लेकर गये जहाँ उसकी मौत हो गयी।

जानकारी के मुताबिक मेन गेट से सटे बिजली के सर्विस वायर होकर गया था। जिसमें फाल्ट आने के चलते मेन गेट में करेंट आया जिसके चपेट में आने से दादा और पोते की मौत हो गयी।

कोरबा-धमतरी व अंबिकापुर में ईडी की दबिश

रायपुर,3 अगस्त ■ तरुण छत्तीसगढ़

प्रवर्तन निदेशालय एक बार छत्तीसगढ़ में सक्रिय हो गया है. कोरबा के साथ धमतरी और अंबिकापुर में व्यापारियों के ठिकानों पर दबिश दी है. ईडी की कार्रवाई से व्यापारियों में हड़कंप मचा हुआ है. मिली जानकारी के अनुसार, ईडी की छह सदस्यीय टीम कोरबा में सीतामढ़ी निवासी पान गुटखा के थोक व्यवसाई शिव अग्रवाल के साथ सीतामणी मार्ग स्थित एक और व्यापारी रूढ़मल अग्रवाल के घर सुबह 4 बजे पहुंची. टीम की दबिश के दौरान सशस्त्र बल के जवान घर के बाहर निगरानी कर रहे हैं. वहीं धमतरी में भी ईडी के दो व्यापारियों के ठिकानों पर छापा मारे जाने की खबर है. इनमें से एक राइस मिलर बताया जा रहा है, तो दूसरा ठेकेदार. इसके साथ-साथ ईडी के अंबिकापुर में भी व्यापारियों के ठिकानों पर छापा मारने की खबर सामने आ रही है.कोरबा में ईडी की छापेमारी की खबर से सक्ती जिले के भी व्यापारियों में दहशत देखी जा रही है. सक्ती का एक व्यापारी अंडरग्राउंड हो गया है. बताया जा रहा है कि कोरबा में जिस व्यापारी के यहां ईडी ने छापा मारा है, उसका संबंध सक्ती के एक कारोबारी से जुड़ा हुआ है, जो कोरबा के व्यापारी के साथ मिलकर कोरबा क्षेत्र में कई जगहों पर जमीन की खरीदी-बिक्री के अलावा उसके व्यापार में पार्टनर के रूप में इन्वेस्ट किया करता है. कोरबा, अंबिकापुर और धमतरी में छापामारी की कार्रवाई के बीच ईडी की बीजापुर में भी नजर पड़ी है. ईडी ने बीजापुर जिला प्रशासन को पत्र लिखकर डीएफएफ फंड का ब्यौरा मांगा है. जिला प्रशासन को 2016 से अब तक खर्च किए गए ष्ठरूस्न फंड का हिसाब देना होगा.

लोकसभा अध्यक्ष को जारी है मनाने की कोशिश

नई दिल्ली,3 अगस्त। संसद के दोनों सदनों में मणिपुर को लेकर गतिरोध लगातार जारी है। सत्ता पक्ष और विपक्ष आमने-सामने है। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला सांसदों के व्यवहार से नाराज हो गए। इतना ही नहीं, उन्होंने अपनी नाराजगी व्यक्त करते हुए साफ तौर पर कह दिया कि जब तक सांसद सदन की गरिमा के अनुरूप व्यवहार नहीं करेंगे। वह सदन के भीतर नहीं आएंगे। इसके बाद उन्हें मनाने की कोशिश लगातार की जा रही है। इन सबके बीच खबर यह है कि केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी के नेतृत्व में विभिन्न दलों के सांसदों ने लोकसभा स्पीकर ओम बिरला से मुलाकात की है और उनसे सदन में आने का अनुरोध किया है। आपको बता दें कि मंगलवार और बुधवार को लोकसभा में हुए हंगामे की वजह से स्पीकर ने अपनी नाराजगी व्यक्त की थी।

बारिश से प्रदेश तर-बतर, नदी-नाले उफान पर

राजधानी में बीजेपी कार्यालय के सामने भरा पानी

रायपुर,3 अगस्त ■ तरुण छत्तीसगढ़

प्रदेश के अन्य हिस्सों के साथ-साथ रायपुर में हो रही लगातार बारिश की वजह से अनेक हिस्से जलमग्न हो गए हैं. राजधानी में बीजेपी कार्यालय एकात्म परिसर के सामने पानी भर गया है. लोगों के साथ गाड़ियों की आवाजाही में परेशानी आ रही है.

नेता प्रतिपक्ष नारायण चंदेल ने जलभराव पर कहा कि रायपुर नगर निगम बरसात के दौरान नाव की व्यवस्था करे, जिससे लोगों को आने-जाने में दिक़्क़त न हो. इसके साथ एसडीआरएफ़ को भी तैनात करे, जिससे गाड़ियों की आवाजाही हो सके.

बिलासपुर में लगातार बारिश की वजह से नदी-नाले उफान पर आ गए हैं. सड़क पर बह रहे पानी की वजह कोतवाली थाना क्षेत्र स्थित पुराना बस स्टैंड में कार नाले में समा गया. कार में सवार एक ही परिवार के सदस्यों को लोगों ने मौके पर पहुंचकर सुरक्षित निकाला. भारी बारिश की वजह से बिलासपुर के चुचुहियापारा रेलवे अंडरग्राउंड ब्रिज में पानी भर जाने से लोगों को आवागमन में परेशानी हो रही है. लोग जान जोखिम में डालकर अंडरग्राउंड ब्रिज पार कर रहे हैं. पानी निकासी की व्यवस्था नहीं होने की वजह से हर वर्ष ब्रिज बारिश में डूबता है. इससे सिरगिट्टी, धुमा, पोड़ी, सिलपहरी, गणेश नगर समेत दर्जन भर गांव के लोगों को मुसीबत का सामना करना पड़ता है. बिना प्लानिंग के बनाए गए अंडर ब्रिज पर अब लोग रेलवे और जनप्रतिनिधियों पर सवाल उठा रहे हैं.

मुंगेली जिले में लगातार 24 घण्टे से हो रही बारिश से आम जनजीवन अस्त-व्यस्त हो गया है. जिले के नदी-नाले उफान पर है, वहीं जिला मुख्यालय के निचले इलाके में लोगों के घरों में पानी घुस गया है. किसानों के खेत तालाब में तब्दील हो गए हैं, जिससे कृषि कार्य प्रभावित हो रहा है.

गरियाबंद जिले में भारी बारिश की वजह से अलर्ट जारी किया गया है. सरकड़ा गांव में कच्चा मकान ढहने से पति-पत्नी दबकर घायल हो गए. भारी मशक्कत के बाद गांव वालों ने पति-पत्नी को मलबे से बाहर निकाला. मुरली निषाद और उसकी पत्नी संतोषी निषाद का अस्पताल जारी है. दोनों की हालत नाजुक बताई जा रही है.

भारतीय क्रिकेट टीम का वेस्टइंडीज दौरा- एक दिवसीय मुकाबले में 2-1 से विजयी

हार्दिक को अभी सीखना होगा बहुत कुछ

जसवंत क्लाडियस,तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

भारतीय क्रिकेट टीम इन दिनों वेस्टइंडीज के दौरे पर है। दो टेस्ट मैच की श्रृंखला में मेहमान मेजबान को 1-0 से परास्त किया। तीन एक दिवसीय मैचों में भारत ने दो में सफलता हासिल की जबकि एक में पराजय मिली। अब टी-20 मैच की श्रृंखला आरंभ होगी जिसमें 5 मैच खेले जायेंगे। टेस्ट मैच में भारत की बागडोर रोहित शर्मा के हाथों थी जबकि तीन एक दिवसीय मैच में हार्दिक पांड्या टीम के कप्तान थे। इंडियन प्रीमियर लीग भारत के युवा क्रिकेटर्स के लिए वरदान साबित हुआ है। एक समय 1990 से 2008 तक स्थिति यह होती थी कि क्रिकेट के तीनों प्रारूप टेस्ट मैच, 50 ओवर के एक दिवसीय और टी-20 में के लिए 17-18 खिलाड़ी चुने जाते थे। 2008 में इंडियन प्रीमियर लीग की शुरुआत के बाद तीनों प्रारूप में तीन या चार खिलाड़ी को ही भारतीय टीम में शामिल किया जाने लगा। अब यह परम्परा बन गई है कि प्रत्येक प्रारूप के अनुरूप अच्छा प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ी को टीम में सम्मिलित किया जाने लगा। इस समीकरण के अनुसार वेस्टइंडीज में फिलहाल भ्रमणकारी भारतीय क्रिकेट टीम में भी खिलाड़ी शामिल किए गये हैं। टेस्ट के कप्तान रोहित शर्मा की जगह हार्दिक पांड्या एक दिवसीय और टी-20 टीम का नेतृत्व कर रहे हैं। इसी तरह यशस्वी जायसवाल, अजिंक्या रहाणे, अश्विन, जयदेव उनादकाट, विक्रम राठौर आदि को एक दिवसीय में मौका नहीं मिला। एक दिवसीय में शुभमन गिल, कुलदीप यादव, मुकेश कुमार, सेमसन, सूर्यकुमार आदि को अवसर मिला। इस तरह बदलाव से नये उभरते हुए प्रतिभाओं को मौका मिला यह एक अच्छी बात है लेकिन दूसरे

एकदिवसीय मैच में नये खिलाड़ी परिवर्तन की चपेट में आ गये और मुकाबला हार बैठे। वेस्टइंडीज टीम के लिए यह उत्साह का कारण बन गया। भारत में होने वाली विश्व कप क्रिकेट टूर्नामेंट के लिए वेस्टइंडीज ने योग्यता हासिल नहीं की जिसकी वजह से वे बेहद निराश थे। 1975-1979 में एक दिवसीय मैचों की विश्व विजेता वेस्टइंडीज को भारत के विरूद्ध मिली यह सफलता उनके लिए उत्प्रेरक का कार्य करेगी। भारत ने तीसरे एक दिवसीय मैच को जीतकर श्रृंखला अपने नाम कर ली है। दूसरे एक दिवसीय में पराजय को लेकर काफी विपरीत प्रतिक्रिया भारतीय क्रिकेट जगत से आई। हार-जीत अपनी जगह है लेकिन प्रतिष्ठा के अनुरूप खेल का प्रदर्शन करना अलग बात है। भारतीय टीम को एक अगस्त 2023 को अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट परिषद द्वारा जारी एक दिवसीय मैच की रेकिंग में आस्ट्रेलिया, पाकिस्तान के उपरांत तीसरा स्थान प्राप्त है जबकि वेस्टइंडीज की टीम अपने क्रिकेट जीवन के सबसे बुरे दौर से गुजरते हुए दसवें स्थान पर काबिज है। दूसरे एक दिवसीय में असफलता ने कप्तान हार्दिक पांड्या के खिलाफ बोलने का रास्ता खोल दिया लेकिन अपनी गलती को छुपाने पांड्या ने वेस्टइंडीज क्रिकेट की व्यवस्था पर विपरीत टिप्पणी कर दिया। क्रिकेट वेस्टइंडीज द्वारा दौरा कर रही भारतीय क्रिकेट टीम के लिए रुकने, भोजन, परिवहन आदि की जो इंतजाम किए गये हैं उससे नाराज होकर हार्दिक पांड्या ने खरी-खरी कह दी। वस्तुतः ऐसा नहीं होना था। इससे न सिर्फ दो क्रिकेट खेलने वाली टीमों, बल्कि दो देशों के आपसी राजनीतिक संबंधों पर फर्क पड़ता है। हार्दिक अभी-अभी भारत का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं उन्हें खिलाड़ी भावना का परिचय देना था और सार्वजनिक बयानबाजी ना करके भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड के समक्ष अपनी बात रखनी थी। हार्दिक जैसी प्रतिक्रिया इसके पहले भारतीय टीम के किसी कप्तान, खिलाड़ी ने शायद ही की होगी। अतः फील्ड में जीतने की रणनीति के साथ ही साथ मैदान के बाहर क्या बोलना चाहिए उन्हें अभी सीखने की जरूरत है।

सुकमा की बेटी सात समंदर पार करेगी मरीजों की सेवा

सुकमा,3 अगस्त ■ तरुण छत्तीसगढ़

किसी ने सच ही कहा है पर हो ना हो हौसला से उड़ान होनी चाहिए। ऐसा ही कुछ दोरनापाल में स्कूल बस चलाने वाले संजू फ़िलिप की 24 वर्षीय पुत्री रिया फ़िलिप ने कर दिखाया है। रिया को लंदन में नौकरी मिली है और रिया लंदन पहुँच भी गई है। जब रिया को लंदन में नौकरी मिलने की खबर परिजनों तक पहुँची तो परिजनों के आँखों में ख़ुशी के आंसू तक आ गए। वजह ये है की रिया फ़िलिप के पिता आर्थिक तौर पर काफ़ी कमजोर है और रिया की पढ़ाई के लिए पिता संजू फ़िलिप ने ऑटो चलाई। वहीं वर्तमान में रिया के पिता दोरनापाल में निजी स्कूल में स्कूल बस के ड्राइवर की नौकरी कर रहे हैं। ग़ौरतलब है कि सुकमा जिले की पहचान नक्सल प्रभावित जिले के रूप होती आई है, पर अब सुकमा की पहचान बदलने लगी है, सुकमा में पहले भी कइयों युवाओं ने अपने दम पर जिले का नाम रौशन देशभर में किया है, पर कमजोर आर्थिक स्थिति के हालात में पढ़ाई कर विदेश में नौकरी करने का यह पहला मामला है। रिया फ़िलिप की पढ़ाई पहली से आठवीं तक दोरनापाल के आईएमएसटी इंग्लिश मीडियम स्कूल में हुई इसके बाद नौवीं से बारहवीं तक की पढ़ाई के लिए जगदलपुर गईं। बारहवीं के बाद इसके बाद बीएससी नर्सिंग की पढ़ाई के लिए पिता ने रिया को बैंगलोर भेजा जहां बीएससी नर्सिंग की पढ़ाई पूरी होने के बाद रिया मुम्बई में कोकिलाबेन धीरूभाई अंबानी अस्पताल में सेवा जहां सेवा देते-देते रिया लगातार ड्यूटी के बाद ओईटी परीक्षा ऑक्यूपेशनल इंग्लिश टेस्ट की तैयारी करती रही। कुछ समय बाद रिया ओईटी

परीक्षा की तैयारी के लिए दोरनापाल पहुँची। जहां घर पर ही रिया ने परीक्षा की तैयारी की और परीक्षा पास कर अब लंदन बेट्सी कैडवाल्डर विश्वविद्यालय स्वास्थ में बतौर आइसीयू नर्स के तौर पर कार्यरत है। वहीं विदेश में नौकरी पर गई बस चालक की पुत्री की खबर जैसे ही लोगों को मिली लोगों ने रिया के पिता को जमकर बधाइयाँ दी। वहीं दोरनापाल नगर पंचायत अध्यक्ष बबीता माड़वी ने भी किया के घर पहुँच उनके पिता को बधाइयाँ दी। रिया को युनाइटेड किंगडम में नौकरी मिलने के बाद 26 जूलाई को रिया कोच्चि एयरपोर्ट से लंदन के लिए निकलीं, जहां रिया ने कैडवाल्डर विश्वविद्यालय स्वास्थ में आइसीयू नर्स के तौर पर ज्वाइनिंग भी ले ली है। वहीं परिवारजनों ने बताया शुरूवात में रिया को एक लाख अस्सी हज़ार रूपये प्रति माह का पैकेज मिला है जो एक परीक्षा के बाद तीन लाख रूपये भारतीय पैसे मिलने लगेंगे।

टेलीकॉम फैक्ट्री में चोरी,कबाड़ी सहित 17 गिरफ्तार

भिलाई,3 अगस्त। भिलाई-3 थाना अंतर्गत बंद पड़ी टेलीकॉम फैक्ट्री में चोरी की योजना बनाकर कबाड़ी के साथ मिलकर चोर गिरोह दीवार फांदकर गोडाउन में रखे तीन लाख रुपए के लोहे के नट-बोल्ट व वायसर की चोरी का पुलिस ने खुलासा किया है। इस मामले में कबाड़ी सहित 17 आरोपियों को गिरफ्तार किया है। पुलिस के अनुसार बोरे में भरकर चोरी के बाद गिरोह के कुछ सदस्य फैक्ट्री की दीवार फांद कर अंदर आते थे और कुछ लोग निगरानी करते हुए सुरक्षा गार्डों पर पथराव करते थे। उप पुलिस अधीक्षक (अपराध) राजीव शर्मा ने बताया कि प्रार्थी ताराचंद वर्मा निवासी बीएसएनएल कॉलोनी सेक्टर 5 ने थाना पुरानी भिलाई में रिपोर्ट दर्ज कराया कि वह टेलीकॉम फैक्ट्री हथखोज में नौकरी करता है। 21 जुलाई की रात 10 बजे से सुबह 6 तक रात्रि ड्यूटी पर कंपनी के गार्डो के साथ सुरक्षा ड्यूटी पर फैक्ट्री के अंदर घूम

रहा था। इस दौरान देखा लुकमान कबाड़ी, सागर शर्मा, सुखदेव सिंह अरबाज सिद्धिकी, इंदर सिंह, बाबू लाल एवं 10-11 साथी फैक्ट्री के अंदर घुसकर फैक्ट्री के गोदाम में रखे नट- बोल्ट वायसर करीब 02 टन लोहा को चोरी कर बोरी में भरकर स्टोर रूम में रखे थे। उसे ले जा रहे थे। रोक-टोक करने पर पथराव करने लगे। रिपोर्ट पर थाना पुरानी भिलाई में धारा 457,380, 34 के तहत का पंजीबद्ध कर विवचेना में लिया गया छावनी सीएसपी आशीष बंछोर ने बताया कि घटना के बाद एण्टी क्राइम सायबर यूनिट प्रभारी निरीक्षक संतोष मिश्रा, भिलाई - 3 टीआई मनीष शर्मा के नेतृत्व में ए.सी.सी.यू एवं थाना की एक संयुक्त टीम गठित की। टीम ने नामजद आरोपियों की पतासाजी कर घेराबंदी कर उन्हे पकड़ा गया। कड़ी पूछताछ करने पर उनके अन्य साथियों सूरज गंगाधर, सूर्या देवार उर्फ केकड़ी, दीपक साहू उर्फ कजरी, ऋषि साहनी, किरण नायक, सन्नी यादव, अमन तिवारी, लोकेश अवस्थी, राहुल केसरवानी एवं एक नाबालिग को पकड़ा। आरोपियों की निशानदेही पर टेलीकॉम फैक्ट्री से चोरी गई सामान प्लास्टिक के बोरो में भरा 02 टन लोहे के नट बोल्ट वायसर आदि कीमती 3 लाख रूपए का उनके कब्जे से जब्त किया गया इन आरोपियों को पुलिस ने किया गिरफ्तार सागर शर्मा (21 वर्ष) निवासी एकता नगर जोन 2 खुर्सीपार, सूरज गंगाधर (25 वर्ष) निवासी टाटा लाईन केम्प 1, बॉबी नायकर (26 वर्ष) निवासी 32 एकड़ अटल आवास, मो. अरबाज सिद्धिकी (24 वर्ष) निवासी जोन 03, दीपक साहू उर्फ कजरी निवासी केम्प 01, ऋषि साहनी (26 वर्ष) निवासी जोन 02 सड़क 51 क्वा. नं. 3- पी खुर्सीपार, किरण नायक (28 वर्ष) निवासी मछली मार्केट खुर्सीपार, सन्नी यादव (30 वर्ष) निवासी मछली मार्केट खुर्सीपार, सुखदेव सिंह निवासी सुभाष मार्केट जोन 02 खुर्सीपार, अमन तिवारी (21 वर्ष) निवासी सुभाष मार्केट जोन 02 खुर्सीपार, अनिकेत दिवरा निवासी मछली मार्केट खुर्सीपार, लोकेश अवस्थी निवासी सुभाष मार्केट जोन 02 खुर्सीपार, इंदर सिंह केनाल रोड जोन 02 खुर्सीपार, राहु केसरवानी निवासी न्यू खुर्सीपार गुरूद्वारा के पीछे, लुकमान अहमद पदुमनगर चरोदा पुरानी भिलाई, बाबूलाल निवासी एसीसी गेड राजीव नगर जामुल व एक नाबालिग भी आरोपी है उक्त कार्यवाही में एण्टी क्राईम सायबर यूनिट से सउनि शमित मिश्रा, प्रधान आरक्षक सत्येन्द्र मंढरिया, आरक्षक अरविंद मिश्रा, रिंकू सोनी, डी.प्रकाष, राकेष चौधरी, नितिन सिंह, भावेष पटेल, अमित दूबे, गुणित निर्मलकर एवं थाना पुरानी भिलाई से सउनि गोरखनाथ चौधरी, यषवंत श्रीवास्तव, नागेन्द्र बंछोर की उल्लेखनीय भूमिका रही।

एक नजर

डंडे से मार कर हत्या

भिलाई, 3 अगस्त। भिलाई नेवई थाना क्षेत्र सनसनी खेज घटना सामने आई है बीती रात मामूली विवाद पर बड़े भाई ने छोटे भाई के सिर पर डंडे से वार कर उसकी हत्या कर दी। अगले दिन पुलिस को बिना बताए अंतिम संस्कार की तैयारी कर शव वाहन लेने निगम पहुंचा इधर पुलिस को सूचना मिलने पर हत्या की आशंका पर बड़े भाई को हिरासत में लेकर पूछताछ करने पर हत्या का खुलासा हुआ नेवई पुलिस ने आरोपी के खिलाफ धारा 302 के तहत अपराध दर्ज कर गिरफ्तार कर लिया है नेवई टीआई ममता अली शर्मा ने बताया कि स्टेशन मरोदा पटेल पारा नरेन्द्र कोठारी (30वर्ष) का अपने छोटे भाई नरसिंग कोठारी (26 वर्ष) के साथ 1 अगस्त की रात 8.30 बजे विवाद हो गया। शराब के नशे में बड़े भाई ने छोटे भाई की घर में रखे डंडे से सिर पर वार कर उसकी हत्या कर दी। बुधवार की सुबह पुलिस को जानकारी नहीं देकर चोरी छिपे अंतिम संस्कार की पूरी तैयारी कर शव को घर में रख नगर निगम भिलाई शव वाहन लेने पहुंचा था। इधर पुलिस को जानकारी होते ही मौके पर पहुंच कर आरोपी नरेन्द्र को हिरासत में लेकर कड़ी पूछताछ करने पर छोटे भाई की हत्या करना स्वीकार किया टीआई ने बताया कि दोनों भाईयों के बीच शराब पीने के बाद आए दिन विवाद होता रहता था। पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार करलिया है भिलाईनगर सीएसपी निखिल राखेचा ने बताया कि स्टेशन मरोदा में बड़े भाई ने छोटे भाई की हत्या की आशंका पर शव का पंचनामा कर पोस्टमार्टम करने पर सिर में चोट का निशान पाया गया।

पुरानी रंजिश पर कत्ल

भिलाई, 3 अगस्त। भिलाई लिटिया चौकी क्षेत्र पुरानी रंजिश को लेकर दो भाइयों ने मिलकर चाकू एवं तवा से ताबड़तोड़ हमला कर युवक की जघन्य हत्या कर दी। दोनों ही आरोपियों को पुलिस ने घटना के कुछ देर बाद ही गिरफ्तार कर लिया गया है। बोरी टीआई पुष्पेंद्र भट्ट ने बताया कि घटना दुर्ग जिले के लिटिया चौकी के चीचा गांव की है। पुरानी रंजिश के चलते आरोपी दोनों भाई ने युवक इशेन्द्र साहू पिता श्याम लाल साहू (23 वर्ष) निवासी चीचा चौकी लिटिया सेमरिया थाना बोरी पर बुधवार को चाकू एवं लोहे के तवा से जानलेवा हमला कर दिया गया। इस हमले में इशेन्द्र साहू की मौत हो गई। सूचना मिलने पर पुलिस ने आरोपी-लक्ष्य कुमार साहू पिता कोमल प्रसाद साहू (19 वर्ष) निवासी ग्राम चीचा, लक्की साहू पिता कोमल प्रसाद साहू (20 वर्ष) निवासी चीचा को गिरफ्तार कर लिया है।

साजा , देवकर में टमाटर 160 रुपये , ग्राहक चिंतित

साजा, 3 अगस्त। साजा ओर देवकर में अच्छे टमाटर 160 रुपया और कुछ दुकानों में 140 रुपया या 150 रुपया में भी टमाटर मिल जाते है । आखिर टमाटर का भाव कम क्यों नही हो रहा है समझ से परे है और सरकार भी कोई कदम नहीं उठा रही है । टमाटर की चटनी बना ही नही पा रहे है एक महीने से बच्चो के लिए । अदरक की बात छोड़िए । अदरक बाजार में दिखना बंद हो गया है । ऐसी महंगाई हो गई है की गरीब आदमी , मिडिल क्लास भी अदरक युक्त चाय पीना छोड़ दिया । केंद्र और राज्य सरकार को टमाटर और अदरक की महंगाई को रोकने के लिए कदम उठाना चाहिए लेकिन महंगाई से आम आदमी परेशान है । महिलाए कहती है क्या सब्जी बनाए और क्या खाए पता नही । ग्राहकों ने कहा की एक पाव या आधा किलो टमाटर खरीद लेते है इस महंगाई में । कांग्रेस पार्टी आंदोलन करती भी है महंगाई के खिलाफ लेकिन महंगाई बढ़ती जा रही है ।

दिनदहाड़े त्रिशूल मारकर हत्या मामले में होगा डीएनए टेस्ट

भिलाई, 3 अगस्त। पुलगांव थाना क्षेत्र मंदिर के पास 30 जुलाई की दोपहर को दिनदहाड़े त्रिशूल मारकर युवक की हत्या अज्ञात आरोपियों ने कर दी थी। उसकी पहचान मिटाने के उद्देश्य से युवक के शव को जला दिया गया था। लाश मिलने के बाद से पुलिस की टीम आरोपियों की तलाश में लगी हुई है परंतु 4 दिन बाद भी पुलिस को सफलता नहीं मिल पाई है। पुलिस की टीम हर पहलुओं को ध्यान में रखकर सीसीटीवी कैमरे के फुटेज भी खंगालने में लगी हुई है। पुलगांव टीआई आनंद शुक्ला ने बताया कि मृतक के शव का पोस्टमार्टम करने के बाद उसका अंतिम संस्कार कर दिया गया है। अब तक इस क्षेत्र में गुम इंसान की भी शिकायत सामने नहीं आई है। मृतक की पहचान के लिए अब डीएनए टेस्ट कराया जाएगा।

खेत में गिरे विद्युत तार की चपेट में आने से किसान की मौत

भिलाई, 3 अगस्त। खेत में गिरे बिजली के तार की चपेट में आने से खेत में काम करने गए किसान की दर्दनाक मौत हो गई। पुलगांव पुलिस मर्ग कायम कर विवेचना कर रही है। पुलगांव टीआई आनंद शुक्ला ने बताया कि ग्राम पीपरछेड़ी निवासी किसान प्रहलाद यादव अपने खेत में गया हुआ था। वहां पर बिजली का टूटा हुआ तार फेंसिंग के तार में आकर लटका हुआ था। जैसे ही प्रहलाद यादव ने खेत के फेंसिंग को हाथ लगाया तो वह करंट की चपेट में आ गया और उसकी घटनास्थल पर ही मौत हो गई। पुलिस ने मर्ग कायम कर शव का पंचनामा करवाया और पोस्टमार्टम की कार्रवाई करने के बाद शव परिजनों को सौंप दिया।

90 किलोमीटर पैदल चलकर विधायक ममता पहुंची बैजनाथधाम

कवर्धा, 3 अगस्त। पंडरिया विधायक ममता चंद्राकर सहित पूरा परिवार कांवर हाथों में पकड़कर पैदल चलकर वैद्यनाथधाम पहुंची । महादेव का जलाभिषेक कर छत्तीसगढ़ प्रदेश और कवर्धा , पंडरिया और सभी लोगो के जीवन में सुख, समृद्धि आए इसकी मनोकामना की ।

हरियर छत्तीसगढ़ योजना में निगम कर रहा है पौधरोपण

भिलाई, 3 अगस्त। नगर पालिक निगम, भिलाई द्वारा हरियर छत्तीसगढ़ के लिए शहर की सुंदरता को बढ़ाने राष्ट्रीय राजमार्ग के दोनो ओर थिमेटिक क्रम में वृक्षारोपण किया जा रहा है, शहर के सावर्जनिक स्थानों को सुंदर बनाने रंगबिरंगे फूल के पौधे रोपित किये जा रहे है और अब तक 5880 वृक्षो का रोपण किया जा चुका है। महापौर नीरज पाल एवं आयुक्त रोहित व्यास द्वारा डी-मार्ट के पास स्थित गौठान में हरियर छत्तीसगढ़ योजना के तहत 9 जुलाई को सघन वृक्षारोपण की शुरूवात करते हुए निगम के पॉच जोन में जोन अध्यक्ष, महापौर परिषद के सदस्य, पार्षद, अधिकारी एवं कर्मचारियों ने सैंकड़ो की संख्या में पौधा रोपण किया था। जिलाधीश पुष्पेन्द्र मीणा के द्वारा जिला स्तर पर वृक्षारोपण करने विभागों को

दिए निर्देश के तारतम्य में आयुक्त व्यास ने निगम के अधिकारियों को सघन वृक्षारोपण के साथ जी.ई.रोड के दोनो ओर गुलमोहर, अमलताश, नीलमोहर तथा सड़क के बीच डिवाईडर में मोर पंखी, पेल्ट्राफार्म, कोनोकारपस, बोगनबिलिया जैसे फूल के पौधे एवं वृक्ष लगा कर भिलाई की सुंदरता को बढ़ाने भी कहा था। आयुक्त व्यास ने 77 एम.एल.डी. फिल्टर प्लांट से डबरा पारा तक तथा शहर के मुख्य मार्ग से जुड़े अन्य मार्ग, शासकीय कार्यालय भवन, स्कूल, खेल मैदान, आंगनबाड़ी केन्द्र, अस्पताल, पुलिस थाना, तालाब के चारो तरफ, बाजार क्षेत्र, उद्यान,रिक्त शासकीय भूमि में सघन वृक्षारोपण करने के निर्देश दिये है। निगम द्वारा विभिन्न प्रजाति के 5880 वृक्षो का रोपण अब तक किया जा चुका है। एक अगस्त को पॉचो जोन के विभिन्न क्षेत्रों में 834 वृक्ष लगाए हैं।

भिलाई इस्पात संयंत्र ने किया शानदार उत्पादन, विभिन्न विभागों ने बनाए नये रिकॉर्ड

भिलाई, 3 अगस्त। सेल-भिलाई इस्पात संयंत्र ने जुलाई माह 2023 में एक बार फिर शानदार प्रदर्शन किया है और कोक ओवन एवं कोल केमिकल विभाग, ओर हैंडलिंग प्लांट और वायर रॉड मिल से लेकर एमएम और डिस्पैच तक सभी प्रमुख इकाइयों ने भौतिक मापदंडों में नए रिकॉर्ड स्थापित किए हैं।इसके साथ ही अपने द्वारा स्थापित पिछले सर्वश्रेष्ठ आंकड़ों को पीछे छोड़ दिया है। सहयोगी कार्य संस्कृति और औद्योगिक सद्भावना के साथ, उत्साही भिलाई बिरादरी ने सामूहिक रूप से शानदार प्रदर्शन किया है, जिसके परिणाम स्वरूप संयंत्र लगातार कई सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन रिकॉर्ड हासिल कर पाने में सक्षम है। इस उपलब्धि के लिए संयंत्र के प्रभारी निदेशक अनिर्बान दासगुप्ता और कार्यपालक निदेशक अंजनी कुमार ने इस शानदार प्रदर्शन और उपलब्धि के लिए सभी संबंधित विभागों के कर्मचारियों और अधिकारियों को बधाई दी है। साथ ही उन्होंने टीमों एवं सहायक विभागों को उनके योगदान के लिए बधाई भी दी है। ओर हैंडलिंग प्लांट ने जुलाई 2023 में ही सर्वोत्तम सामग्री प्रेषण, सामग्री प्रबंधन और जुलाई माह में रिकॉर्ड संख्या में वैगनों की अनलोडिंग में तीन नए रिकॉर्ड बनाए हैं। जुलाई 2023 में ओर हैंडलिंग प्लांट द्वारा 14,475 वैगनों की रिकॉर्ड अनलोडिंग दर्ज की गई है, जबकि जुलाई 2021 में 13,083 वैगनों की अनलोडिंग का पिछला सर्वश्रेष्ठ रिकॉर्ड दर्ज किया गया था। ओर हैंडलिंग प्लांट मुख्य रूप से सिंटरिंग प्लांट, ब्लास्ट फर्नेस, रिफ्रैक्टरी मटेरियल प्लांट और स्टील मेल्टिंग शॉप सहित प्लांट के अंदर अपने कस्टमर शॉपस् में लौह अयस्क और फ्लक्स सहित कच्चा माल भेजता है। ओर हैंडलिंग प्लांट ने जुलाई 2023 में 9,42,010 टन के कच्चे माल के रिकॉर्ड प्रेषण के साथ अपना उच्चतम कच्चा माल प्रेषण भी दर्ज किया है। जो जुलाई 2021 में हासिल किए गए 8,78,479 टन के पिछले सर्वश्रेष्ठ रिकॉर्ड को पार कर गया है। जुलाई में ओर हैंडलिंग प्लांट द्वारा कुल मटेरियल हैंडल अपने पिछले सर्वश्रेष्ठ रिकॉर्ड के मुकाबले अधिक है। जुलाई 2023 में 18,89,108 टन सामग्री के साथ अब तक का सबसे अच्छा रिकॉर्ड दर्ज किया है, जबकि जुलाई 2021 में 17,30,420 टन हासिल किए थे। कोक ओवन और कोल केमिकल डिपार्टमेंट ने भी जुलाई 2023 में पूरे महीने में दैनिक आधार पर औसतन 793 ईक्यू ओवन पुश करके अब तक का सबसे अच्छा मासिक पुशिंग रिकॉर्ड दर्ज किया है, जो जुलाई 2005 में बनाये गए 757 ईक्यू ओवन पुश के पिछले सर्वश्रेष्ठ पुशिंग रिकॉर्ड को पार कर गया है। वायर रॉड मिल ने 29 जुलाई 2023 को 6/6/6 मिमी के संयोजन में 1620 टन के सादे वायर रॉड कॉइल उत्पाद की रोलिंग करके एक नया दैनिक रिकॉर्ड बनाया है । मर्चेंट मिल द्वारा 30 जुलाई 2023 को उत्पादन का नया शिफ्ट और दैनिक रिकॉर्ड भी बनाया गया है। विभिन्न आयामों, चैनलों और एंगल्स के टीएमटी बार्स बनाने वाली मर्चेंट मिल ने 100 मिमी सेगमेंट में 1575 टन चैनल रोल करके अब तक का सबसे अच्छा दैनिक रिकॉर्ड हासिल कर नया कीर्तिमान बनाया है, जबकि 22 मई 2022 को पिछला सर्वश्रेष्ठ रिकॉर्ड 1484 टन दर्ज किया गया था। मिल ने 30 जुलाई 2023 की तृतीय पाली (सी शिफ्ट) में 594 टन उत्पादन का अब तक का सर्वश्रेष्ठ शिफ्ट रिकॉर्ड भी हासिल किया है, जबकि 22 मई 2022 को हासिल किए गए 561 टन के पिछले सर्वश्रेष्ठ रिकॉर्ड को पार कर गया है।

शहर में घायल पशुओं के इलाज की हो उचित व्यवस्था:साहू

भिलाई, 3 अगस्त। शहर में घायल पशुओं के इलाज की कोई उचित व्यस्था नहीं है जिसके चलते पशुधन की क्षति हो रही है। इस बारे में अनेक पशु प्रेमियों ने शिकायत की है। लोगों ने कहा है की शहर में निरंतर जनसँख्या बढ़ती जा रही है और सड़कों पर यातायात का दबाव है। ऐसे में आवारा पशुओं की आये दिन दुर्घटनाएं देखने को मिलती हैं। इसके साथ ही शादी-पार्टियों में बचे हुए खाने को खाने के बाद कई बार जानवर फूड पोइज़निंग के शिकार हो जाते हैं। ऐसे जानवरों के इलाज की कोई माकूल व्यवस्था नहीं है। निजी पशुपालक तो फिर भी शासकीय या निजी पशु चिकित्सकों से इलाज करवा लेते हैं किन्तु आवारा पशु सड़क से लेकर गली-कोने में तड़पते रहते हैं। कोई संवेदनशील नागरिक या फिर पशुप्रेमी अपने खर्चे इलाज करा दें तो ठीक नहीं तो जानवर बेचारा गया काम से ! इसे लेकर साहू समाज के जागरूक पदाधिकारी एवं साहू मेडिकल के संचालक सुरेश कुमार साहू ने तरुण छत्तीसगढ़ से कहा कि सचमुच यह बड़ी समस्या है। शासन-प्रशासन को इस ओर जरूर ध्यान देना चाहिए। पहले आवारा पशुओं की आमद शहर में नहीं होनी चाहिए। पशुधन का नुकसान न हो, ध्यान देने की जरूरत है। जानवरों के दुर्घटना आदि होने पर उनके इलाज की समुचित व त्वरित व्यवस्था होनी चाहिए। साहू ने कहा की आसपास के गौठानों में इलाज के व्यवस्था हो सकती है। सुरेश साहू ने कहा कि अच्छे बात यह है कि शहर में कुछ लोग हैं जो संस्था बनाकर अपनी ओर से इलाज करा रहे हैं किन्तु वे भी उतना नहीं कर पाते जितनी आवश्यकता है। साहू ने कहा कि पशुधन हमारी परम्परा, आर्थिक व्यवस्था, स्वास्थ्य, कृषि व्यवस्था की रीढ़ है, इसके समुचित रखरखाव कि जरूरत है।

रौनियार वैश्य समाज करेगा सामूहिक विवाह का आयोजन

भिलाई, 3 अगस्त। रौनियार वैश्य समाज की बैठक सुपेला में हुई। बैठक में समाज के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रवण गुप्ता व गढ़वा झारखंड के अध्यक्ष बैजनाथ गुप्ता रौनियार समाज के अध्यक्ष गोपाल प्रसाद (प्रदेश अध्यक्ष ओबीसी), अंबिकापुर से गणपत गुप्ता, संजय प्रसाद, रायपुर से विजय गुप्ता विशेष रूप से शामिल हुए। बैठक में समाज के विवाह योग्य जोड़ों का सामूहिक विवाह कार्यक्रम आयोजन पर भी सहमति बनी। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रवण गुप्ता ने कहा कि किसी भी समाज को उन्नत बनाने के लिए एकजुटता बेहद जरूरी है। समाज के लोगों को चाहिए कि एक दूसरे के सुख-दुख में शामिल हों और जिन्हे मदद की जरूरत है उनकी खुले दिल से मदद की जाए। श्रवण गुप्ता ने समाज के कमजोर वर्ग के लोगों की आर्थिक सहायता से लेकर सामूहिक विवाह कार्यक्रम के आयोजन का मुद्दा उठाया। समाज के बच्चों की पढ़ाई व चिकित्सा पर विशेष चर्चा की गई। इस अवसर पर दुर्ग-भिलाई रौनियार वैश्य समाज से समाज के संरक्षक राजकुमार प्रसाद, एन के गुप्ता, गुजेश्वर प्रसाद, पूर्व अध्यक्ष राजकिशारे गुप्ता, कार्यकारिणी से जगशिव प्रसाद, विरेन्द्र कुमार गुप्ता, सियाराम प्रसाद गुप्ता, विरेन्द्र कुमार साह, विवेक कुमार गुप्ता, दीनेश प्रसाद गुप्ता, रमेश गुप्ता, रवीन्द्र साह आदि मौजूद रहे। आभार प्रदर्शन राजकुमार प्रसाद ने किया।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक का आयोजन

भिलाई, 3 अगस्त। विगत दिनों राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के वार्षिक कार्यक्रम के अनुपालन में कार्यालय महानिदेशक लेखा परीक्षा (इस्पात) रांची, शाखा भिलाई में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 56वीं तिमाही बैठक एम.एस.डहरिया, निदेशक की अध्यक्षता में की गयी। सहायक प्रबंधक जितेन्द्र दास मानिकपुरी भी उपस्थित थे। कनिष्ठ अनुवादक सुन्दर लाल साव द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए 55वीं बैठक में लिए गए निर्णयों की अनुपालन की सूचना दी गयी। राजभाषा संबंधी प्रश्नोत्तरी में प्रथम स्थान जितेन्द्र कुमार वर्मा, द्वितीय स्थान संयुक्त रूप से संदीप टोप्पो एवं पंकज कुमार तथा तृतीय स्थान कमल कुमार ने प्राप्त किया।

महापौर ने बैठक लेकर की स्वास्थ्य विभाग के कार्यों की समीक्षा

भिलाई, 3 अगस्त। नगर निगम भिलाई क्षेत्र में जल जनित बिमारी विशेष रूप से डेंगू के रोकथाम के लिए निगम का स्वास्थ्य विभाग सघन अभियान छेड़ रखा है, स्वास्थ्य अमला डेंगू के संभावित स्थलों पर लार्वा तथा एडल्ट मच्छरों के उन्मुलन के लिए टेमिफास घोल का घर-घर वितरण तथा मोहल्लों में मैलाथियान का छिड़काव व क्राकोथरिन का धुँआ छोड़ा जा रहा है। महापौर नीरज पाल एवं जनस्वास्थ्य विभाग के प्रभारी सदस्य लक्ष्मीपति राजू ने निगम के स्वास्थ्य अमले की बैठक लेकर जल जनित बिमारियों विशेष रूप से डेंगू के उन्मुलन के लिए किये जा रहे कार्य की समीक्षा की महापौर ने कहा कि निगम क्षेत्र में डेंगू न फैले इस ओर हमे विशेष ध्यान रखना होगा।

फोर्ज एवं स्टील स्ट्रक्चरल शॉप में सुरक्षा प्रोत्साहन सप्ताह का आयोजन

भिलाई, 3 अगस्त। भिलाई इस्पात सयंत्र के फोर्ज एवं स्टील स्ट्रक्चरल शॉप में सुरक्षा प्रोत्साहन सप्ताह का आयोजन किया गया। सप्ताह के समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह के अवसर पर महाप्रबंधक प्रभारी एस के अग्रवाल एवं महाप्रबंधक एस के महतो ने विभाग द्वारा किये गए आयोजन एवं प्रयासों की सराहना की तथा सुरक्षा सम्बन्धी गतिविधियों में व्यक्तिगत एवं सामूहिक भागीदारी हेतु आह्वान किया एवं भविष्य में शून्य दुर्घटना के लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु उन्होंने अपनी शुभकामनाएं भी दी। महाप्रबंधक जितेन्द्र मोटवानी ने सेफ्टी टेक्निकल स्टैंडर्ड, नियरमिस केस एवं अन्य सुरक्षा विषयक मुद्दों पर आवश्यक मार्गदर्शन एवं सुझाव दिए। सहायक प्रबंधक जीतेन्द्र गुप्ता ने धन्यवाद ज्ञापित किया। संचालन राजेश सिंह ठाकुर ने किया। सप्ताह के दौरान के विक्रम, अखिलेश उपाध्याय, आर एस यादव, डी पी देवांगन एवं आशीष चक्रवर्ती, विनय साहू, के के तिवारी, ज्योतिनाथ, के के वर्मा का विशेष योगदान रहा।

भिलाई बिरादरी ने जयंती पर रविशंकर शुक्ल और विद्याचरण शुक्ल को दी श्रद्धांजलि

भिलाई, 3 अगस्त। अविभाजित मध्यप्रदेश के प्रथम मुख्यमंत्री एवं स्वतंत्रता संग्राम सेनानी व जननेता स्व. पंडित रविशंकर शुक्ल की जयंती के अवसर पर विगत 2 अगस्त को भिलाई के सेक्टर-9 स्थित जवाहरलाल नेहरू चिकित्सालय एवं अनुसंधान केन्द्र, सेक्टर-9 चौक पर स्थापित पं. शुक्ल की प्रतिमा के समक्ष प्रात: 9.30 बजे एक समारोह का आयोजन कर जहां भिलाई बिरादरी ने श्रद्धासुमन अर्पित कर उनका स्मरण किया वहीं पूर्व केन्द्रीय मंत्री और जननेता स्व. पं. विद्याचरण शुक्ल के भी जन्मदिवस पर इनको भी श्रद्धासुमन अर्पित कर भिलाई बिरादरी ने याद किया। देर रात्रि से ही हो रही हल्की बारिश के बावजूद भिलाई बिरादरी के सदस्यों ने पंडित रविशंकर

शुक्ल और उनके सबसे छोटे पुत्र स्व. पं. विद्याचरण शुक्ल के तैल चित्र पर पुष्प अर्पित कर इन्हें श्रद्धांजलि दी और उनके कार्यों का स्मरण किया गया। इस अवसर पर कांग्रेस के वरिष्ठ नेता एवं नागरिक सहकारी बैंक के पूर्व अध्यक्ष मोहन लाल गुप्ता, दुर्ग जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष मुकेश चंद्राकर, श्रीमती माया रानी शुक्ल ने समारोह को संबोधित किया। पं. रविशंकर शुक्ल और उनके पुत्र स्व. विद्याचरण शुक्ल के योगदानों की चर्चा की गई। इस अवसर पर भिलाई के महापौर नीरज पाल, दुर्ग जिला कांग्रेस के प्रवक्ता जावेद खान, सतीश कुमार पारेख, कान्यकुब्ज सामाजिक चेतना मंच, भिलाई-दुर्ग के उपाध्यक्ष संतोष दीक्षित, स्वदेश शुक्ल, राकेश शुक्ल, जयेष शुक्ल, ए के बाजपेयी, भिलाई इस्पात संयंत्र के महाप्रबंधक जनसंपर्क प्रशान्त तिवारी, उप महाप्रबंधक क्रीड़ा, सांस्कृतिक एवं नागरिक सुविधाएं एस आर जाखड़, उप प्रबंधक क्रीड़ा, सांस्कृतिक एवं नागरिक सुविधाएं अभिजीत भौमिक, प्रभंजय चतुर्वेदी, सुनील देशमुख, श्रीमती जानकी देवी, आर डी कोरी, नितिन कश्यप सहित इस्पात नगरी के नागरिकों ने पं. रविशंकर शुक्ल के चित्र पर पुष्प अर्पित किये और पं. शुक्ल के योगदानों का स्मरण करते हुए उनके बताये मार्ग पर चलने का आग्रह किया। कार्यक्रम का संचालन पं रवि शंकर शुक्ल सामाजिक एवं सांस्कृतिक समिति के महासचिव मनोज मिश्रा ने किया और धन्यवाद ज्ञापन कान्यकुब्ज सामाजिक चेतना मंच के स्वदेश शुक्ल ने किया। इस अवसर पर जिला कांग्रेस के पदाधिकारीगण, कांग्रेस सेवादल के सदस्य कान्यकुब्ज सामाजिक चेतना मंच के पदाधिकारीगण और भिलाई इस्पात संयंत्र के अधिकारियों के साथ इस्पात नगरी के नागरिक उपस्थित थे।

विद्युत जोन के अधिकारी व कर्मचारी पाली व कर्म शिरोमणि पुरस्कार से सम्मानित

भिलाई, 3 अगस्त। सेल-भिलाई इस्पात संयंत्र के विद्युत जोन विभाग में शिरोमणि पुरस्कार योजना के अंतर्गत पाली शिरोमणि एवं कर्म शिरोमणि पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम मुख्य महाप्रबंधक टी के कृष्ण कुमार की अध्यक्षता में संपन्न हुआ । कार्यक्रम में विद्युत जोन में अति उत्तम कार्य प्रदर्शन के लिए विद्युत जोन से सहायक प्रबंधक एस. नरेन्द्र राव को पाली - शिरोमणि पुरस्कार से सम्मानित किया गया एवं कर्म -शिरोमणि पुरस्कार के लिए मास्टर ओ.सी.टी. पुष्प नारायण एवं मास्टर ओ.सी.टी. जयंत कुमार पाल को सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम में महाप्रबंधक प्रकाश, महाप्रबंधक अक्षय कुमार नायक महाप्रबंधक एम. ए. सिद्दीकी, महाप्रबंधक सुश्री एस. लक्ष्मी, महाप्रबंधक सुभाष राठौर, महाप्रबंधक आर. आर. ठाकुर, महाप्रबंधक रविन्द्र कुमार, उप-महाप्रबंधक कुंतेल बघेल एवं सहायक महाप्रबंधक योगेश कुमार वर्मा व अन्य कर्मचारी उपस्थित रहे । संचालन कार्मिक शक्ति एवं विद्युत विभाग के सहायक प्रबंधक गिरीश मढ़रिया एवं आभार प्रदर्शन सुश्री डी बेल्सर द्वारा किया गया।

एक नजर

महापौर हेमा देशमुख ने वेटलिफ्टर ज्ञानेश्वरी यादव को दी बधाई

राजनांदगांव ,3अगस्त (तरुण छत्तीसगढ़)। दिल्ली में आयोजित एशियन गेम्स में भारोत्तोलन में द्वितीय स्थान प्राप्त कर छत्तीसगढ़ को सिल्वर मेडल दिलाने पर राजनांदगांव की कु. ज्ञानेश्वरी यादव को महापौर श्रीमती हेमा सुदेश देशमुख ने बधाई एवं शुभकामनाएं दी। बधाई देते हुये उन्होंने कहा कि ज्ञानेश्वरी यादव ने इसके पूर्व दिल्ली (ग्रेट नोएडा) में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय कॉमन वेल्थ महिला एवं पुरूष वेटलिफ्टिंग चेम्पियन शीप प्रतियोगिता मे जुनीयर व सीनियर

49 किलोग्राम वजन वर्ग में 78 किलोग्राम स्नैच और 98 किलोग्राम क्लीन एण्ड जर्क कुल 176 किलोग्राम वजन उठाकर छत्तीसगढ को स्वर्ण पदक दिलाया है। बल्कि उन्हे पूरे कॉमन वेल्थ प्रतियोगिता में जुनियर वर्ग में सबसे ज्यादा वजन उठाने पर वेस्ट लिफ्टर ऑफ कामन वेल्थ की उपाधि से नवाजा गया था, साथ ही ज्ञानेश्वरी ने राष्ट्रीय खेलो इंडिया में स्वर्ण पदक एवं ग्रीस के हेराक्लिओन में आयोजित जुनियर वर्ग वेटलिफ्टिंग चेम्पीयनशिप में रजत पदक जीती कर देश प्रदेश व जिला में नाम रोशन की थी।

मतदाता सूची में नाम जुड़वाने महापौर एवं निगम आयुक्त ने युवाओं से की अपील

राजनांदगांव ,3अगस्त (तरुण छत्तीसगढ़)। भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार 2 अगस्त से 31 अगस्त 2023 तक मतदाता सूची संक्षिप्त पुनरीक्षण का कार्य किया जाना है। इस अवधि में 18 वर्ष की आयु पूर्ण करने जा रहे, नागरिकों का नाम मतदाता सूची में सम्मलित किया जाना है इसके अलावा मतदाता सूची में नाम जोडाने एवं डूप्लीकेट मतदाताओं का नाम हटाने का कार्य मतदान केन्द्रों में किया जा रहा है। इस संबंध में महापौर श्रीमती हेमा सुदेश देशमुख एवं निगम आयुक्त श्री अभिषेक गुप्ता ने नागरिकों से अपील करते हुये कहा है कि जिनके द्वारा मतदाता सूची में नाम नहीं जोडाया गया है वे अपने नजदीकी मतदान केन्द्र मे जाकर नाम जोडा ले, साथ ही वे युवक युवतियां जिनकी आयु 18 वर्ष पूर्ण हो चुकी है वे अपना नाम अनिवार्य रूप से मतदाता सूची में दर्ज कराये।

जोरातराई में मतदाता संकल्प पत्र का वाचन किया गया

अंवरी:,3अगस्त (तरुण छत्तीसगढ़)। 18 वर्ष के बालक एवं बालिकाओं को मतदाता सूची में अपने नाम जोड़ने बूथ लेबल के अधिकारी द्वारा अवगत कराया गया जिसमें समाज के छूटे हुए वंचित वर्ग,दिव्यांग तृतीय लिंग व वरिष्ठ नागरिकों को अपना नाम मतदाता सूची में जुड़वा कर वोट डालने प्रेरित किया गया इस वर्ष भी देश के लोकतंत्र को अधिक मजबूत

बनाने मतदाता सूची में पूर्णता शुद्धहित और समाज बनाए जाने को अवगत कराते हुए संकल्प पत्र का वाचन किया गया जिसमें परमेश्वरी साहू सभापति जनजाति कुरूद,सरपंच खिलावन पाल,मानसिंह साहू,रविंद्र सेन,ग्राम पटेल महेंद्र साहू,चरण साहू,सदाराम साहू,जितेंद्र तारक सरवन साहू,खिल्लू साहू,चुम्मन निषाद,प्राथमिक शाला प्रधान पाठक जी पी साहू,प्रह्लाद सोनकर एवं होचंद डाडे रेवाराम पाल,देवेंद्र निषाद,दिनेश साहू, नीलम निर्मलकर,धनेश्वरी साहू,बीएलओ सुख बत्ती साहू,बीएलओ कमलेश मिश्रा,नोडल अधिकारी सुरेश वातसल,सजीवन साहू एवं प्राथमिक शाला के बालक बालिकाओं की उपस्थिति में संकल्प पत्र का वाचन किया गया।

पूर्व विधायक होरा ने जलाभिषेक किया

धमतरी 3 अगस्त। सावन मास के चौथे सोमवार को कोटेश्वर महादेव मंदिर पहुंच कर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के उपाध्यक्ष एवं पूर्व विधायक धमतरी गुरूमुख सिंह होरा ने जलाभिषेक कर प्रदेश एवं धमतरी विधानसभा क्षेत्रवासियों के समृद्धि एवं खुशहाली की कामना की।

भूपेश बघेल ने लौटाई चिटफंड के पीड़ित निवेशकों की राशि

रायपुर,3 अगस्त ■ तरुण छत्तीसगढ़

मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल अपने वायदे के अनुसार चिटफंड के पीड़ित निवेशकों को उनकी राशि लौटा रहे हैं। मुख्यमंत्री ने आज राजधानी स्थित अपने निवास कार्यालय से राज्य के 7 जिलों के 35 हजार 378 पीड़ित निवेशकों को 4 करोड़ 13 लाख 88 हजार 996 रूपए की राशि लौटाई गई। मुख्यमंत्री श्री बघेल के निर्देश पर अब तक राज्य के 81 हजार 204 पीड़ित निवेशकों को 37 करोड़ 92 लाख 99 हजार 656 रूपए की राशि लौटाई जा चुकी है, 208 चिटफंड कंपनियों के खिलाफ 462 प्रकरण दर्ज किए गए हैं और इनसे संबंधित 700 से अधिक डायरेक्टर्स/ पदाधिकारियों की गिरफ्तारी भी की जा चुकी है।

मुख्यमंत्री ने आज रायपुर, बिलासपुर, राजनांदगांव, धमतरी, मनेंद्रगढ़ , कोरिया और मोहला-मानपुर-अंबागढ़ चौकी जिले के 35,378 निवेशकों को चिटफंड कम्पनियों द्वारा हड़पी गई राशि लौटाई । इसमें रायपुर जिले के 13 हजार 676 निवेशकों को एक करोड़ 44 लाख 37 हजार रूपए, बिलासपुर जिले के 16 हजार 615 निवेशकों को आज 84 लाख 55 हजार रुपए की राशि वापस की गई है। इसी तरह से राजनांदगांव जिले के 4835 निवेशकों को आज एक करोड़ 10 लाख रुपए और धमतरी जिले के 43 निवेशकों को 12 लाख 55 हजार की राशि वापस दी गई। मनेन्द्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर जिले के 110 निवेशकों को 44 लाख 41 हजार 895 रूपए, कोरिया जिले के 94 निवेशकों को 17 लाख 18 हजार 960 रूपए और मोहला-मानपुर-अम्बागढ़ जिले के 5 निवेशकों को 54 हजार 100 रूपए की राशि का अंतरण किया गया है। हितग्राहियों को आनलाइन संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री श्री बघेल ने कहा कि छत्तीसगढ़ देश का पहला राज्य है जहां चिटफंड कंपनियों पर कार्रवाई करके पीड़ित निवेशकों का पैसा वापस लौटाया गया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारे द्वारा की गयी कार्रवाई को देखते हुए अब दूसरे राज्य भी हमसे ये पूछ रहे हैं कि ये कैसे संभव हो पाया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि ये सब कुछ राज्य की जनता के विश्वास के कारण ही संभव हो सका है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि मैंने आपसे वादा किया था आपसे ठगी करके आपके खून-पसीने की कमाई लूटने वाली चिटफंड कंपनियों को बख्शा नहीं जाएगा। उन पर कानूनी कार्यवाही की जाएगी और निवेशकों के पैसे लौटाए जाएंगे। हमने चिटफंड कंपनियों से निवेशकों की राशि लौटाने कार्ययोजना बनाई और इस पर अमल के लिए समयसीमा तय की। इस पर अधिकारी कड़ी मेहनत कर रहे हैं और फर्जी कंपनियों पर लगातार कार्रवाई कर निवेशकों को राशि लौटाई जा रही है। कार्यक्रम में आनलाइन जुड़े राज्य के गृहमंत्री श्री ताम्रध्वज साहू ने अपने संबोधन में कहा कि ये मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल के दूरगामी सोच का ही परिणाम है कि आज वो पैसे निवेशकों को वापस मिल रहे हैं जिसके बारे में सोचना उन्होंने छोड़ दिया था। श्री साहू ने पीड़ित निवेशको को न्याय दिलाने के लिए मुख्यमंत्री को विशेष तौर पर धन्यवाद दिया। कार्यक्रम के दौरान उपस्थित नगरीय प्रशासन मंत्री डॉ शिव कुमार डहरिया ने अपने संबोधन मे कहा कि मुख्यमंत्री के निर्देश पर लगातार पीड़ित निवेशकों के पैसे वापस लौटाए जा रहे हैं और भविष्य में इस काम में और भी तेजी आएगी। श्री डहरिया ने कहा कि मुख्यमंत्री राज्य की जनता से अपना वादा निभाने का काम बहुत अच्छे तरीके से कर रहे हैं। पीड़ित निवेशकों की राशि लौटाने के न्याय योजना के दौरान छत्तीसगढ़ खनिज विकास निगम के अध्यक्ष श्री गिरीश देवांगन, अपर मुख्य सचिव श्री सुब्रत साहू, डीजीपी श्री अशोक जुनेजा, मुख्यमंत्री के सचिव श्री अंकित आनंद, गृह विभाग के सचिव श्री बसव राजू, गृह विभाग के संयुक्त सचिव श्री अभिजीत सिंह, सीआईडी के आईजी श्री संजीव शुक्ला उपस्थित थे।

वनांचल ग्राम झिंझारी में अवैध मुरुम खनन जोरों पर

- वनभूमि पट्टा जमीन से मुरुम की खुदाई, राजस्व विभाग मौन
- कांग्रेसी जनप्रतिनिधि की शिकायत के बाद भी कार्रवाई नहीं
- मुरूम का उपयोग चिचोला नारायणपुर सड़क निर्माण में किया जा रहा

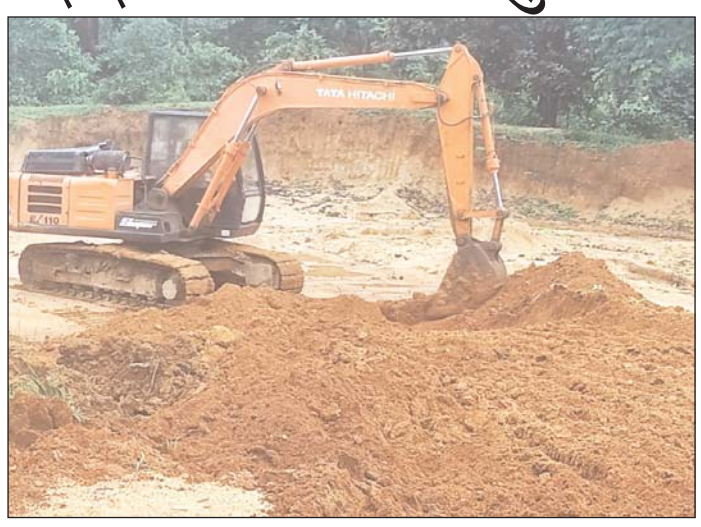

■ तरुण छत्तीसगढ़

डोंगरगढ़/लाल बहादुर नगर,3 अगस्त। डोंगरगांव विधानसभा क्षेत्र अंतर्गत आने वाले वनांचल ग्राम पंचायत झिंझारी से मुरुम तस्करों के द्वारा वनभूमि वन पट्टा की जमीन से बेधड़क जेसीबी मशीन लगा अवैध रूप से मुरुम खोदने का मामला प्रकाश में आया है. लाल बहादुर नगर के एक कांग्रेसी जनप्रतिनिधि ने मीडिया कर्मियों से शिकायत की गई कि ग्राम पंचायत व जनपद पंचायत की अनुमति बिना ठेकेदार के द्वारा अवैध मुरुम खनन कर चिचोला नारायणपुर की नवनिर्मित सड़क पर खपा राजस्व को चुना लगाया जा रहा है. जिसकी जानकारी लेने पर मौका स्थल पर पाया गया कि झिंझारी मडियान मार्ग पर वनभूमि पट्टा की जमीन से किसान की सहमति व उपस्थिति में राजनाँदगांव के ठेकेदार लेखु साहु के सुपरवाईजर की निगरानी में मुरूम खनन कर ठेकेदार की गाड़ी हाइवा में लोड कर रोड निर्माण में लगाया जा रहा है. जिसकी शिकायत मौका स्थल से ही दूरभाष पर एसडीएम गिरीश रामटेके को दी जिस पर टीम भेज जाँच की बात कही गई. वहीं ठेकेदार के आए प्रतिनिधियों ने बताया कि किसान की सहमति से खनन किया जा रहा है राजस्व की अनुमति के चक्कर में लाखों खर्च हो जाते है वैसे भी जनहित का कार्य कर रहे है व मुरूम की रायल्टी बिल में कटना तय है. वहीं ग्रामीणों ने बताया कि इस तरह के खनन तो आम हो गए है यहाँ से तो हमेशा रेती व मुरूम ले जाया जाता है जिसकी शिकायत पर भी कोई देखने वाला नहीं है और जिसकी सरकार आती है उनके खनन माफीयाओ का राज चलता है.

शिक्षा विभाग में पोस्टिंग एवं संशोधन के नाम पर भ्रष्टाचार

नगरी,3 अगस्त ,3 अगस्त ■ तरुण छत्तीसगढ़

कई घोटाले ऐसे हैं जो लोगों की नजरों में तो नहीं आते लेकिन बहुत से लोग प्रभावित हुए हैं। उन्हें भ्रष्टाचार के नाम से जाना जाता है। भ्रष्टाचार विश्वासघात का एक ऐसा कार्य है जो शायद ही किसी ने या किसी स्थान को छोड़ा हो जिस प्रकार से छत्तीसगढ़ राज्य में पोस्टिंग एवं संशोधन को लेकर घोटाले उजागर हो रहे हैं एवं निलंबन का दौर चल रहा है उसी प्रकार धमतरी जिले के आदिवासी विकास खंड नगरी में भी पोस्टिंग एवं संशोधन का कार्य बड़े पैमाने में किया गया है! गौरतलब है कि सहायक शिक्षकों को पदोन्नति कर प्राथमिक शाला में प्रधान पाठक के पद पर पदोन्नत किया गया था, यह सारी प्रक्रिया ओपन काउंसलिंग के माध्यम से किया गया है, जिसमें दिव्यांग अभ्यर्थी को प्रथम प्राथमिकता के आधार पर स्वेच्छा से सुविधानुसार जगह चयन करने का मौका दिया गया, इस आधार पर दिव्यांग व्यक्ति को प्राथमिकता के तहत मनचाहा स्थान में पोस्टिंग किया जाना था, मौके का फायदा उठाकर दिव्यांग ने एक दूसरे शिक्षक से सेंटिंग कर अपने स्थान से 50 किलोमीटर दूर जगह का चयन किया था, बाद में अधिकारी से लेन देन कर के नियमों की धज्जियां उड़ाते हुए दूसरे शिक्षक ने दिव्यांग शिक्षक से आपसी स्थानांतरण करवा लिया है, इस पर लेनदेन की चर्चा जोरों पर है। उल्लेखनीय है कि जिला शिक्षा अधिकारी के द्वारा काउंसलिंग में लिए गए स्थान पर कई बार संशोधन किया गया है, एक बार काउंसलिंग में स्वेच्छा से चुने गए स्थान को छोड़कर दूसरे के साथ आपसी स्थानांतरण करवाने का खुला खेल चल रहा है सूत्रों की मानें तो दिव्यांग शिक्षक पहले अपने निवास स्थान से 50 किलोमीटर दूरी पर स्थान चिन्हित करता है फिर सेटिंग करने वाले व्यक्ति के लिए स्थान आरक्षित करवाता है फिर वह स्थान उसे देकर अपने निवास के आसपास,आपसी स्थानांतरण करवा लेने का मामला सामने आया है, आपको बता दें कि धमतरी के शिक्षा विभाग में पैसों के दम पर सहायक शिक्षक से शिक्षक के पद पर पदोन्नत शिक्षकों की पदस्थापना ऐसे शालाओं में की गई है जहां पूर्व से उस विषय का शिक्षक पदस्थ है, जैसे, मोदे, फरसियां, कुकरेल, बाजार कुर्रीडीहि, इसका उदाहरण जबकि नगरी क्षेत्र में वनांचल के कई स्कूलों में आज भी पद रिक्त है, शिक्षा जगत के लिए इससे बड़ा मजाक क्या हो सकता है ? जबकि पूर्व वर्षों में ऐसे ही शिक्षकों को अतिशेष कह कर प्रताड़ित किया गया था आज उच्च अधिकारी स्वयं अतिशेष शिक्षक निर्मित करने पर तुले हुए हैं अतः ऐसे शिक्षकों की पदस्थापना तत्काल निरस्त किया जाए एवं जिस स्थान पर उस विषय का शिक्षक नहीं है उन जगहों पर उनकी नियुक्ति की जाए, इस घटनाक्रम से स्पष्ट है कि पोस्टिंग के इस खेल में बड़े पैमाने पर धांधली की गई है अगर इसकी जांच कराई जाए तो और भी कई घोटाले उजागर होने की पूरी संभावना है

भारत शासन के संपर्क फाउंडेशन ने जिले को 20 लाख का दिया डिवाइस

राजनांदगांव ,3 अगस्त ■ तरुण छत्तीसगढ़

जिले के सरकारी स्कूलों में कलेक्टर श्री डोमन सिंह के अथक प्रयास मार्गदर्शन एवं नवाचारी सोच के परिणामस्वरूप लोगों से जनभागीदारी के तौर पर अपने शासकीय स्कूलों में स्मार्ट टीवी देने की अपील की गई। उसका परिणाम यह रहा कि जिले के सभी शासकीय प्राथमिक और माध्यमिक शालाओं में स्मार्ट टीवी जनसहयोग से ले लिया गया। इसी कड़ी में जिले की इस उपलब्धि के आधार पर भारत शासन के संपर्क फाउंडेशन ने जिले को 20 लाख का डिवाइस प्रदान किया गया। जिससे शासकीय स्कूलों में प्राथमिक शालाओं में स्मार्ट टीवी के माध्यम से अध्यापन व्यवस्था को बेहतर तकनीक उपलब्ध हो सके। उल्लेखनीय है कि इस नवाचार की प्रशंसा प्रदेश से लेकर भारत शासन तक की गई है। यह अपनी तरह की एक बेहतरीन नवाचारी सोच थी। जिससे सभी शालाओं में जनसहयोग से ही प्राथमिक, माध्यमिक शालाओं को स्मार्ट टीवी उपलब्ध कराई जा सकी है। इसकी उपलब्धियों पर जिले को बहुत सराहा गया है और अलग-अलग अवार्ड के लिए भी इसको नामांकित किया गया है।

वर्तमान में 100 प्राथमिक स्कूलों में जो 20 लाख मूल्य की डिवाइस संपर्क फाउंडेशन द्वारा प्रदाय की है। आगे भी जिला प्रशासन द्वारा यह प्रयास है कि और भी स्कूलों के लिए यह संपर्क डिवाइस प्राप्त की जा सके। जिससे अध्ययन-अध्यापन की व्यवस्था को और बेहतर बनाया जा सके। प्राथमिक शालाओं के छत्तीसगढ़ बोर्ड के पूरे विषयों पर बहुत बेहतर तरीके से संपर्क फाउंडेशन ने डिवाइस तैयार की है । इस डिवाइस का उपयोग नियमित रूप से किये जाने पर बेहतरीन उपलब्धि एवं एकेडमी गुणवत्ता प्राप्त की जा सकती है। कम समय में ही बच्चे विजुअल तरीके से वीडियो के माध्यम से स्मार्ट टीवी के उपयोग करते रहने से अपने कक्षा के स्तर को प्राप्त कर सकते हैं। जिसके लिए स्मार्ट टीवी और संपर्क डिवाइस एक बेहतरीन साधन साबित हो रहा है। इस उपलब्धि के लिए कलेक्टर ने संपर्क फाउंडेशन के अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी श्री राजेश सिंह, जिला परियोजना अधिकारी श्रीमती रश्मि सिंह, जिला मिशन समन्वयक श्री सतीश ब्यौहरे, सहायक परियोजना समन्वयक श्री मनोज मरकाम एवं विकासखंड शिक्षा अधिकारी, विकासखंड स्रोत समन्वयक, संकुल समन्वयक एवं शिक्षकों तथा ग्रामीणजनों को जिनके जनसहयोग से स्मार्ट टीवी की उपलब्धता के लिए सहयोग दिया है और उनकी सराहना की है।

छत्तीसगढ़ में ग्रामीण आजीविका सम्मेलन आयोजित

रायपुर, 3 अगस्त। एचडीएफसी बैंक परिवर्तन, भारत के प्रमुख बैंक के प्रमुख सीएसआर प्रोग्राम, की नई स्त्री (एसटीआरईई-सोशल एंड ट्रांसफोर्मिटिव रूरल इकोनॉमिक इम्पॉवरमेंट) पहल के तहत रायपुर, छत्तीसगढ़ में अपने मेगा ग्रामीण आजीविका शिखर सम्मेलन का पहला संस्करण 'छत्तीसगढ़ रूरल लाइवलीहुड समिट 2023' आयोजित किया। ग्रामीण आर्थिक सशक्तिकरण)। इस पहल का लक्ष्य पंजाब, छत्तीसगढ़, झारखंड, ओडिशा, पश्चिम बंगाल और असम सहित 6 राज्यों में 120,000 से अधिक महिला किसानों को लाभ पहुंचाना है। इस पहल के लिए बैंक ने ग्रांट थॉर्नटन भारत एलएलपी और सोसाइटी फॉर डेवलपमेंट अल्टरनेटिव्स के साथ नई सहभागिता की है।

इस समिट का उद्घाटन बैंक और सरकारी अधिकारियों के साथ-साथ जमीनी स्तर पर

कार्यक्रमों को लागू करने वाले भागीदारों, ग्रांट थॉर्नटन भारत एलएलपी और सोसाइटी फॉर डेवलपमेंट अल्टरनेटिव्स द्वारा किया गया था। समिट में कई जाने- माने और सम्मानीय लोगों ने हिस्सा लिया, जिनमें शामिल हैं। श्री प्रदीप शर्मा, सलाहकार, माननीय मुख्यमंत्री, नीति, योजना, कृषि एवं ग्रामीण विकास, डॉ. कमलप्रीत सिंह, आईएएस, प्रमुख सचिव कृषि, श्रीमती पद्मिनी भोई साहू, आईएएस, एसएमडी, सीजीएसआरएलएम (बिहान), डॉ. आरएस कुरील, वाइस चांसलर, महात्मा गांधी यूनिवर्सिटी ऑफ हॉर्टिकल्चर एंड फॉरेस्ट्री, छत्तीसगढ़,- डॉ. गिरीश चंदेल, वाइस चांसलर, इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय, छत्तीसगढ़,श्री आनंद बाबू, आईएफएस, एडीशनल, एमडी, सीजी माइनर फॉरेस्ट प्रोड्यूस मार्केटिंग फेडरेशन, श्री मतेश्वरन वी, आईएफएस, एमडी, सीजी बीज निगम और डायरेक्टर, हॉर्टिकल्चर,- प्रो. वी. पद्मानंद, श्री तरूण बैजनाथ, और श्री चिराग जैन, पार्टनर्स, ग्रांट थॉर्नटन भारत शिखर सम्मेलन ने हितधारकों को ग्रामीण आजीविका, किसान उत्पादक संगठनों (एफपीओ), सरकारी पहल और इकोसिस्टम के विकास को बढ़ावा देने में नॉलेज और अनुभव साझा करने के लिए एक मंच प्रदान किया। यह पहल 27,000 लाभार्थियों तक पहुंचेगी, जिनमें छत्तीसगढ़ में 20 महिलाओं के नेतृत्व वाले एफपीओ, 10,000 एफपीओ सदस्य और 17,000 गैर-एफपीओ सदस्य शामिल हैं।

नगर निगम का मवेशी धर-पकड़ अभियान जारी

राजनांदगांव ,3अगस्त (तरुण छत्तीसगढ़)। घुमंतु मवेशियों की धर पकड के तहत नगर निगम का मवेशी धर-पकड़ अभियान में नगर निगम की टीम शहर के प्रमुख चौक चौराहो में घुमन्तु एवं बैठे मवेशियों को प्रतिदिन पकड़ने की कार्यवाही कर रही है। इसी कडी में आज शहर के बाह्य प्रमुख मार्गो व कालोनी क्षेत्र से 14 घुमन्तु मवेशियों की धर-पकड की गयी। गत दिवस 12 मवेशी पकडने की कार्यवाही की गयी थी। उल्लेखनीय है कि कई पशु मालिकों द्वारा अपने मवेशियों को खुला छोड देते है, जिससे मवेशी चौक चौराहों में घुमते एवं बैठे रहते है, जिससे यातायात बाधित होती है एवं दुर्घटना की संभावना बनी रहती है, जो आमजनों के साथ ही पशुओ के लिये भी खतरनाक है। निगम द्वारा अब लापरवाह पशु पालकों के विरूद्ध पशुपालक पशु क्रूरता अधिनियम के तहत कानूनी कार्यवाही की जावेगी। शासन द्वारा भी रोका छेका अभियान के तहत घुमन्तु पशुओं को पकड़ने एवं पशु मालिकों को अपना मवेशी घर में बांध कर रखने समझाईस देने के निर्देश दिये गये है। निर्देश के अनुक्रम में निगम द्वारा धर-पकड़ अभियान चलाया जा रहा है। नगर निगम आयुक्त श्री अभिषेक गुप्ता द्वारा घुमन्तु मवेशियों को पकड़ने गठित टीम प्रतिदिन चौक चौराहो से घुमन्तु मवेशियों को पकड़ने की कार्यवाही कर रही है। इसी कडी में

कांग्रेस ने किया विरोध प्रदर्शन

डोंगरगढ़ ,3अगस्त (तरुण छत्तीसगढ़)। मणिपुर में विगत 3 माह से हो रहे लगातार हिंसा व महिलाओं पर किए जा रहे अत्याचार और देश में बढ़ती महंगाई के खिलाफ ब्लॉक कांग्रेस कमेटी डोंगरगढ़ शहर एवं ग्रामीण द्वारा विरोध प्रदर्शन कर गोल बाजार में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का पुतला जलाया गया। इस दौरान कांग्रेस जनों ने गोल बाजार में भ्रमण कर मणिपुर में हो रही हिंसा और देश में बढ़ती महंगाई के लिए मोदी सरकार को जिम्मेदार ठहराते हुए जोरदार नारेबाजी किया। विरोध प्रदर्शन के दौरान विधायक भुनेश्वर बघेल पूर्व मंत्री धनेश पाटिला ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्ष द्वय संजीव गोमास्ता व सुरेश सिन्हा संध्या देशपांडे जिला पंचायत सदस्य हर्षिता स्वामी व पुष्पा वर्मा नलिनी मेश्राम शिशुपाल भारती लता साहू कमलेश वर्मा जितेन्द्र भाटिया युकांध्यक्ष शोहेल खान राजू राजपूत अश्वनी फूले किरण मेश्राम नेतराम साहू दिनेतू जांगड़े पंचकला मेश्राम नरेश करसे दशरथ सोनी छत्री वर्मा गणेश मुदलियार सामसाय टांडेकर रजत देशपांडे फत्तू वर्मा फिरंगी पटेल रूपचंद खोबरागड़े मनीषा नेताम आरती वर्मा रेखा खोबरागड़े योधन दास साहू सतानंद कंवर गौतम वर्मा नन्दु वर्मा हरक पटेल राजेन्द्र मंडावी रत्नु मंडावी दशरथ सिंह अर्जुन टुमेश नेताम मनोज वर्मा राजूलाल वर्मा सहित बड़ी संख्या में कांग्रेस जन उपस्थित रहे।

आदिवासियों से भयभीत सरकार की चेतना ही गुल : रमेश हिड़ामे

मोहला,,3अगस्त (तरुण छत्तीसगढ़)। एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालय पेंड्री राजनांदगांव पालक समिति के अध्यक्ष व नागवंशी गोंड समाज ब्लॉक मोहला अध्यक्ष तथा आदिवासी समाज जिला मोहला मानपूर अं चौकी के प्रवक्ता जिला भाजपा मोहला मानपूर अं चौकी के उपाध्यक्ष रमेश हिड़ामे ने कहा है प्रतिवर्ष स्कूलों में भर्ती-प्रक्रीया 15 जून से प्रायः प्रारंभ हो जाती है और 15जुलाई से पढ़ाई भी चालू हो जाती है लेकिन एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालयों में अभी तक छटवीं में प्रवेश प्रारंभ ही नहीं होना बहुत से शंका को जन्म देती है जिस प्रकार छ ग में जनजातियों के 32त्नआरक्षण को घटाकर 20त्नकरना मूल पेशा कानून की आत्मा को ही खत्म करना जनजातिय बहुल संभाग में तृतीय चतुर्थ श्रेणी में स्थानीय भर्ती नियम को रद्द करना पर 29 में 30 विधायक सरकार के साथ पर सब के सब मौन! कहीं ईसी तरह केंद्र सरकार द्वारा 275(1) के तहत जनजायियों को शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ने एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालय जनजाति बच्चों के लिये खोला गया है उसे भी बंद ना कर दे? जिससे छ ग का जनजातीय समाज छ ग सरकार के उक्त कृत्य से काफी नाराज व उत्तेजित आंदोलनरत है।जनजातियों आंदोलनों से घबराई कांग्रेस व छ ग कांग्रेस सरकार की चेतना ही गुल हो गयी है जिसे 9अगस्त विश्व आदिवासी दिवश के दिन सरकार की चेतना को जगाने आवाज ऊठाकर शीघ्र प्रवेश प्रक्रीया प्रारंभ करने मांग की जायेगी।

छत्तीसगढ़ राज्य फार्मेसी काउंसिल के सदस्य बने राहुल तिवारी

खुरिया,3अगस्त (तरुण छत्तीसगढ़)। जिला कांग्रेस के प्रवक्ता एवं राजनांदगांव जिला कांग्रेस चिकित्सा प्रकोष्ठ के अध्यक्ष राहुल तिवारी को छत्तीसगढ़ फार्मेसी काउंसिल के सदस्य के रूप में नई जिम्मेदारी मिली है। सदस्य मनोनीत होने पर कांग्रेस के नेताओं, कार्यकर्ताओं सहित शुभचिंतकों ने राहुल तिवारी को बधाई शुभकामनाएं प्रेषित कर खुशी व्यक्त की। राहुल तिवारी ने कहा मुझे छत्तीसगढ़ फार्मेसी काउंसिल का सदस्य के रूप में मनोनीत करने पर छत्तीसगढ़ के यशस्वी मुख्यमंत्री आदरणीय भूपेश बघेल जी, छत्तीसगढ़ के उपमुख्यमंत्री एवं स्वास्थ्य मंत्री आदरणीय टी एस सिंहदेव जी, खुज्जी विधायक श्रीमती छन्नी चंदू साहू जी सहित मेरे वरिष्ठ नेतागण, मेरे मार्गदर्शक एवं मेरे सभी शुभचिंतकों को हृदय की गहराइयों से कोटि-कोटि धन्यवाद। आपका प्यार, आशीर्वाद, शुभकामनाएं ही मेरी प्रेरणा है। इस नई जिम्मेदारी पर अच्छा कार्य कर आपकी उम्मीदों पर पूर्णता खरा उतरूंगा।

भारत का पहला सेल्फ-सर्व मार्केटिंग कम्युनिकेशन प्लेटफॉर्म

रायपुर,3अगस्त (तरुण छत्तीसगढ़)। भारत के अग्रणी टेलीकॉम सर्विस प्रोवाइडर्स में से एक, भारती एयरटेल (एयरटेल) ने आज एयरटेल आईक्यू रीच के लॉन्च की घोषणा की, यह एक अनूठा सेल्फ-सर्व मार्केटिंग कम्युनिकेशन प्लेटफार्म है, जो पर्सनलाइज्ड कम्युनिकेशन के जरिए ब्रांड या कंपनियों को अपने विशिष्ट ग्राहकों से जुड़ने की क्षमता प्रदान करेगा। एयरटेल आईक्यू के तहत लॉन्च किया गया यह कम्युनिकेशंस एज अ सर्विस (सीपीएएएस) के रूप में दुनिया का पहला नेटवर्क-एम्बेडेड कम्युनिकेशंस प्लेटफॉर्म है। एयरटेल आईक्यू रीच सहजता से इस्तेमाल किया जा सकने वाला प्लेटफॉर्म है। यह लघु और मध्यम व्यवसायों को प्रीपेड पे-एज़-यू-गो विकल्पों के माध्यम से, उनके मार्केटिंग बजट से अधिकतम लाभ अर्जित करने और संभावित ग्राहकों तक पहुंचने में मदद करता है। यह सेल्फ-सर्व पोर्टल विशेषकर नए व्यवसायों को सशक्त बनाने के लिए, उनकी आवश्यकता के अनुरूप सभी सुविधाएं एक स्थान पर उपलब्ध कराएगा।

शिव मानस कथा महोत्सव

रायपुर,,3अगस्त (तरुण छत्तीसगढ़)। कथा वाचन के प्रथम दिवस में शक्ति छत्तीसगढ़ विप्र महिला समाज ब्राह्मण पारा रायपुर ने बढ़-चढ़कर अपनी भूमिका निभाई। अध्यक्ष श्रीमती प्रीति शुक्ला, संरक्षिका कुसुम शर्मा एवं महिला मंडल के अन्य महिलाओं ने सर्वप्रथम आचार्य जी का स्वागत किया तदुपरांत मानस कथा का प्रारंभ हुआ जिसमें कथावाचक आचार्य श्री झम्मन शास्त्री जी ने विप्र महिला मंडल की तारीफ की और अपने श्री वचनों से प्रवचन कर भक्तजनों को अनुग्रहित किया जिसमें आचार्य द्वारा मलमास क्या है, पुरुषोत्तम मास का महत्व क्या है ,बताया गया जिसमें उन्होंने रुद्राभिषेक गोपाल सहस्त्रनाम, शिव सहस्त्रनाम, इत्यादि पूजन आराधना का विशेष महत्व समझाया गया। पंडित झम्मन शास्त्री जी लगभग 27 साल से ब्राह्मण पारा में कथा वाचन करते आ रहे हैं ,उन्होंने बताया कि सत्संग के अवसर भी भगवान की कृपा से ही प्राप्त होते हैं यहां तक कि भगवान श्रीराम स्वयं भी कथा सुना करते थे। सत्संग के महत्व पर प्रकाश डालते हुए शास्त्री जी ने बताया कि संस्कृति प्रधान समाज के लिए कथा का आयोजन होना आवश्यक है क्योंकि भौतिक विकास से संस्कृति का हास देखा जा रहा है। परिवारों में एक दूसरे से दूरी बढ़ रही है।साथ ही व्रत का महत्व बताते हुए उन्होंने समझाया कि व्रत किस प्रकार हमारी आंतरिक शुद्धि करता है। उपस्थित अभिभावकों को आचार्य झम्मन शास्त्री जी द्वारा प्रेरित किया गया कि वह अपने बच्चों को सूर्योदय में उठकर सूर्य को अर्घ देने के संस्कार सिखाएं।शिव मानस कथा महोत्सव के आयोजन में प्रातः 9ञ्00 बजे से महिला मंडल ने सर्वप्रथम रुद्राभिषेक का आयोजन किया दोपहर में सब ने खूब भजन कीर्तन किए एवं शिव मानस कथा एवं आचार्य जी के प्रवचन के उपरांत आरती एवं प्रसाद वितरण द्वारा प्रथम दिवस मानस कथा महोत्सव की समाप्ति हुई।

संपादकीय

विपक्ष आलोचना भी कर सकता है

लोकतंत्र में विपक्ष की अहम भूमिका होती है। वह सत्ता का दावेदार होता है। सत्ता पक्ष को यदि जनता पसंद नही करती है तो उसके पास चुनने को विपक्ष ही होता है। विपक्ष को जनता तब नहीं चुनती है जब वह कमजोर होता है। विपक्ष कमजोर एक तो संख्या बल में होता है। विपक्ष दूसरे कमजोर इसलिए होता हैकि वह सिर्फ सरकार की आलोचना करता है। उसके पास नेतृत्व,नीति व नीयत की कमी होती है। जब विपक्ष के पास नेतृत्व ही नहीं है तो वह नीति क्या बनाएंगे। नीति ही नहीं बना रहे हैं तो नीयत पर सवाल तो उठेगा ही।26 दलों ने मिलकर आई.एन.डी.आई.ए. बना लिया है। लेकिन वह संसद में क्या कर पा रहे हैं कुछ नहीं कर पा रहे हैं. विपक्ष को हर विषय में संसद में खूब बोलना चाहिए, उसके बोलने से ही पता चलता है कि सरकार कहां गलत है। विपक्ष संसद सत्र का बहिष्कार करता रहता है तो जनता में यह संदेश जाता है कि यह लोग बहस से बचना चाहते है। संसद में बोलने के लिए जनता ने सांसदों को चुना है लेकनि सांसद जनता के लिए संसद में बोलते ही नहीं है। ऐसे में वह जनता के सांसद कहां रह जाते हैं, वह तो पार्टी के सांसद रह जाते हैं । पार्टी चाहती है कि वह संसद का बहिष्का करे तो वह संसद का बहिष्कार करते रहते हैं। संसद सत्र जब से शुरू हुआ है, तब से विपक्ष किसी न किसी बहाने संसद में बहस से भागता रहा है. इससे तो किसी को भी लग सकता है कि विपक्ष बहस करना ही नहीं चाहता है। यही वजह है कि संसद में नौवें दिन भी विपक्ष ने हंगामा किया। नौवें दिन संसद में बहुप्रतिक्षित दिल्ली में अफसरों की ट्रांसफर पोस्टिंग पर नियंत्रण से जुडा राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार (सशोधन) विधेयक 2023 पेश किया गया। इसका विपक्ष ने यह कहकर विरोध किया कि यह बिल दिल्ली के लोकतंत्र को बाबूशाही में बदल देगा। कांग्रेस नेता अधीररंजन चौधरी ने कहा कि यह बिल संविधान का उल्लंघन है। सुप्रीम कोर्ट का फैसला बदलने की कोशिश है। जवाब में गृहमंत्री अमित शाहने कहा कि संविधान संसद को दिल्ली के लिए कानून बनाने की इजाजत देता है। बिल के खिलाफ जो भी बयान दिए जा रहे हैं वह राजनीतिक है, उनका कोई संवैधानिक आधार नहीं है। इस बिल को बीजू जनता दल व आंध्र की वाईएसआर कांग्रेस ने भी समर्थन किया है। इससे साफ है कि यह बिल लोकसभा के बाद राज्यसभा में भी आसानी से पारित हो जाएगा। इस बिल के पारित होते ही दिल्ली सरकार को अफसरों के ट्रांसफर पोस्टिंग का कोई अधिकार नहीं रह जाएगा। यह बिल सरकार को इसलिए लाना पड़ा कि सुप्रीम कोर्ट ने इस मामले में दिल्ली सरकार के पक्ष में फैसला दिया था। सुप्रीम कोर्ट के फैसले के बाद यह साफ हो गया था केंद्र सरकार कानून बनाकर दिल्ली सरकार के इस अधिकार को उससे छीन सकती है। सुप्रीम कोर्ट ने यह तो कहा नहीं था कि केंद्र सरकार सुप्रीम कोर्ट के फैसले को संसद में कानून लाकर बदल नहीं सकती। ऐसा पहले भी हो चुका है। देश को शाहबानों का केस याद है। जब सुप्रीम कोर्ट ने शाहबानों के मामले में शाहबानो के पक्ष में फैसला दिया था तो राजीव गांधी सरकार ने कानून लाकर सुप्रीम कोर्ट के फैसले को बदल दिया था। वह भी कोई व्यापाक लोकहित में नहीं, मुसलमानों को खुश करने के लिए। केंद्र सरकार जानती है कि दिल्ली की केजरीवाल सरकार के पास जितने ज्यादा अधिकार होंगे वह उसके साथ उतना ही टकराव पर आमदा रहेगी। इसलिए केंद्र सरकार ने दिल्ली सरकार से वह अधिकार छीन लिया है जिसके आधार पर वह उसके कामकाज में अडंगा डालती। इससे पहले दिल्ली में कांग्रेस व केंद्र में भाजपा की सरकार रही है लेकिन अधिकारों को लेकर कभी इतना विवाद नहीं हुआ। केंजरीवाल सरकार केंद्र सरकार से पंगा लेती है, इसका खामियाजा उसे भुगतना पड़ता है।

आज का राशिफल

मेष राशिःआज किसी काम को लेकर आपको जल्दबाजी करने से बचना चाहिए। माता-पिता के साथ आपके रिश्ते और बेहतर होंगे। व्यापार में आज उम्मीद से अधिक लाभ होगा। आपका पैसा कहीं अटक सकता है, साथ ही बढ़ते खर्च को नियंत्रण करने का प्रयास करें। जीवनसाथी के साथ रिश्ते अच्छे रहेंगे। इस राशि के जो लोग नौकरी की तलाश कर रहें है, उन्हें थोड़ा और इंतजार करना पड़ सकता है। लवमेट्स के लिए आज का दिन अच्छा रहने वाला है।

वृष राशिःआज आपका उदार भाव लोगों को काफी प्रभावित करेगा। आर्थिक स्थिति पहले से बेहतर बनेगी। अपने किसी काम में आपको दोस्त की मदद मिलेगी। उधार लेन-देन करने से आपको बचना चाहिए। आप रिश्तों की गंभीरता को समझने की कोशिश करेंगे। बच्चों के साथ आप ख़ुशी के पल बिताएंगे। आप ऑफिस का काम समय से पूरा करने में सफल होंगे। संतान पक्ष से कोई खास खुशखबरी मिलेगी। आपको जिद्द करने से बचना चाहिए।

मिथुन राशिःआज आप कई दिनों से रुके हुये कार्य पूरा करने में सफल होंगे। परिवार में आपका पॉजिटिव व्यवहार लोगों को प्रभावित करेगा। आप खुद को तरोताजा महसूस करेंगे। धन लाभ के योग बन रहे हैं। विवाहितों को संतान सुख की प्राप्ति होगी। कोई भी पारिवारिक फैसला लेने से पहले परिवारवालों की राय लेना बेहतर होगा। माता-पिता का सहयोग प्राप्त होगा। अपनी बात रखने का मौका मिलेगा, लोग आपसे प्रभावित होंगे। दाम्पत्य रिश्ते में मजबूती आएगी।

कर्क राशिःआज आपका दिन आत्मविश्वास से भरा रहेगा। सामाजिक स्तर पर आपका रुतबा बढ़ेगा। जीवनसाथी से खुशखबरी मिलने से पूरे दिन मन प्रसन्न रहेगा। साथ ही परिवार में भी सभी लोग प्रसन्न रहेंगे। कोई खास दोस्त आपसे आर्थिक मदद के लिए कहेगा। संतान पक्ष से सुख प्राप्त होगा। छात्रों का मन पढ़ाई में लगेगा। आप परिवार की जरूरतों को पूरा करने में सफल होंगे। कुल मिलाकर आज का दिन आपके लिए अच्छा रहने वाला है।

सिंह राशिःआज आपका आर्थिक स्थिति मजबूत रहेगा। आपसी विश्वास के सहारे पारिवारिक रिश्तों में मजबूती आएगी। मेहनत के परिणाम आपको जल्द ही मिलेंगे। इस राशि की महिलाओं को आज के दिन कोई खास खुशखबरी मिलेगी। करियर के लिए आज का दिन मील का पत्थर साबित होगा। लवमेट्स के लिए आज का दिन खुशियां लेकर आएगा। छात्रों को परीक्षा के अच्छे परिणाम प्राप्त होंगे। आपके कार्य समय से पूरे हो जाएंगे। आपके भौतिक सुख-साधनों में बढ़ोतरी होगी।

कन्या राशिःआज आपका दिन बेहतर रहने वाला है। आप अपने दिनचर्या में बदलाव करेंगे जिसका आपको लाभ भी मिलेगा। इस राशि के विद्यार्थियों को करियर में सफलता मिलेगी। मीडिया से जुड़े लोगों के लिए आज का दिन अच्छा रहेगा। दाम्पत्य जीवन सुखद बना रहेगा। कोई नया काम शुरू करने का मन बनाएंगे। नौकरीपेशा लोगों के लिए आज का दिन बढ़िया रहेगा। पारिवारिक माहौल खुशहाल बना रहेगा। आप अपने आर्थिक स्थिति के बारे में सोच विचार करेंगे।

तुला राशिःआज आपको किसी घरेलू कार्य में व्यस्त रहेंगे। घरवालों के साथ बेहतर तालमेल बनाने में आप सफल होंगे। पैसों के मामले में जीवनसाथी से सहयोग मिलेगा। नौकरीपेशा वाले लोगों का इंक्रीमेंट और पदोन्नति होने का योग बन रहा है। सोशल साईट पर आपके कुछ नए दोस्त बनेंगे। आपकी जिम्मेदारियां बढ़ सकती है। छात्रों के लिए आज का दिन शानदार रहने वाला है। कला और साहित्य के क्षेत्र में रुझान रहेगा। कुछ खास कार्यों में दोस्तों से मदद मिलेगी।

वृश्चिक राशिःआज आपका दिन उत्तम रहने वाला है। निवेश के मामले में आपको सावधानी बरतनी चाहिए। अगर कहीं निवेश कर रहे हैं तो पहले उस कार्य से जुडे लोगों से सलाह अवश्य ले लें। इस राशि के छात्रों के लिए आज का दिन सफलता दिलाने वाला होगा। आपके भौतिक सुख-साधनों में बढ़ोतरी होगी। दाम्पत्य जीवन में खुशहाली बना रहेगा। लवमेट्स के लिए दिन बेहतरीन रहने वाला है। मिलकर किए गए कार्यों में आपको सफलता मिलेगी। व्यापार में उचित लाभ की प्राप्ति हो सकती है।

धनु राशिःआज आपका ध्यान आध्यात्म की ओर अधिक लगा रहेगा। इस राशि के विद्यार्थियों को करियर से रिलेटेड अच्छे मौके मिलेंगे। नए लक्ष्य को निर्धारित करने के लिए आज का दिन शुभ है। पिता के स्वास्थ्य का खयाल रखें। जीवनसाथी के साथ सामंजस्य बना रहेगा। आपको कार्यों में अपने बड़े भाई का सहयोग मिलेगा। लवमेट्स एक दूसरे का सम्मान करेंगे, जिससे आपके रिश्ते में नयापन आएगा। आप करियर में नए आयाम स्थापित करेंगे। किसी काम में जीवनसाथी की सलाह फायदेमंद रहेगी।

मकर राशिःआज आपका स्वास्थ्य बेहतर बना रहेगा। आपके रुके हुए काम घरवालों की मदद से पूरे होंगे। इस राशि के विद्यार्थियों के लिए आज का दिन ठीक-ठाक रहेगा। सरकारी नौकरी करने वालों के लिए दिन बहुत अच्छा है। आपको दूसरों के सामने सोच-समझ कर बोलना चाहिए। किस्मत का साथ मिलने से अपने कार्यों को समय से पूरा करने में सफल होंगे। आपको अपने गुस्से पर नियंत्रण रखने की जरूरत है। आपको कुछ नया सीखने का मौका मिलेगा।

कुंभ राशिःआज आप खुद के कार्यों को पूरा करने में सफल होंगे। किसी खास व्यक्ति से फ़ोन पर बात होगी जो आगे चलकर आपके लिए काफी फायदेमंद साबित होगा। आपके दाम्पत्य रिश्ते में सौहार्द बना रहेगा। आपको करियर से संबंधित नए अवसर प्राप्त होंगे। पैसों के सिलसिले में थोड़ा सोच समझ कर फैसला लेना बेहतर होगा। अपने कार्यों की योजनाओं में आप बदलाव करेंगे। जीवनसाथी आपकी हर बात समझने की कोशिश करेंगे। साथ ही वो किसी काम में आपसे सलाह भी ले सकते हैं।

मीन राशिःआज आपका मन सामाजिक कार्यों की तरफ रहेगा। छात्रों को बेहतर परिणाम हासिल होंगे। पुरानी समस्याओं से छुटकारा मिलेगा। आप पूरे दिन खुद को ऊर्जा से भरा हुआ महसूस करेंगे। तली भुनी चीजे खाने से अवॉयड करें। दाम्पत्य जीवन में मधुरता बढ़ेगी। व्यापार को बढ़ाने के लिए कुछ नए प्लान बनाएंगे जिससे आगे चलकर आपको फायदा भी होगा। आप दूसरों की मदद के लिए तैयार रहेंगे। अचानक धन लाभ होने के योग बन रहा है।

छूत की बीमारी की तरह फैलती है हिंसा

हिंसा

डॉ सत्यवान सौरभ

बुद्धिमान लड़ाई से पहले जीतते हैं, जबकि अज्ञानी जीतने के लिए लड़ते हैं। संघर्ष के प्रति बुद्धिमान दृष्टिकोण लड़ाई या हिंसा में शामिल होने से पहले योजना बनाना और रणनीति बनाना शामिल है, जबकि अज्ञानी दृष्टिकोण परिणामों या संभावित परिणामों पर विचार किए बिना केवल लड़ना या हिंसा करना है। अर्थात बौद्धिक विचार यह है कि किसी स्थिति का सावधानीपूर्वक आंकलन करके और सूचित निर्णय लेकर, कोई भी व्यक्ति शारीरिक युद्ध या हिंसा का सहारा लिए बिना जीत हासिल कर सकता है। यह उद्धरण सलाह देता है कि बुद्धिमानी ऐसी स्थिति को पहले से ही भांप लेने में है जो हिंसा में बदल सकती है और फिर इससे बचने के लिए अपने संसाधनों का उपयोग करना चाहिए। क्या होता है जब हिंसा को टाला नहीं जा सकता? जब कूटनीति के प्रयास विफल हो जाते हैं, तब भी दुश्मन की ताकत और कमजोरियों का आंकलन करके दूसरे पक्ष पर तुरंत काबू पाने के लिए हिंसा को टाला जा सकता है। दुश्मन या विपक्षी को भ्रमित करने और उनके संसाधनों को बर्बाद करने के लिए धोखे और झूठ का भी इस्तेमाल किया जाता है। हिंसा को क़ानून-व्यवस्था के मसले जैसा समझने के बजाय, इसे सार्वजनिक स्वास्थ्य की चुनौती के तौर पर लिया जाये। हिंसक बर्ताव एक महामारी है, जो छुआछूत की बीमारियों की तरह एक इंसान से दूसरे इंसान में फैलती है। जो लोग हिंसा के पीड़ित होते हैं, उनके हिंसा करने की आशंका बढ़ जाती है। ÷हिंसा को ठीक उसी तरह रोका जा सकता है, जैसे गर्भधारण से जुड़ी चुनौतियां, काम के दौरान लगने वाली चोटों या संक्रामक बीमारियों को रोका जाता है। ÷दिक़्क़त ये है कि दुनिया भर में हिंसा से सख़्ती से निपटने की सोच हावी है। इसलिए हिंसक घटनाओं पर हंगामा होते ही, नेता हों या जनता, सख़्त क़ानून की मांग करने लगते हैं। इंसान अक्सर जोखिम भरा बर्ताव करता है, ख़तरों से खेलता है। जैसे कि नुक़सान पता होने के बावजूद स्मोकिंग करना या फिर पेट भरने के बावजूद ज़्यादा खाना। बिना एहतियात बरते सेक्स करना। डॉक्टर हमेशा कहते हैं कि इलाज से बचाव बेहतर है। यानी किसी मर्ज़ को होने से ही रोका जाए। लेकिन, जब बात हिंसक बर्ताव की आती है, तो, इससे निपटने का एक ही तरीक़ा लोग बताते हैं, क़ानून सख़्त बना दो। जैसे हाल ही में 12 साल से कम उम्र की बच्ची से बलात्कार पर मौत की सज़ा का प्रावधान। या फिर भीड़ की हिंसा से निपटने के लिए सख़्त क़ानून बनाने पर हमारे देश में विचार चल रहा है। हिंसा को इंसान का जन्मजात बर्ताव मान लिया गया है, जिसे बदला नहीं जा सकता। सोच यही है कि जो लोग हिंसा करते हैं, उन्हें सही रास्ते पर नहीं लाया जा सकता। इसलिए सख़्त क़ानूनों की बात ही की जाती है। लेकिन, सख़्त क़ानूनों से बात बनती होती, तो कब की बन जाती। सऊदी अरब और ईरान में कई जुर्मों के लिए मौत की सज़ा है।

हिंसा के शिकार लोगों को समझाना जरूरी है। बदला लेने की मानसिकता नुक़सान करवाती है, ताकि वो फिर उसी हिंसक दुष्चक्र में न फंस जाएं। कोई शराबी है या ड्रग का आदी है, तो उसकी इलाज करने में मदद की जाती है। फिर उसे रोज़गार दिलाने की कोशिश होती है। तभी कोई भी शख़्स एकदम से बदला हुआ नज़र आ सकता है। लोगों के बर्ताव में बदलाव लाकर हम कई चुनौतियों को जड़ से ख़त्म कर सकते हैं। जैसे साफ़-सफ़ाई की आदत से डायरिया जैसी बीमारी को रोका जा सकता है। ये क़दम तब और असरदार हो जाते हैं, जब एक पीड़ित, दूसरे की मदद करता है। वो अपने ख़ुद के तजुर्बे साझा कर के लोगों का भरोसा जीत सकते हैं। जैसे कोई टीबी-हैजा के मरीज़ रहे लोग इसके शिकार लोगों के बीच काम करें। हिंसक बर्ताव एक महामारी है, जो छुआछूत की बीमारियों की तरह एक इंसान से दूसरे इंसान में फैलती है।

मगर अपराध तब भी नहीं रुकते। भारत में भी कई अपराधों के लिए मौत की सज़ा मिलती है। मगर वो जुर्म अब भी होते हैं। हिंसा से किस प्रकार बचा जा सकता है? आज देश के जातीय दंगों के संदर्भ में, यह उद्धरण दो समुदायों के बीच संघर्षों को सुलझाने में कूटनीति और बातचीत के महत्व पर प्रकाश डालता है। हिंसा का सहारा लेने के बजाय, जिसके सभी संबंधित पक्षों के लिए विनाशकारी परिणाम हो सकते हैं, बुद्धिमान नेता बातचीत और समझौते के माध्यम से शांतिपूर्ण समाधान ढूंढने का प्रयास करता है। प्रायः पड़ोसी राज्यों या धार्मिक समुदायों के बीच संघर्ष अक्सर होते रहते हैं, इसलिए हिंसा की घटनाओं को कम करने की दिशा में क्षेत्रीय एकीकरण एक महत्वपूर्ण प्रगति है। दोनों पक्षों के पारस्परिक लाभ के लिए विवादों को शांतिपूर्ण ढंग से निपटाने की संभावना के बारे में निर्णय लेने वालों की अनभिज्ञता के कारण अक्सर दंगा या हिंसा होती है। इस प्रकार यह संभव है कि सामुदायिक विवादों के निपटारे के लिए वैकल्पिक, शांतिपूर्ण तकनीकों को विकसित और संस्थागत बनाकर और राज्यों को उनका उपयोग करने के लिए राजी करके दंगों की रोकथाम में योगदान दे सकते हैं।

इसे राजनीतिक, क्षेत्रीय या राष्ट्रीय सुरक्षा व्यवस्था के रूप में समझा जा सकता है, जिसमें प्रत्येक इकाई यह स्वीकार करती है कि किसी एक की सुरक्षा भी सभी की सामूहिक चिंता है। अतः वे खतरों और शांति के उल्लंघन के प्रति सामूहिक प्रतिक्रिया के लिए प्रतिबद्ध हैं। इस प्रकार, देश में में चल रहे जातीय संघर्ष को देखते हुए यह उद्धरण समकालीन समय के लिए प्रासंगिक है। यह हमें याद दिलाता है कि सच्ची जीत ज्ञान और दूरदर्शिता के साथ संघर्षों से निपटने और हिंसा से बचने के लिए शांतिपूर्ण समाधान खोजने से हासिल की जाती है। इसके अलावा, इसे न केवल हिंसा के लिए बल्कि रोजमर्रा के संघर्षों और चुनौतियों पर भी लागू किया जा सकता है। साथ ही, यह उद्धरण सफलता प्राप्त करने के लिए तैयारी, ज्ञान और दूरदर्शिता के महत्व पर भी जोर देता है। हिंसा के शिकार लोगों को समझाना जरुरी है। बदला लेने की मानसिकता नुक़सान करवाती है, ताकि वो फिर उसी हिंसक दुष्चक्र में न फंस जाएं। कोई शराबी है या ड्रग का आदी है, तो उसकी इलाज करने में मदद की जाती है। फिर उसे रोज़गार दिलाने की कोशिश होती है। तभी कोई भी शख़्स एकदम से बदला हुआ नज़र आ सकता है। लोगों के बर्ताव में बदलाव लाकर हम कई चुनौतियों को जड़ से ख़त्म कर सकते हैं। जैसे साफ़-सफ़ाई की आदत से डायरिया जैसी बीमारी को रोका जा सकता है। ये क़दम तब और असरदार हो जाते हैं, जब एक पीड़ित, दूसरे की मदद करता है। वो अपने ख़ुद के तजुर्बे साझा कर के लोगों का भरोसा जीत सकते हैं। जैसे कोई टीबी-हैजा के मरीज़ रहे लोग इसके शिकार लोगों के बीच काम करें।

शिक्षा बीच में छोड़ने की बढ़ती प्रवृत्ति चिन्ताजनक

शिक्षा

ललित गर्ग

आजादी के अमृतकाल को सार्थक करने में शिक्षा ही सर्वाधिक महत्वपूर्ण हो सकती है। कहा जा सकता है कि शिक्षा ही एक ऐसा हथियार भी है जिससे इंसान न केवल खुद को, बल्कि समाज, राष्ट्र एवं दुनिया को भी बदल सकता है। बात जब नया भारत-सशक्त भारत बनाने की हो रही है तो शिक्षा के प्रति सकारात्मक सोच विकसित करने एवं सर्वाधिक ध्यान देने की जरूरत है। लेकिन चिंता की बात यह है कि सरकारों की इस सकारात्मक सोच के बावजूद हमारी शिक्षा प्रणाली विपरीत संकेत देती रही है। भारत में उच्च शिक्षा एवं स्कूली शिक्षा में छात्र-छात्रों के ड्रॉपआउट्स की संख्या यानी बीच में ही पढ़ाई छोड देने की संख्या बढ़ना न केवल शिक्षा-व्यवस्था पर बल्कि सरकार की शिक्षा नीति एवं व्यवस्था पर एक बड़ा सवाल बनता जा रहा है। संसद में दिये गये एक जबाव के अनुसार देश के नामी उच्च शिक्षण संस्थानों में पिछले पांच साल के दौरान 34 हजार से ज्यादा छात्र बीच में ही पढ़ाई छोड़ गए। दूसरी ओर केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय की ओर से सन् 2022 की बोर्ड परीक्षाओं के विश्लेषण में बताया गया है कि दसवीं और बारहवीं के स्तर पर देश में लाखों बच्चे पढ़ाई छोड़ देते हैं। विश्लेषण के मुताबिक, पिछले साल पैंतीस लाख विद्यार्थी दसवीं के बाद ग्यारहवीं कक्षा में पढ़ने नहीं गए। इनमें से साढ़े सत्ताइस लाख सफल नहीं हुए और साढ़े सात लाख विद्यार्थियों ने परीक्षा नहीं दी। इसी तरह, पिछले साल बारहवीं के बाद 2.34 लाख विद्यार्थियों ने बीच में पढ़ाई छोड़ दी। इनमें से सतहत्तर फीसद ग्यारह राज्यों से थे। यानी करीब अट्ठावन लाख विद्यार्थी दसवीं और बारहवीं में पढ़ाई छोड़ देते हैं तो यह किसी भी सरकार के लिए बेहद चिंता की बात होनी चाहिए और यह समग्र शिक्षा व्यवस्था से लेकर सरकारी कल्याण कार्यक्रमों के जमीनी स्तर पर अमल पर सवालिया निशान है।

बात उच्च शिक्षा की करें तो वैश्विक मापदण्डों पर हमारी शिक्षण संस्थाएं काफी पीछे नजर आती हैं। यह तो तब है जब आजादी के 76 सालों में सरकारों ने शिक्षा के प्रसार की दिशा में काफी प्रयास किये, बहुआयामी योजनाओं को आकार दिया एवं बजट में भी भारी भरकम प्रावधान किये हैं। 34 हजार से ज्यादा बीच में ही पढ़ाई छोड़ देने वाले छात्रों में भी दलित, आदिवासी और पिछड़े वर्ग के विद्यार्थी ज्यादा हैं। ये संस्थान कोई सामान्य सरकारी कॉलेज नहीं बल्कि आइआइटी, एनआइटी और आइआइएसईआर, आइआइएम व केन्द्रीय विश्वविद्यालय और इनके जैसे स्तर के हैं। ऐसे संस्थानों में क्या पढ़ाई का स्तर व माहौल उचित नहीं है? सरकार और देश के शिक्षाविदों को इस तथ्य को लेकर भी चिंता करनी ही होगी कि बीते पांच साल में इन उच्च शिक्षण संस्थानों में दाखिला लेने वाले 92 विद्यार्थियों ने पढ़ाई के बीच में ही आत्महत्या क्यों कर ली? ऐसे ही आईआईटी बुम्बई के फर्स्ट ईयर के छात्र दर्शन सोलंकी ने पिछले दिनों खुदकुशी कर ली, इसके बाद वहां के छात्रों से अधिकारिक तौर पर कहा गया है कि छात्र एक दूसरे से जी (एडवांस) रैंक या गेट स्कोर के बारे में पूछताछ न करें। न ही ऐसा कोई सवाल करें जिससे छात्र की जाति और उससे जुड़े पहलू उजागर होते हो। इस तरह की गाइडलाइन की जरूरत केवल आईआईटी बुम्बई को ही नहीं, बल्कि सभी उच्च शिक्षण संस्थानों को हैं। लेकिन सवाल तो यह भी है कि क्या ऐसे सांकेतिक कदमों से आत्महत्या की बढ़ती संख्या जैसी गंभीर समस्याओं को हल किया जा सकता है। किसी भी देश की शिक्षा व्यवस्था की कामयाबी इसमें है कि शुरुआती से लेकर उच्च स्तर तक की शिक्षा हासिल करने के मामले में एक निरंतरता हो। अगर किसी वजह से आगे की पढ़ाई करने में किसी विद्यार्थी के सामने अड़चनें आ रही हो तो उसे दूर करने के उपाय किये जाएं। लेकिन बीते कई दशकों से यह सवाल लगातार बना हुआ है कि एक बड़ी तादाद में विद्यार्थी स्कूल-कॉलेजों में बीच में ही पढ़ाई छोड़ देते हैं और उनकी आगे की पढ़ाई को पूरा कराने के लिए सरकार की ओर से ठोस उपाय नहीं किए जाते। इस मसले पर सरकार से लेकर शिक्षा पर काम करने वाले संगठनों की अध्ययन रपटों में अनेक बार इस चिंता को रेखांकित किया गया है, लेकिन अब तक इसका कोई सार्थक हल सामने नहीं आ सका है।

तमाम सरकारी प्रयासों एवं योजनाओं के शिक्षा महंगी होती जा रही है, प्रतिस्पर्धा बढ़ती जा रही है, स्तर के स्कूलों एवं कालेजों में प्रवेश असंभव होने से निजी स्कूलों एवं कालेजों में बच्चों को पढ़ाना विवशता बनती जा रही है। कोई परिवार हिम्मत करके निजी स्कूलों एवं कालेजों में प्रवेश दिलाते भी है तो आर्थिक मजबूरी के कारण उन्हें बीच में बच्चों को स्कूल से निकाल लेने को विवश होता पड़ता है। सरकार की बड़ी-बड़ी योजनाओं के बीच छात्रों के स्कूल-कालेज छोड़ने की स्थितियों को गंभीरता से लेना होगा। शिक्षा को पेचिदा बनाने की बजाय सहज, निष्कंटक, कम खर्चीली एवं रोचक बनाना होगा। शिक्षा को रोचक बनाना भी जरूरी है ताकि कुछ बच्चों को स्कूल-कालेज बोरिंग न लगे है, 9वीं और 10वीं कक्षा तक आते-आते कई बच्चों को स्कूल-कालेज बोरिंग लगने लगता है। इस कारण वे स्कूल-कालेज देरी से जाना चाहते हैं, क्लास बंक कर देते हैं और लंच ब्रेक में बैठे रहते हैं। पढ़ाई से लगाव ना होने की वजह से अक्सर छात्र स्कूल-कालेज छोड़ देते हैं। किसी भी वजह से छात्रों का पढ़ाई छोड़ने का मन करना, पैरेंट्स के लिए एक बड़ी परेशानी है, लेकिन यह शिक्षा की एक बड़ी कमी की ओर भी इशारा भी करता है।

बच्चों को स्कूल भेजे जाने का उद्देश्य शिक्षा ग्रहण कर एक अच्छा नागरिक बनना तो है ही, शिक्षा विकोपार्जन एवं उन्नत राष्ट्र-निर्माण में भी प्रमुख भूमिका निभाती है। लेकिन मौजूदा समय में ज्यादातर स्कूल-कालेज प्रबंधन इसे एक व्यवसाय के रूप में देखने लगे हैं, सरकारें भी शिक्षा की जिम्मेदारी से भाग रही है, भारत में शिक्षा का अधिकार कानून लागू होने के बाद ज़मीनी स्तर पर बहुत सारी चीज़ें बदली हैं। मसलन स्कूलों में बच्चों का नामांकन बढ़ा है। हर साल आठवीं पास करने वाले बच्चों की संख्या के आँकड़े तेज़ी से बढ़े हैं। पर इसके साथ ही शिक्षा में गुणवत्ता और स्कूल में बच्चों के ठहराव का सवाल ज्यों का त्यों कायम है। विशेषतः उच्च शिक्षण संस्थानों में छात्रों का बीच में पढ़ाई छोड़ देना, एक गंभीर समस्या बनता जा रहा है। तमाम दूसरे क्षेत्रों में हमारी प्रतिभाओं का दुनिया लोहा मानती है। यह भी सच है कि हमारे इन नामी-गिरामी उच्च शिक्षण संस्थानों में दाखिले भी कड़ी स्पर्धा के बीच होते हैं। इसके बावजूद विद्यार्थी क्यों ऐसे संस्थानों से भी मुंह मोड़ते दिख रहे हैं इस बात पर सरकारों को गहनता से विचार करना होगा। अन्यथा ऐसे संस्थानों से बीच में पढ़ाई छोड़कर जाने का सिलसिला थमने वाला नहीं। देश में शिक्षा के स्तर के सुधार की दिशा में किए जा रहे प्रयासों के बीच इस हकीकत से भी मुंह नहीं मोड़ा जा सकता कि दुनिया के शीर्ष सौ उच्च शिक्षण संस्थानों में भारत से एक भी नाम नहीं है। आज भी सक्षम परिवारों की उच्च शिक्षा के लिए पहली पसंद विदेश के शिक्षण संस्थान बने हुए हैं। संसाधनों की कमी और बेहतर शिक्षकों का अभाव इसकी वजह हो सकती है। लेकिन यह भी सही है कि अफ़सरशाही के रवैये के चलते हमारे बेहतर कहे जाने वाले शिक्षण संस्थानों में भी पढ़ाई का माहौल नहीं बन पाता। सरकारी योजनाओं एवं नीतिगत स्तर पर शिक्षा को उच्च प्राथमिकता मिलती दिखती है, बावजूद इसके छात्रों के बीच में पढ़ाई छोड़ने की प्रवृत्ति नीतिगत स्तर पर नाकामी या फिर उदासीनता का ही सूचक है। यह समझना मुश्किल है कि इतने लंबे वक्त से यह चिंता कायम है फिर क्यों नहीं इस मसले पर किसी हल तक पहुंचना एक ऐसा सवाल है जिस पर व्यापक चिन्तन-मंथन जरूरी है। यह जगजाहिर है कि एक ओर स्कूल-कालेज में शिक्षा पद्धति में तय मानक बहुत सारे विद्यार्थियों के लिए सहजता से ग्राह्य नहीं होते, वहीं पढ़ाई में निरंतरता नहीं रहने के पीछे पठन-पाठन के स्वरूप से लेकर गरीबी, पारिवारिक, सामाजिक और अन्य कई कारकों से जुड़ा हुआ है और इसके समाधान के लिए सभी बिंदुओं को एक सूत्र में रखकर ही देखने की जरूरत होगी।

समान कानून पर थम गई चर्चा

अजीत द्विवेदी

राष्ट्रीय विधि आयोग को समान नागरिक संहिता यानी यूसीसी पर 80 लाख से एक करोड़ के बीच सुझाव मिले हैं। आयोग ने 14 जून को लोगों से अपील की थी कि वे बताएं कि देश में समान नागरिक संहिता लागू होनी चाहिए या नहीं। अगर होनी चाहिए तो क्यों और नहीं होनी चाहिए तो उसके पीछे क्या तर्क है। पहले एक महीने का समय दिया गया था लेकिन बाद में इसे दो हफ्ते और बढ़ा दिया गया। इस बीच 27 जून को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मध्य प्रदेश में भाजपा के चुनाव अभियान का आगाज करते हुए समान नागरिक संहिता पर बड़ा बयान दिया। उन्होंने कहा, 'यूनिफॉर्म सिविल कोड के नाम पर लोगों को भड़काया जा रहा है। एक घर दो कानून से घर नहीं चल पाएगा। भारत के संविधान में भी नागरिक के समान अधिकार की बात की गई है'। प्रधानमंत्री के इस बयान के बाद पूरे देश में समान कानून पर चर्चा शुरू हो गई। चारों तरफ इस पर सम्मेलन और सेमिनार होने लगे। संसदीय समिति की बैठक भी हुई और तमाम सामाजिक व धार्मिक संगठनों ने अपनी राय विधि आयोग को भेजी। तब ऐसा लग रहा था कि सरकार संसद के मानसून सत्र में इस बिल को पेश कर सकती है। हालांकि उस समय तक विधि आयोग का काम पूरा नहीं हुआ था और न उसने कोई सिफारिश की थी। यहां तक कि सरकार ने बिल का मसौदा भी तैयार नहीं किया था। लेकिन तब सूत्रों के हवाले से मीडिया में ऐसी खबर आई थी कि उत्तराखंड सरकार की ओर से तैयार कराए जा रहे बिल के मसौदे को ही भारत सरकार भी अपना सकती है। उत्तराखंड सरकार के लिए समान नागरिक संहिता का मसौदा सुप्रीम कोर्ट की रिटायर जज जस्टिस रंजना प्रकाश देसाई की अध्यक्षता वाली कमेटी कर रही है। पिछले महीने इस कमेटी के सदस्यों ने विधि आयोग से भी मुलाकात की थी। तब कहा गया था कि 15 जुलाई तक जस्टिस रंजना प्रकाश देसाई कमेटी अपनी रिपोर्ट राज्य सरकार को सौंप देगी। हैरानी की बात है कि अब जस्टिस रंजना प्रकाश देसाई कमेटी की ओर से बनाए जा रहे मसौदे की भी कोई चर्चा नहीं हो रही है। कमेटी ने अभी तक रिपोर्ट राज्य सरकार को नहीं सौंपी। सो, रेफरेंस के लिए भी किसी के पास कोई मसौदा नहीं है। विधि आयोग को जो एक करोड़ सुझाव मिले हैं उनकी छंटनी और विषय के हिसाब से ब्योरेवार उनको व्यवस्थित करना लंबा और समय खाने वाला काम है। इसी तरह 27 जून के बाद प्रधानमंत्री मोदी ने एक बार भी समान नागरिक संहिता के बारे में कोई बयान नहीं दिया है। कोई और मंत्री या भाजपा का नेता भी इस बारे में नहीं बोल रहा है और इस पर होने वाले सेमिनार, सम्मेलन आदि भी अचानक बंद हो गए हैं। सवाल है कि ऐसा क्यों हुआ है? क्या इस कानून को लागू करने के रास्ते में आने वाली बाधाओं या विरोधाभासों की वजह इसको स्थगित कर दिया गया है या सरकार की कोई मंशा थी, जो इतनी चर्चा से ही पूरी हो गई है और उसके बाद उसे स्थगित कर दिया गया है?

असल में समान नागरिक संहिता के बारे में यह आम धारणा है कि इसका सबसे ज्यादा विरोध मुस्लिम समुदाय करेगा। आजादी के बाद से भारतीय जनसंघ और राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ ने और 1980 के बाद से भाजपा ने यह धारणा बनाई है कि कांग्रेस की सरकारों ने अल्पसंख्यकों का तुष्टिकरण करने के लिए इसे लागू नहीं किया, जबकि संविधान के नीति निर्देशक तत्वों में इसको शामिल किया गया है। लेकिन हकीकत इस प्रचारित धारणा से अलग है। यह बात पहली बार कानून व न्याय मामले की संसदीय समिति की राय से जाहिर हुई। भाजपा सांसद सुशील मोदी की अध्यक्षता वाली संसदीय समिति ने तीन जुलाई को अपनी बैठक के बाद कहा कि देश के आदिवासियों को समान नागरिक संहिता से रियायत मिलनी चाहिए। यानी उनको इसके दायरे से बाहर रखना चाहिए। अब सोचें, जब यह धारणा बनाई गई है कि मुस्लिम समुदाय को इससे सबसे ज्यादा दिक्कत होगी तो फिर आदिवासियों को इससे बाहर रखने की बात कहां से आई? जाहिर है आदिवासी समुदाय को भी इससे दिक्कत है।

इसके बाद सिख समुदाय ने ऐसे किसी भी प्रयास का विरोध करने का ऐलान किया। सिखों की सबसे बड़ी और पवित्र संस्था शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने कहा कि समान नागरिक संहिता सिख संस्कृति, उसकी परंपरा और उसके धार्मिक रीति-रिवाज को प्रभावित करेगी। सिखों के बाद ईसाई समुदाय ने इसका विरोध किया और विरोध की सबसे तीखी आवाज पूर्वोत्तर से आई। वहां मेघालय, नगालैंड, मिजोरम आदि राज्यों में भाजपा की सहयोगी पार्टियों ने कहा कि उनको समान नागरिक संहिता कबूल नहीं है। बाद में ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड ने भी विधि आयोग को भेजी गई अपनी सलाह में इस तरह के किसी प्रयास का विरोध किया। सबसे दिलचस्प बात यह है कि कट्टरपंथी हिंदू बौद्धिकों ने भी इसका विरोध किया।

एक नजर

दो दिनों से बीमार मवेशी का विहिप ने इलाज कराकर छोड़ा गौठान

गीदम, 3 अगस्त । गीदम नगर के मुख्य सड़क किनारे नपं कार्यालय के सामने पिछले दो दिन से बीमार अवस्था मे पड़े एक गौवंश मवेशी का विहिप व नपं की टीम ने बुधवार को इलाज कराकर गौठान में सुरक्षित छोड़ा है । मिली जानकारी अनुसार मवेशी दो दिन से सड़क किनारे पड़ा था । जब आज देखा गया मवेशी बीमार अवस्था मे है तब सूचना के बाद विश्व हिन्दू परिषद की टीम ने नपं के सहयोग से मवेशी को अस्पताल पहुचाया । जहा मवेशी का इलाज कराया गया। मवेशी के इलाज के बाद उसे नपं प्रशासन के काऊ कैचर के माध्यम से गोठान में सुरक्षित रखा गया है । फिलहाल पशु मालिक कौन है इसकी जानकारी अभी नही मिली है। बता दे कि इन दिनों सड़क पर लगातार पशुओं का जमावड़ा बना होता है । ऐसे में सड़क हादसे का भी खतरा बना रहता है। गोवंश मवेशी को ईलाज के लिए अस्पताल ले जाने के दौरान विश्व हिंदू परिषद नगर अध्यक्ष राजेश सुराना , अनीश जार्ज, अजय राजपूत , शिवम गुप्ता , कृष्णा शर्मा , राहुल सोनवानी , व्यापारी संघ अध्यक्ष रजनीश सुराना , सचिव अमित गुप्ता , सुनील गुप्ता समेत अन्य मौजूद रहे ।

कलेक्टर-एसपी ने किया माकड़ी पुल में निर्माणाधीन डायवर्सन रोड का निरीक्षण

कांकेर 3 अगस्त । कलेक्टर डॉ. प्रियंका शुक्ला एवं पुलिस अधीक्षक दिव्यांग पटेल आज बुधवार को राष्ट्रीय राजमार्ग में क्षतिग्रस्त माकड़ी पुल पहुंचकर नदी में बनाये जा रहे डायवर्सन रोड का जायजा लिया तथा राष्ट्रीय राजमार्ग विकास प्राधिकरण इंजीनियर को निर्देषित करते हुए कहा कि 24 घंटे निगरानी बरती जाये, इसके लिए कर्मचारियों की ड्यूटी भी लगाई जावे। डायवर्सन मार्ग को गुणवत्ता के साथ शीघ्र पूरा करने के निर्देष भी दिये गये। निरीक्षण के दौरान जिला पंचायत के सीईओ सुमीत अग्रवाल भी मौजूद थे।

वृद्धाश्रम पहुंचकर कलेक्टर-एसपी ने किया वरिष्ठ नागरिकों का सम्मान

कांकेर 3 अगस्त । कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी डॉ. प्रियंका शुक्ला, पुलिस अधीक्षक दिव्यांग पटेल और जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी सुमीत अग्रवाल विशेष संक्षिप्त मतदाता पुनरीक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत आज वृद्धाश्रम नांदनमारा पहुंचकर वरिष्ठ नागरिकों का सम्मान किया तथा उन्हें विधानसभा निर्वाचन में मतदान करने एवं अन्य मतदाताओं को भी मतदान करने के लिए जागरूक करने हेतु प्रेरित किया। इस दौरान संयुक्त कलेक्टर आस्था राजपूत, डिप्टी कलेक्टर राहुल रजक एवं समाज कल्याण विभाग के उप संचालक सिनीवाली गोयल भी मौजूद थीं। उल्लेखनीय है कि वृद्धाश्रम नांदनमारा में वर्तमान में 12 वरिष्ठ नागरिक निवास कर रहीं है, जिन्हें शासन के नियमानुसार आवास, भोजन, वस्त्र एवं समस्त दैनिक उपयोग की सामग्री निशुल्क उपलब्ध कराया जा रहा है।

मेन गेट तोड़कर घुसे अंदर, जमकर की नारेबाजी, उपाध्यक्ष का किया पुतला दहन, नन्हे भगाओ दंतेवाड़ा बचाओ के लगाए नारे

युकां व महिला कांग्रेस ने घेरा नगर पालिका दफ्तर

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

दंतेवाड़ा 3 अगस्त। नगर पालिका परिषद दंतेवाड़ा में व्याप्त भ्रष्टाचार को लेकर युवा कांग्रेस द्वारा आज नगर पालिका का घेराव कर जोरदार हंगामा किया। सैकड़ो की संख्या में जिला कांग्रेस कमेटी, महिला कांग्रेस, युवा कांग्रेस के कार्यकर्त्ता कांग्रेस भवन से पैदल मार्च करते हुए नगर पालिका पहुँचे जहाँ, गेट तोड़कर अंदर घुसे वहीं कुछ कार्यकर्त्ता नगर पालिका के कार्यालय में प्रवेश करने में भी सफल हुए। इस दौरान उपाध्यक्ष धीरेंद्र प्रताप सिंह का पुतला भी दहन किया। पूरे रास्ते कांग्रेसी पायल गुप्ता कमीशनखोरी बंद करो, नन्हे को भगाओ दंतेवाड़ा बचाओ के नारे लगाते रहे। घेराव कार्यक्रम की जानकारी देते हुए जिला पंचायत अध्यक्ष तुलिका कर्मा ने बताया कि नगर पालिका दंतेवाड़ा पूरी तरह भ्रस्टाचार का गढ़ बन चुका है। अध्यक्ष-उपाध्यक्ष सिर्फ अपनी जेब भरने में लगे हैं। उन्होंने कहा कि इन पांच सालों में वार्डो में कुछ कार्य नहीं हुए और जो भी कार्य हुए वह भी गुणवत्ताहीन है। तुलिका ने कहा कि हमारी मांग है कि वार्डो में व्याप्त सभी समस्याओं का निराकरण हो। खराब स्ट्रीट लाइट को जल्द ठीक किया जाए साथ ही पालिका के माध्यम से हुए निर्माण कार्यों व निविदा घोटालों की जांच कराई जाए। युवा कांग्रेस के जिलाध्यक्ष गणेश दुर्गा ने बताया कि उपाध्यक्ष द्वारा मोटी रकम लेकर चहेते ठेकेदारों को जो काम दिया गया है उसकी जांच कराई जाए। अध्यक्ष-निधि में हुए घोटाले की जांच कराई जाए। गणेश ने आगे कहा कि शहर की सुलभ शौचालय पूरी तरह जर्जर हो चुकी है। बाहर से आने वाले पर्यटकों को लगातार भटक रहे हैं। युवा जिलाध्यक्ष ने कहा कि 14वें व 15वें वित्त से खरीदी गई मशीनों का क्या उपयोग हो रहा है उसकी भी जानकारी सार्वजनिक किया जाना चाहिए। नगर पालिका द्वारा सार्वजनिक बोरिंग में आईआरपी लगवाया जाए ताकि आम जनों को इस सुविधा का लाभ मिल सकें। नपा की भूमि पर बन रहे अवैध दुकान निर्माण पर तत्काल रोक लगना चाहिए। इस दौरान वरिष्ठ नेता छविंद्र कर्मा, जिला पंचायत सदस्य सुलोचना कर्मा, शहर अध्यक्ष इंदिरा शर्मा, विमल सलाम, प्रवीण राणा, गीतांजली कुशवं, किरण जायसवाल, बी. सुशीला, साक्षी सुराणा, स्नेहा पिल्ले, गीता साधक, राधा साहू, राधा नाग, सीमा ठाकुर, संजय विश्वकर्मा, जोगराज बुरड़, चिंटू, गायेंद्र सिंह, मुन्ना राम वेक, राहुल महाजन, शैलेन्द्र यादव, अरुण सोनानी, सोमआतरम, वीरेंद्र कवासी, अनिल गावड़े, तरुण मंडावी समेत बड़ी संख्या कांग्रेसी कार्यकर्ता मौजूद थे।

समस्या को लेकर दंतेवाड़ा में किसान संघ ने कलेक्टर से की मुलाकात

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

दंतेवाडा, 3 अगस्त । भारतीय किसान संघ जिला दंतेवाड़ा द्वारा जिला कलेक्टर से दन्तेवाड़ा में मुलाकात कर किसानो से सम्बंधित विभिन्न समस्याओं के सबन्ध में ज्ञापन सौपा गया है । ज्ञापन सौंपने के पश्चात किसान संघ के पदाधिकारियों ने कहा कि जिले मे संचालित डी एम एफ मद से ह्यो रहे बोर एवं बाड़ी किसानों को दिये जा रहे वस्तुओं मे भारी गड़बड़ी किया जा रहा है जो की गुणवता विहीन है । लोकल एवं सस्ती मोटर एवं पाईप डाली जा रही है तथा पाईप की लंबाई बमुश्किल 80 से 100 फीट तक प्रदाय किया जा रहा है अधिकांश किसानों से 26100 रुपये नगद लेने के बाद भी खनन नहीं हो पाया है । भारतीय किसान संघ के जिलाध्यक्ष मधुसुदन ठाकुर ने कहा कि पूनामाडाकाल दंतेवाड़ा योजना भी महज ढकोसला था और अभी संचालित योजना भी भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ रहा है जो की किसानों के विकास पर सीधा आघात है , जो बेहद चिंतनीय है । संघ के जिला उपाध्यक्ष कमलोचन सेठिया ने कहा की किसानों की जनकल्याणकारी योजना बनी थी जो अभी अधिकारी एवं ठेकेदारों का भ्रष्टाचार करने का योजना बन गया है । प्रतिनिधि मंडल मे सुधराम भास्कर,शैलेश अटामी,लुदरू कश्यप, जग्गू अटामी, सुखराम नाग, जयराम कश्यप, बलिराम कारटाम, शकुंतला भास्कर, चंपा अटामी, बलदेव कश्यप, मारो कश्यप, विनोद नाग, मसिराम मरकाम, मुन्ना कश्यप चैत राम भास्कर, दिनेश अटामी सहित सभी ब्लॉक से आये कृषक मौजूद रहे।

गीदम के सांस्कृतिक भवन में पीसीसी मेम्बर छविंद्र कर्मा ने ब्लाक कांग्रेस कमेटी की ली बैठक

गीदम, 3 अगस्त। पीसीसी मेम्बर छविंद्र कर्मा ने आगामी विधानसभा चुनाव के मद्देनजर बुधवार को गीदम ब्लाक कांग्रेस कमेटी की बैठक सांस्कृतिक भवन में ली। बैठक में छग मदरसा बोर्ड के सदस्य शकील रिज़वी, जिला उपाध्यक्ष मंगल यादव, महामंत्री प्रवीण राणा, प्रवक्ता विमल सलाम, ब्लाक अध्यक्ष कमलोचन सेठिया, गीदम नप अध्यक्ष साक्षी शिवहरे सुराना मौजूद थे। बैठक में छविंद्र कर्मा ने कार्यकर्ताओं की पंचायतों व पोलिंग बूथों में समस्याओं का निराकरण करते विभिन्न मुद्दों तथा विस चुनाव की रणनीति को लेकर चर्चा की। वहीं छविंद्र कर्मा ने कार्यकर्ताओं के बीच जोश भरते आगामी विधानसभा चुनाव के लिए अभी से तैयार हो जाने कहा। छविंद्र कर्मा ने सभी कार्यकर्ताओं को भूपेश सरकार की विभिन्न योजनाओं को जन-जन तक पहुंचाने प्रोत्साहित करते कहा कि प्रदेश की भूपेश सरकार आज हर वर्ग के लिए विभिन्न योजनाएं चला रही है। उन्ही योजनाओं को लेकर हमे अंतिम छोर के व्यक्ति तक जाना है। बैठक में पदाधिकारियों ने अपने क्षेत्रों की समस्यों को रखा। इस दौरान वरिष्ठ कांग्रेसी बोगाराम ताती, बीजू कश्यप, संतु कुंजाम, रविश सुराना, रामनाथ राठौर, रजत दहिया, आसिफ रजा व अन्य मौजूद थे।

सर्व आदिवासी समाज व अजजा शासेवि संघ ने छग राज्य अजजा आयोग के अध्यक्ष से की भेंट

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

दंतेवाडा, 3 अगस्त। सर्व आदिवासी समाज व छत्तीसगढ अनूसूचित जनजाति शासकीय सेवक विकास संघ जिला ईकाई दंतेवाड़ा ने बुधवार को सर्किट हाउस दंतेवाड़ा में विभिन्न मुद्दों को लेकर छत्तीसगढ राज्य अनुसुचित जनजाति आयोग के अध्यक्ष भानुप्रताप सिंह से भेंटवार्ता की । इस दौरान विधायक देवती कर्मा भी मौजूद रही । भेंटवार्ता में समाज प्रमुखों ने छत्तीसगढ के विभिन्न विभागों में बैकलांग की भर्ती चयन प्रक्रिया शीघ्र प्रारंभ करने एवं पदोन्नति मे आरक्षण बैकलॉग रोस्टर का पालन करते हुए नियुक्ति किए जाने और एमबीबीएस वीडियस एवं उच्च शिक्षण संस्थाओं में प्रवेश वर्ष 2023 - 24 मे अनुसूचित जनजाति वर्ग के अभ्यर्थियों को प्रदेश स्तर के आरक्षण रोस्टर 32 परसेंट के अनुसार प्रवेश देने पर विस्तृत चर्चा किया गया। छत्तीसगढ़ राज्य के समस्त विभागों में फर्जी जाति के कर्मचारी - अधिकारियों को तत्काल जांच कर सेवा से बर्खास्त किए जाने तथा पांचवी अनुसूची क्षेत्र जिला दंतेवाड़ा के ब्लॉक एवं जिला स्तरीय संस्थाओं ,कार्यालयों में अनुसूचित जनजाति वर्ग के अधिकारियों की पदस्थापना किए जाने पर विचार विमर्श किया गया है।

लखेश्वर बघेल ने राष्ट्रीय अध्यक्ष खड़गे से की सौजन्य मुलाकात

जगदलपुर, 3 अगस्त। छत्तीसगढ़ प्रदेश अध्यक्ष एवं बस्तर सांसद श्री दीपक बैज एवं बविप्रा अध्यक्ष एवं बस्तर विधायक श्री लखेश्वर बघेल ने लोकसभा सचेतक श्री के. सुरेश जी से मिलकर सौजन्य भेंट कियाराज्यसभा सांसद श्रीमती फूलोदेवी नेताम जी एवं बविप्रा अध्यक्ष एवं बस्तर विधायक श्री लखेश्वर बघेल ने नवनियुक्त प्रदेश अध्यक्ष श्री दीपक बैज से भेंट होकर बधाई एवं शुभकामनायें दिए। छत्तीसगढ़ प्रदेश अध्यक्ष एवं बस्तर सांसद श्री दीपक बैज एवं बविप्रा अध्यक्ष एवं बस्तर विधायक श्री लखेश्वर बघेल ने कांग्रेस के वरिष्ठजनों से मिलकर बस्तर की ज्वलंत मुद्दो पर चर्चा कर बस्तर आने का आंमत्रित किया हैं साथ ही दोनों नेताओं ने निमंत्रण स्वीकार कर बस्तर आने की आश्वासन दिया हैंजिसमें मौजूद रहे छत्तीसगढ़ प्रदेश अध्यक्ष एवं बस्तर सांसद श्री दीपक बैज जी, राज्यसभा सांसद श्रीमती फूलोदेवी नेताम जी,बविप्रा अध्यक्ष एवं बस्तर विधायक श्री लखेश्वर बघेल जी, जेल संदर्शक सदस्य श्री दिनेश यदु जी वरिष्ठ श्री अरुण भद्रा जी,एवं जनप्रतिनिधिगण उपस्थित रहे

कार्यकर्ता ही भाजपा की सबसे बड़ी पूंजी :मनोज जैन

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

नारायणपुर , 3 अगस्त। आज जिला भाजपा कार्यालय मे भाजपा शहर मंडल व ग्रामीण मंडल की संयुक्त बैठक विधानसभा प्रभारी मनोज जैन, भाजपा जिलाध्यक्ष रुपसाय सलाम, पूर्व भाजपा जिलाध्यक्ष बृजमोहन देवांगन व विधानसभा संयोजक रतन दुबे के आतिथ्य मे संपन्न हुई। इस दौरान विधानसभा प्रभारी मनोज जैन ने कहा आप सभी कार्यकर्त्ता ही भाजपा की सबसे बड़ी पूंजी है।यह जिला देव दुर्लभ कार्यकर्त्ताओ के परिश्रम से संगठनात्मक रूप से काफ़ी मजबूत है। आप सभी रचनात्मक व सामाजिक कार्यक्रमो के माध्यम से जुड़कर काम करते हुए अंतिम व्यक्ति तक पहुंचने का लक्ष्य रखे। वही जैन ने पन्ना प्रभारियों की सूची भी जल्द से जल्द बनाने की बात कहते हुए आगामी होने वाले कार्यक्रमओ की विस्तार से जानकारी दी।बैठक को भाजपा जिलाध्यक्ष रुपसाय सलाम, बृजमोहन देवांगन व रतन दुबे ने भी सम्बोधित करते हुए केंद्र की मोदी सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं का प्रचार प्रसार करते हुए अंतिम व्यक्ति तक लाभ मिले इस दिशा मे सभी को कार्य करना है वही प्रदेश की भूपेश सरकार की विफलताओ को जन जन तक पहुंचाने की बात कही।बैठक का सफल संचालन गोपाल बघेल व आभार जैकी कश्यप ने किया। इस अवसर पर भाजपा जिला महामंत्री संजय नंदी,विधानसभा विस्तारक विरेश मिश्रा,मंडल अध्यक्षद्वय संतोष सुराना, संतनाथ उसेंडी, सुदीप झा, अख्तर अली, मंगडू नुरेटी, शांतु नाग, रामप्रसाद कुमेटी, सुधांशु मंडल, गिरीश जैन, प्रेमनाथ उसेंडी, सोमजी कावड़े,मो. फिरोज, अनिल पटेल, गोविन्द राठौर,प्रभा महंत, महेश्वरी कवाची, सुमित्रा नुरेटी सहित अन्य भाजपा पदाधिकारी व कार्यकर्त्ता उपस्थित थे।

जिले में कुल 254 मतदान केन्द्र, कोन्टा विधानसभा में दो नए मतदान केन्द्र

सुकमा, 3 अगस्त । भारत निर्वाचन आयोग नई दिल्ली द्वारा चलाये जा रहे विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण कार्यक्रम 2023 के तहत मतदान केन्द्रों के नये मतदान केन्द्र बनाने , विलोपित करने एवम् भवन परिवर्तन के युक्तियुक्तकरण के तहत् जिला सुकमा के अंतर्गत विधानसभा कोन्टा में 02 नये मतदान केन्द्र बनाये गये हैं। साथ ही 14 भवन परिवर्तन एवं 6 मतदान केन्द्रों का नाम परिवर्तन किया गया है। मतदान केन्द्रों की सूची का अंतिम प्रकाशन 01 अगस्त 2023 दिन मंगलवार को किया गया।पूर्व में जिले में विधानसभा क्षेत्र कोन्टा में कुल 231 मतदान केन्द्र, विधानसभा क्षेत्र जगदलपुर में 5 व विधानसभा क्षेत्र चित्रकोट में कुल 16 मतदान केन्द्र इस प्रकार कुल-252 मतदान केन्द्र थे, जो कि अब अंतिम प्रकाशन उपरांत, विधानसभा कोन्टा में कुल 233 मतदान केन्द्र, विधानसभा जगदलपुर में 5 व विधानसभा चित्रकोट में कुल 16 इस प्रकार कुल 254 मतदान केन्द्र हो गये है।

आवार पशुओं के संबंध में जन-जागरूकता रैली का आयोजन

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

सुकमा, 3 अगस्त। कलेक्टर श्री हरिस. एस के निर्देशन में पशुधन विकास विभाग के द्वारा मंगलवार को नगर पंचायत दोरनापाल मे डॉ. एस. जहीरुद्दीन, उपसंचालक के नेतृत्व मे विभागीय मैदानी अमलों एवं मुख्य नगरपालिका अधिकारी श्री गोखले सहःकर्मचारियों के साथ मुख्य सड़को प्रमुख चौक-चौराहों मे आवारा घूमन्तु पशुओं के जमावड़ा से रात्रि मे सड़क हादसों की आशंका से जनहानि वह पशुहानि की क्षति से तथा खेतों में खरीफ फसलों की चराई से कृषकों को होने वाली नुकसान को कम करने मुख्य सड़क मार्गो एवं वार्डो के चौक-चौराहों मे जन-जागरूकता रैली निकालकर ग्रामीणों को पशुओं को खुले मे ना छोड़कर घरों, पशुबाड़ा अथवा नजदीकी गौठान मे रखने मुनादी कर पशुपालकों को समझाइश दी गई। नगरीय निकाय दोरनापाल में एनएच 30 के सड़को एवं मुख्यमार्गो में विचरण करने वाले पशुओं पर अंकुश लगाने नगर पंचायत कर्मियों के सहयोग से पशु चिकित्सा टीम दोरनापाल एवं सुकमा के द्वारा स्वास्थ्य जाँच, उपचार एवं वर्षाजनीत गलघोटू व एक टंगिया रोगों के विरुद्ध प्रतिबंधात्मक टीके से टीकाकरण किया गया। तथा पशुओं के पहचान हेतु कानों मे बारह नंबरों वाला टैग के साथ सड़क हादसों पर काबू पाने गले व सींगो मे रेडियम पट्टी लगाया जा रहा है। रोका-छेका अभियान से पकड़े गए आवारा पशुओं को काउ कैचर वाहन से शहरी गौठान मे उचित प्रबंधन कर सुरक्षित रखा जा रहा है।

फर्जी जाति प्रमाण पत्र वाले कर्मियों की जाएगी नौकरी

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

सुकमा, 3 अगस्त । फर्जी जाति प्रमाण पत्र के आधार पर सरकारी नौकरी करने वाले कोंटा क्षेत्र के 29 कर्मचारियों पर नौकरी गवाने का खतरा मंडरा रहा है। इन कर्मियों को सहायक आयुक्त कार्यालय में दस्तावेजों के साथ तलब किया गया है। इनके जाति प्रमाण पत्रों की जांच की जाएगी। फर्जी प्रमाण का खेल एसडीएम कार्यालय में लंबे समय से चल रहा था। इस मामले में एक लिपिक का नाम सामने आ रहा है। इस मामले की जांच नहीं होने पर कोंटा निवासी सबलम राजाराव ने राष्ट्रीय अजा आयोग को शिकायत पत्र भेजा था। उन्होंने निष्पक्ष जांच की मांग की थी। आयोग ने इसे संज्ञान में लेते हुए अनुसंधान अधिकारी एचआर मीणा वने 3 अप्रैल 2023 को दंतेवाड़ा कलेक्टर को जांच र 15 दिवस में रिपोर्ट देने कहा था। चार माह बाद भी जांच नहीं की जा सकी। जबकि सन् 2011 में ही फर्जी जाति प्रमाण पत्र का खुलसा हो गया था। कुटमा समाज कोंटा के ब्लाक अध्यक्ष गणेश मंडावी ने मुख्यमंत्री व उपमुख्यमंत्री से जांच की मांग तकी थी। बताया जाता है कि आदिवासियों के लिए आरक्षित नौकरियों पर 29 कर्मचारियों ने फर्जी कब्जा कर रखा है। इस में स्वास्थ्य, शिक्षा व पुलिस विभाग की नौकरियां शामिल है। इस मामले में कोंटा क्षेत्र सबसे आगे है। सन् 2010-11 में तत्कालीन जिला पंचायत सीईओ ने जांच उपरांत आधा दर्जन कर्मियों को बर्खास्त कर दिया था। बाद में जुगाड़ जमा कर ये कर्मी नौकरी पर वापस आ गए। ऐसा बताया जा रहा है कि एसडीएम का रीडर, पार्षद, शिक्षक व भृत्य जांच के दायरे में है। विकास विभाग के सहायक आयुक्त गणेश सोरी ने बताया कि आयोग को जवाब भेजा जा चुका है। मामले की जांच जारी है। 35 कर्मचारियों के दस्तावेजों की जांच की जा रही है। इस माह के अंत तक कार्रवाई संभव है।

सायकल रैली निकालकर मतदाता जागरूकता का संदेश

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

सुकमा, 3 अगस्त । कलेक्टर श्री हरिस एस. सहित स्कूली बच्चों ने सायकल रैली निकालकर आमजनों को मतदाता जागरूकता का संदेश दिया। आज जिले में सुबह से ही लगातार हो रही रिमझिम बारिश के बीच यह रैली आईएमएसटी स्कूल(गादीरास चौक) से प्रारंभ होकर बस स्टैड होते हुए मलकानगिरी चौक, पुराना कलेक्ट्रेट भवन, फॉरेस्ट कॉलोनी रोड होते हुए मिनी स्टेडियम सुकमा में समापन हुआ।

रैली में हायर सेकंडरी स्कूल सुकमा, स्वामी आत्मानंद अंग्रेजी माध्यम स्कूल पावरास, डीएव्ही स्कूल सुकमा, आईएमएसटी स्कूल सुकमा, मदर टेरेसा सुकमा, पोटा केबिन सुकमा, हाई स्कूल मुरतोंडा, पोटा केबिन मूरतोंडा, कन्या हायर सेकंडरी स्कूल सुकमा, आरएमएसए बालिका हॉस्टल सुकमा एवं अन्य स्कूलों के विद्यार्थी शामिल थे। रैली का मुख्य उद्देश्य स्वीप कार्यक्रम के तहत 18 वर्ष पूर्ण कर चुके युवाओं को जागरूक करने के साथ ही अन्य लोगों को भी इसकी जानकारी देना था। इस दौरान सायकल और हाथों में बैनर पोस्टर लेकर नारों की गूंज के साथ छात्र-छात्राओं अधिकारियों एवं शिक्षक-शिक्षिकाओं ने आम नागरिकों मतदाता जागरूकता का संदेश देकर मतदान करने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम में भावी मतदाताओं को ईपिक कार्ड भी प्रदान किया गया।कलेक्टर ने विद्यार्थियों को संबोधित करने हुए कहा कि आप सब देश के भावी मतदाता है। 18 वर्ष की आयु पूर्ण करते ही अपना नाम मतदाता सूची में अवश्य जुड़ाये और अन्य लोगों को भी इसकी जानकारी जरूर दें। साथ ही स्कूली बच्चों को बताया कि लोकतंत्र के निर्माण में मतदान का बहुत महत्व है। मतदाताओं को अपने अधिकार का प्रयोग अवश्य करना चाहिए। उन्होंने आगे कहा कि 01 अक्टूबर 2023 की स्थिति में 18 वर्ष पूर्ण कर रहे सभी युवा, अन्य मतदाताओं का नाम मतदाता सूची में जोड़ने, हटाने, संधोधन के लिए मतदान केंद्र स्तर पर विशेष शिविरों का आयोजन 12 से 13 अगस्त, 19 से 20 अगस्त को किया जाएगा। जिसमें मतदाता अपने निकटतम पंजीयन केंद्र में नाम, फोटो, पता परिवर्तन करा सकते है। रैली के सफल आयोजन में भारत स्काउट व गाइड के स्काउटर एवं गाइडर एवं पीटीआई का सहयोग रहा।इस दौरान सीईओ जिला पंचायत श्री डीएन कश्यप, उप जिला निर्वाचन अधिकारी श्री प्रवेश

एक नजर

कालेज में मनाई गई रविशंकर शुक्ल की जयंती

महासमुंद। शासकीय महाप्रभु वल्लभाचार्य स्नातकोत्तर महाविद्यालय के राजनीति विज्ञान विभाग द्वारा पंडित रविशंकर शुक्ल जयंती मनाई गई। महाविद्यालय के प्रभारी प्राचार्य डॉ. रीता पांडे, विभागाध्यक्ष राजनीति विज्ञान विभाग डॉक्टर मालती तिवारी, डॉक्टर दुर्गावती भारतीय विभाग अध्यक्ष हिंदी, डॉ. नीलम अग्रवाल विभागाध्यक्ष अर्थशास्त्र, अजय कुमार राजा नोडल स्वामी आत्मा नंद इंगलिश मिडियम महाविद्यालय, सीमा रानी प्रधान, केशर चंद्र बनपाल, आशुतोष पुरी गोस्वामी, मनीषा बेहरा, नम्रता तंबोली, विजय कुमार मिर्चे, एमए राजनीति विज्ञान प्रथम एवं तृतीय सेमेस्टर के छात्र-छात्राएं मौजूद रहे।सर्वप्रथम पंडित रविशंकर शुक्ला के छायाचित्र पर पूजन कर कार्यक्रम की विधिवत शुभारंभ किया गया। तत्पश्चात मुख्य अतिथि की आसंदी से संबोधित करते हुए डॉक्टर रीता पांडे ने शुक्ल के राजनीतिक जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि किस प्रकार स्वाधीनता आंदोलन में बढ़कर हिस्सा लिया। और राष्ट्रीय आंदोलन को छत्तीसगढ़ में जीवंत किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे डॉक्टर मालती तिवारी ने पंडित रविशंकर शुक्ल के संक्षिप्त जीवन परिचय बताते हुए बताया कि 2 अगस्त 1877 को मध्यप्रदेश के सागर में शुक्ल का जन्म हुआ। वे वरिष्ठ कांग्रेसी नेता, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी एवं 1 नवम्बर 1956 में अपने अस्तित्व में आए ।

तत्कालीन डीएमसी श्याम चंद्राकर पर हो सकती है बड़ी कार्रवाई

खेलगढ़िया मद में भ्रष्टाचार के आरोपी को बना दिया खेल अधिकारी, कलेक्टर से जांच रिपोर्ट मांगी

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

राजिम,3 अगस्त। गरियाबंद जिले मे समग्र शिक्षा विभाग के तत्कालीन जिला परियोजना समन्वयक श्याम चंद्राकर पर खेलगढ़िया मद की राशि से स्कूलों में टीवी खरीदने और जम कर अनियमिता बरत कर भ्रष्टाचार करने के आरोप लगे थे जिसकी जाँच कलेक्टर ने जाँच समिति बनाई थी जिसमें जिला स्तरीय अधिकारी शामिल रहे अपर कलेक्टर गरियाबंद सहित समिति के सदस्यों ने जाँच में तत्कालीन डी एम सी श्याम चंद्राकर को दोषी मानते हुये कलेक्टर को जाँच रिपोर्ट सौंपी थी ।तत्कालीन कलेक्टर गरियाबंद नम्रता गांधी ने जाँच में दोषी पाए जाने पर कार्यवाही हेतु संचालक लोक शिक्षण जो नियोक्ता है को भेजी कार्यवाही लंबित रहीं बल्कि कलेक्टर प्रभात मलिक ने श्याम चंद्राकर के विरूध्द कार्यवाही हेतु सचिव को पत्र लिखा फ़िर भी आज पर्यन्त तक दोषी पर कार्यवाही ना कर उसे जिला में खेल अधिकारी के रूप में नवाज दिया गया है। जिससे मौजूदा सरकार की जमकर आलोचना हो रही है। तो दूसरी तरफ यह मामला शिक्षा विभाग की किरकिरी साबित हो रही है । और गरियाबंद जिले के प्रशासनिक व्वस्था पर सवाल खड़े हो रहा है।जिससे भ्रष्ट लोगो को प्रशासनिक संरक्षण देकर सरकार की छवि प्रशासन खराब कर रहा वहीं मामले पर संचालक लोक शिक्षण ने पुनः कार्यवाही के करने कलेक्टर गरियाबंद को मूल जाँच प्रतिवेदन मांगी है ताकि कार्यवाही कर सके। बता दे की तात्कालिक डी एम सी ने खेलगड़िया मद जिससे प्राथमिक शाला और माध्यमिक शाला के बच्चो के लिए खेल सामग्री खरीदी जानी थी । वहा टीवी खरीदा गया था ।खासकर जिले के मैनपुर ब्लॉक सहित गरियाबंद और छुरा ब्लॉक में जमकर धांधली की गई थी ।जब इस मामले की सूचना के अधिकार अधिनियम से सत्यापित दस्तावेज निकालकर उसमें पड़ताल किया तो छुरा ब्लॉक के कई स्कूलों में शिक्षक टीवी खारीदकर अपने घरों में ले गए थे ।और जहा बिजली नही है उस स्कूल में टी वी खरीदा गया था।तो कई स्कूलों में खेल सामग्री के विपरीत समान खरीदा गया था तो कई स्कूलों में शिक्षको ने दुकाकर से मिलकर फर्जी बिल लगाए व राशि हड़प कर लिए थे। खास बात यह है कि आज भी इस मामले को लेकर लोगो में उत्सुकता बनी है।और लोग बेसब्री से कारवाही होने

डाकघरों में हो रही झंडों की बिक्री

रायगढ़, 3 अगस्त। विगत वर्ष की तरह इस वर्ष भी आजादी के अमृत महोत्सव के तहत हर घर तिरंगा मनाया जा रहा है। भारतीय डाक विभाग देश भर में अपनी पहुंच और जनशक्ति का उपयोग करते हुए हर घर तिरंगा अभियान के महत्व के बारे में लोगों को जागरूक करने देश के 1.6 लाख डाक घरों से झंडा का बिक्री किया जाएगा। इसके साथ ही नागरिक विभाग की ई-पोस्ट ऑफिस के माध्यम से भी झंडा ऑनलाइन खरीद सकते हैं। मुख्य डाकघरों में सेल्फी प्वाइंट लगाया जाएगा तथा आने वाले ग्राहकों को सेल्फी लेने के लिए प्रेरित किया जाएगा और लोगों को हर घर तिरंगा हैशटैग के साथ इंडिया पोस्ट के सोशल मीडिया हैंडल पर अपनी सेल्फी साझा करने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा। वर्त्तमान में बस्तर, बिलासपुर, दुर्ग एवं रायपुर के मुख्य डाकघरों में मात्र 25 रूपए के दर पर झंडों की बिक्री आज से किया जा रहा है तथा शीघ्र ही अन्य डाकघरों में यह सेवा शुरू किया जाएगा।

छुरा विकासखंड से आज तक एक भी राजनीतिक पार्टी ने विस प्रत्याशी नहीं बनाया

राजिम (छुरा) इस बार फिर विधानसभा चुनाव 2023 की तैयारी को लेकर जगह जगह दीवारों में राजनीतिक दलों के लोग अपना प्रचार चालू कर दिए हैं जिसमे कोई नेता केंद्र की उपलब्धि बता रहे है तो कोई राज्य की विभिन्न योजनाओं का गुणगान कर रहे हैं। तथा विधान सभा राजिम के सभी गांव की दीवारों में लाल लाल बड़े बड़े अक्षरों में असानी से देखा जा सकता है हैरानी की बात ये है की इनमे से कुछ एसे भी गांव है जिसमे जीते हुए प्रत्याशी भले ही आज तक ना पहुंचे हो पर उनके कार्यकर्ता दीवारों में प्रचार के माध्यम से जरूर पहुंच गए हैं। राजिम विधानसभा बने लगभग 71 साल हो गए हैं और इन 71 सालों में विकासखंड छूरा से आज तक एक भी प्रत्याशी किसी भी राजनीतिक पार्टी से नहीं बनाए गए एक बार फिर विधानसभा चुनाव सर पर है। ऐसे में नहीं लगता कि छूरा विकासखंड से कोई प्रत्याशी बनाए जाएंगे क्योंकि हर बार फिंगेश्वर विकासखंड के राजिम या आसपास के प्रत्याशी विधानसभा चुनाव का प्रत्याशी बनता आ रहा है बता दें कि 1952 से राजिम विधानसभा अस्तित्व में आया और पहला चुनाव प्रारंभ हुआ जिसमे रानी श्याम कुमारी देवी ने पहला चुनाव 1952 में जीते और 1962 तक विधायक रहे फिर अविभाजित मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री पंडित श्यामाचरण शुक्ल ने 1962 से लेकर1977 तक विधायक रहे और वे लगातार 3 बार चुनाव जीते ,, पर सन 1977 में कांग्रेस विरोधी लहर के परिणाम स्वरूप राजिम से संत कवि पवन दीवान को जनता पार्टी से प्रत्याशी बनाए और उन्होंने चुनाव जीती, इसी क्रम में 1980

में जीवन लाल साहू को मौका मिला फिर उसने भी चुनाव जीत कर विधान सभा पहुंचे पर पुनः 1985 में भाजपा के बैनर तले पुनीत राम साहू ने परचम लहराया और जीत दाखिल की फिर पुनःश्यामाचरण शुक्ल के नेतृत्व में 1990 से लेकर 1998 तक कांग्रेस का दबदबा रहा और उपचुनाव में वर्तमान विधायक राजिम अमितेश शुक्ल को पहला मौका मिला और उन्होंने जीत हासिल की और राजिम विधानसभा का प्रतिनिधित्व किया तो वही 2003 में भाजपा प्रत्याशी चंदूलाल साहू ने अमितेश को हराकर इस सीट पर कब्जा किया कांग्रेस से फिर 2008 में अमितेश शुक्ल ने भाजपा को पटकनी देकर इस सीट पर पुनः कब्जा किया,, इसके बाद 2013 में संतोष उपाध्याय ने फिर भाजपा का झंडा लहराया और चुनाव जीते ।और 2018 के विधानसभा चुनाव में इस बार अमितेश शुक्ल भारी रिकॉर्ड मतों से जीत हासिल किया और कांग्रेस सरकार के विधायक है पर पूर्व पंचायत मंत्री को मंत्रिमंडल में जगह नहीं मिली वही इस विधानसभा सीट में लगभग 50त्न ओबीसी मतदाता है 30त्न एस टी मतदाता है तो 10त्न एससी और 10त्न सामान्य वर्ग के मतदाता है। साथ ही इसमें पांडुका अंचल सहित छूरा विकासखंड के घाट खाल्हे कहे जाने वाले यह क्षेत्र पहले कांग्रेसियों का गढ़ कहा जाता था पर धीरे-धीरे इसमें भी सेंध लगता गया और आज यहां कोई स्पष्ट या नहीं कहा जा सकता यह किसी एक पार्टी विशेस का दबदबा है बता दें कि विकासखंड छूरा में लगभग 74 ग्राम पंचायत आते है जिसके आश्रित ग्रामों को मिला दिया जाए तो लगभग 120 के आसपास गांव होंगे पर इतने बड़े आबादी का प्रतिनिधित्व करने वाले इस विकासखंड छूरा में आज तक के विधानसभा प्रत्याशी किसी भी राजनीतिक पार्टी नहीं तलाश सकी न ही पैदा कर सकी तो केवल इस विकास खंड के मतदाता केवल मतदान के लिए ही बने हैं जो एक प्रकार का इस विकास खंड के साथ हमेशा छलावा होता रहा है। हमेशा से ही सभी राजनीतिक दल केवल राजिम फिंगेश्वर के आसपास के प्रत्याशी तलाशते हैं। इसमें से कुछ राजनीतिक दलों के प्रत्याशी तो राजिम आसपास अपना निवास भी बना लिय है और उस गांव के मतदाता होने का दावा करते हैं पर चुनाव जीतने या हारने के बाद रायपुर में जा बैठते हैं ।जिससे उनके कार्यकर्ताओं सहित आम जनता को अपनी समस्या और मांगी पूरी करने के लिए रायपुर निवास का चक्कर काटना पड़ता है ऐसे में हर बार स्थानीय प्रत्याशी को लेकर चुनावी मुद्दा बनता है पर वह चुनावी मुद्दा चुनाव आते आते खत्म हो जाता है धीरे-धीरे विधानसभा चुनाव की तारीख नजदीक आ रहे हैं।राजनीतिक वा सामाजिक संगठन का स्थानीय बैठकों का दौर जारी है दीवारों में प्रचार प्रसार प्रारंभ हो गया है।जिसमे कुछ ऐसे लोगों का भी प्रचार प्रसार कर रहे हैं जिन्हें लोग जानते ही नहीं हैं ।तो ही कुछ लोग ऐसे हैं जो विधानसभा चुनाव के 4 साल तक चुप बैठे रहे और चुनाव के1 साल या 6 महीना पहले जनता को रिझाने में लगे हैं भरोसा दिला रहे है और झूठे वादे कर लुभाने में लगे है।तो विभिन्न प्रकार के धार्मिक, सामाजिक आयोजन सहित शादी ब्याह ,छट्ठी(बरही) ,शोक सभा (मरनी,हरनी) तथा समाज सेवा का ढोंग ,महिला समूहों और मितानिनों से मिल रहे है।वा एसे अन्य कार्यक्रम में शिरकत कर रहे है ।पर आज के मतदाता पढ़े-लिखे और होशियार है जो वर्तमान में तो हां हां बोल दे रहे हैं पर चुनाव के समय समझ जाते हैं कि किन को वोट देना है। इस प्रकार देखना होगा कि इस चुनाव में जाति समीकरण और क्षेत्रीय

लायन सुंदरमल के नेतृत्व में किया गया पौधारोपण

खरसिया। लायंस क्लब खरसिया सिटी द्वारा श्रावण मास पर नगर के मुख्य सड़क मार्ग के किनारे विभिन्न किस्म जैसे आम, बिही, अशोक एवं परिजात के पौधों का रोपण किया गया। जिसमे क्लब के अध्यक्ष लायन सुंदरमल चंदवानी, सचिव लायन डॉ. हितेश गवेल, कोषाध्यक्ष लायन दुर्गेश ठक्कर, डिस्ट्रिक्ट प्रो एमजेएफ लायन अनिल अग्रवाल, लायन रामनारायण सोनी, लायन शिव अग्रवाल, लायन अमित अग्रवाल, लायन मदन गर्ग एवं अन्य लायन सदस्य उपस्थित रहे। हमारे संवाददाता से चर्चा के दौरान अध्यक्ष लायन सुंदरमल चंदवानी ने बताया की लायंस क्लब समाज सेवा क्षेत्र में अग्रणी रहती है एवं इसी प्रकार सामाजिक कार्य निरंतर जारी रहेंगे।

सामाजिक एवं धार्मिक कार्यों के लिए कृषक प्रीतपाल का सम्मान

पत्थलगांव। सामाजिक एवं धार्मिक कार्यो मे हमेंशा अग्रणी रहने वाले कृषक परिवार मे जन्मे प्रीतपाल सिंह भाटिया(सिटू) के सम्मान मे गुरूद्वारा शीशगंज साहेब दिल्ली के प्रधानग्रंथी ज्ञानी हरनाम सिंह द्वारा उन्हे शिरोपा देकर सम्मानित किया गया है,इस दौरान कृषक प्रीतपाल सिंह भाटिया के साथ उनके अन्य परिवारिक सदस्य भी मौजुद थे। यह सम्मान सिक्ख समाज के लिए गौरव की बात है। एक कृषक परिवार मे जन्म लेकर व्यवसाय संचालित करने के साथ-साथ प्रीतपाल सिंह भाटिया ने हमेंशा सामाजिक एवं धार्मिक कार्यो मे भी बढचढ कर हिस्सेदारी निभायी है। वे खेती किसानी के कार्य से भी जुडे हुये है,गौ पालन करना पेशा के साथ-साथ उन्होने अपना शौंक भी बनाया है। कृषि के क्षेत्र मे भी इस सिक्ख परिवार को अनेक बार पुरस्कृत किया जा चुका है,प्रीतपाल सिंह भाटिया पत्थलगांव के अलावा रायपुर मे रहकर भी अपने समाज के अलावा अन्य सामाजिक कार्यो मे भी बढचढ कर हिस्सेदारी निभाते आये है। यही वजह है कि शीशगंज गुरूद्वारा साहेब दिल्ली के प्रधानग्रंथी द्वारा बेहद खास शिरोपा देकर प्रीतपाल सिंह भाटिया एवं उनके समस्त परिवार को सम्मानित किया। इस संबंध मे प्रीतपाल सिंह का कहना है कि संस्कार उन्हे उनके पूर्वजो का आर्शीवाद स्वरूप मिला हुआ है। उनका कहना था कि धार्मिक कार्यो मे उनके अलावा पूरा परिवार अपनी भरपूर सहभागिता निभाता है,इस कार्य की प्रेरणा उन्हे उनके पिता स्व.गुरूचरण सिंह भाटिया से मिली थी।

इंदिरा गांधी स्कूल की छात्राओं ने निकाली मतदाता जागरूकता रैली

पत्थलगांव। इंदिरा गांधी कन्या स्कूल की छात्राओ ने आज मतदाता जागरूकता रैली निकाली। इस दौरान बच्चो ने लोगो से मतदान करने की अपिल की,छात्राओ ने शहर मे भ्रमण कर शहरवासियों को मतदान करने जागरूक किया,इस दौरान ब्लाक शिक्षा अधिकारी धनीराम भगत भी स्कूली बच्चो के साथ रैली मे शामिल थे।

सीईओ ने दिखाई हरी झंडी, कलेक्टर, एसपी ने साइकिल चलाकर दिया मतदान का संदेश

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

बीजापुर 3 अगस्त । जिले में आगामी विधानसभा आम निर्वाचन की तैयारी शुरू हो गई है। निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार आज मतदाता सूची का प्रारंभिक प्रकाशन हो गया है। वहीं मतदाताओं के बीच मताधिकार का प्रयोग करने विभिन्न माध्यमों से विविध गतिविधियों से ÷स्वीप कार्यक्रम÷ किया जा रहा है। इसी कड़ी में आज जिला स्तर पर साईकिल रैली का आयोजन किया गया। जिले के अलावा तहसील एवं पंचायत स्तरों पर भी जागरूकता कार्यक्रम चलाया गया।

जिला स्तर के साईकिल रैली का आयोजन स्वामी आत्मानंद उत्कृष्ट अंग्रेजी माध्यम स्कूल से प्रारंभ होकर शहीद वेंकट राव महाविद्यालय में सम्पन्न हुआ। साईकिल रैली को स्वीप के नोडल अधिकारी एवं सीईओ जिला पंचायत श्री रवि कुमार साहू ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। वहीं साईकिल रैली में कलेक्टर श्री राजेन्द्र कुमार कटारा एवं पुलिस अधीक्षक आंजनेय वार्ष्णेय ने साईकिल चलाकर रैली में भाग लिए और आम मतदाताओं एवं नए मतदाताओं को मताधिकार का प्रयोग करने का संदेश दिए। वहीं इस जागरूकता साईकिल रैली में जिला उप निर्वाचन अधिकारी श्री पवन कुमार

प्रेमी सहित जिला स्तर के वरिष्ठ अधिकारीगण स्कूल एवं कालेज के विद्यार्थी सहित आम नागरिकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। स्कूल कालेज के विद्यार्थी एवं अधिकारियों ने मतदाताओं को मताधिकार करने का संदेश दिया। रैली का समापन शहीद वेंकटराव महाविद्यालय में हुआ जहां पुलिस अधीक्षक श्री आंजनेय वार्ष्णेय ने लोकतांत्रिक परम्पराओं की मर्यादा बनाए रखने, स्वतंत्र, निष्पक्ष एवं शांतिपूर्ण निर्वाचन की गरिमा को अक्षुण रखने निर्भीक होकर धर्म, वर्ग, जाति, समुदाय, भाषा अथवा अन्य किसी प्रलोभन से प्रभावित हुए बिना सभी निर्वाचनों में अपना मताधिकार का उपयोग करने शपथ दिलाया।

स्वीप के जिला स्तर के नोडल अधिकारी श्री रवि कुमार साहू ने स्वीप अर्न्तगत मतदाता जागरूकता कार्यक्रम एवं लोकतंत्र में मतदान के महत्व को विस्तृत रूप से बताया। वहीं कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री राजेन्द्र कुमार कटारा ने कहा कि चुनई तिहार का पहला कार्यक्रम साईकिल रैली से प्रारंभ हुआ है। स्वीप कार्यक्रम के तहत हम सब मिलकर जिले में मतदान का प्रतिशत को बढ़ाऐंगे बीजापुर संवेदनशील जिला होने के कारण बाकि जिलों से कम मतदान होता है। कम मतदान होना जागरूकता की कमी भी एक कारण है। जिसे हम विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से मताधिकार एवं मतदान का महत्व बताऐंगे और एक मजबूत लोकतंत्र की स्थापना करने अपना योगदान देंगे। भारत एक लोकतांत्रित देश है। जहां जनता के द्वारा चुनी हुई जनप्रतिनिधि शासन करती है जो जनता के प्रति जवाबदार रहती है।इसलिए मतदान जरूरी है लोगो को मताधिकार का उपयोग कराना जरूरी है। अगर उसे कोई प्रत्याशी पसंद नहीं है। तो भी अपना मत इनमें से कोई नहीं (नोटा) को अपना वोट दे सकते है। लेकिन मतदान जरूर करें। वहीं आज 02 अगस्त से मतदाता सूची का प्रारंभिक प्रकाशन हो रहा है। ऐसे युवा जो 1 अक्टूबर 2023 को 18 वर्ष के हो रहे हैं। वह अपना नाम वोटर लिस्ट में जरूर जुड़वाएं वहीं नाम विलोपन, संशोधन सहित निर्वाचन, मताधिकार एवं ईवीएम मशीन का प्रदर्शन जिला कार्यालय, अनुभाग, तहसील कार्यालय सहित स्कूल- कालेजो में किया जा रहा है। जिसमें प्रतीकात्मक रूप से इलेक्ट्रानिक वोटिंग मशीन में वोट डालकर लोग देख रहे है और ईवीएम मशीन में वोटिंग करने का झिझक और मशीन के प्रति भ्रांतिया भी दूर हो रही है।महाविद्यालय में आयोजित इस मतदाता जागरूकता कार्यक्रम में क्विज कांपीटीशन, निबंध, वाद-विवाद जैसे प्रतियोगिता भी आयोजित हुआ जिसमें स्कूल कालेज के भावी मतदाता विद्यार्थी बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिए और मताधिकार मतदान एवं निर्वाचन प्रक्रिया से अवगत हुऐ। इस अवसर पर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्री चन्द्रकांत गर्वना, जिला उप निर्वाचन अधिकारी श्री पवन कुमार प्रेमी सहित महाविद्यालय के प्राचार्य सहित अधिकारीगण, शिक्षक-शिक्षिकाएं उपस्थित थे।

समाचार संक्षेप

सिलगेर में 229 बटालियन ने ग्रामीण किसानों को बांटे सब्जियों के बीज

बीजापुर, 3 अगस्त (तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता)। केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल केवल शांति व सुरक्षा ही नहीं बल्कि देश के नागरिकों में विकास का संदेश देने तथा विश्वास बहाली का भाव जगाने का प्रमुख स्तम्भ है। दिनांक 28 जनवरी 2023 को ए और एफ 229 बटालियन केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल को सिलगेर जोकि जिला सुकमा, छत्तीसगढ़ के अत्यधिक संवेदनशील क्षेत्र में तैनात किया गया था। श्री पुष्पेन्द्र कुमार, कमाण्डेंट 229 बटालियन के निर्देशानुसार कृषि विभाग, आवापल्ली की मदद और कैम्प में उपस्थित अधिकारियों के मार्गदर्शन में दिनांक 01/08/2023 को जरुरतमंद किसानों को भिण्डी, बैंगन, टमाटर, मिर्ची एवं लौकी इत्यादि को बीजों को वितरण करने हेतु ग्रामीणों की सभा का आयोजन किया गया। जिसमें सिलगेर के ग्रामीणों ने शिरकत किया। इस सभा के माध्यम से 50 से अधिक किसानों को विभिन्न सब्जियों के बीज वितरित किए गए तथा साथ ही बीजों को लगाने की विधि भी समझाई गई। श्री जाधव राहुल अशोक (सहायक कमाण्डेंट), श्री निशांत शर्मा (सहायक कमाण्डेंट) तथा एस.टी.एफ कमाण्डर निरीक्षक सोनवीर के द्वारा ग्रामाणों को भिण्डी, बैंगन, टमाटर, मिर्ची एवं लौकी इत्यादि सब्जियों की खेती करने के लिये जागरुक किया गया। इस पहल के माध्यम से आदिवासी ग्रामीणों के खान-पान के स्तर में सुधार होगा क्योंकि यह क्षेत्र शहर से दूर स्थित है। यहाँ बारिश के मौसम में आवागमन बाधित रहने के कारण विभिन्न सब्जियों इत्यादि की पहुँच मुश्किल रहती हैं। इस सभा में उपरोक्त सब्जियों से होने वाले व्यापारिक फायदे के बारे में ग्रामीणों को समझाया गया। ए व एफ 229 वाहिनी के जवानों के द्वारा इस कार्यक्रम के तहत ग्रामीणों को सब्जियाँ ठीक तरीके से उगाने व फसल के रख-रखाव के तरीके सिखाये गये। इसके साथ ही 229 वाहिनी के कमाण्डेंट महोदय व शिक्षा विभाग, बीजापुर की सहायता से ए व एफ 229 वाहिनी ने इसी कार्यक्रम में सिलगेर गाँव के 25 से अधिक, पढ़ने वाले बच्चों व उनके अभिभावकों को स्कूल की ड्रेस, जूते व टिफिन बॉक्स आदि भी वितरित किये। 229 वाहिनी केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल सिलगेर में अति संवेदनशील व घोर नक्सल प्रभावित क्षेत्र में तैनात रहकर भी आम जनता व बल के बीच सामंजस्य स्थापित कर रही है और साथ में आम जनता के साथ संवैधानिक अधिकारों एवं जीवनयापन को सुलभ बनाने हेतु दिन रात कार्य करने में प्रयासरत है।

मतदाता जागरूकता अभियान जिला,ब्लाक एवं पंचायत स्तर पर आयोजित करें

बीजापुर, 3 अगस्त (तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता)। साप्ताहिक समय-सीमा की बैठक में कलेक्टर श्री राजेन्द्र कुमार कटारा ने आगामी विधानसभा आम निर्वाचन 2023 की तैयारी पर विस्तृत समीक्षा करते हुए आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। जिसके तहत 02 अगस्त को मतदाता सूची का प्रारंभिक प्रकाशन दावा आपत्तियों का निराकरण, मतदान केन्द्रों में विशेष ग्राम सभा का आयोजन मतदाता सूची का वाचन सहित व्यापक रूप से मतदाता जागरूकता अभियान स्वीप एक्टीविटी का आयोजन जिला स्तर सहित, ब्लाक, तहसील एवं पंचायत स्तर पर विविध कार्यक्रम रैली, नाटक नुक्कड़, क्विज कांपीटिशन, वाद-विवाद सहित प्रतियोगिता का आयोजन कर आम नागरिकों, स्कूल-कालेजों के विधार्थियों को शामिल कराने के निर्देश दिए। आगामी सप्ताह होने वाले विश्व आदिवासी दिवस एवं राष्ट्रीय पर्व स्वतंत्रता दिवस के आयोजन को लेकर सफलतापूर्वक कार्यक्रम आयोजित कराने संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए।जिले के समस्त आवासीय स्कूलों, आश्रम, छात्रावास, पोटाकेबिनों में अनाधिकृत व्यक्तियों के प्रवेश वर्जित करने एवं कोताही बरतने वाले कर्मचारियों पर तत्काल अनुशासनात्मक कार्रवाई करने के निर्देश दिए। बच्चों की सुरक्षा में किसी भी प्रकार की लापरवाही नहीं बरतने के सख्त निर्देश दिए।वर्तमान समय में आईफ्लू के मरीजों की संख्या में लगातार वृद्धि हो रही है जिसमें आवासीय स्कूलों के बच्चें भी शामिल है संक्रमित बच्चों में सुरक्षित ढंग से तीन दिनों तक आईसोलेशन में रखने स्कूल नहीं भेजने एवं जिला अस्पताल में ईलाज के लिए समुचित व्यवस्था करें ताकि अन्य मरीजों में संक्रमण न पहुंचे एवं आईफ्लू के गाईलाईन, संक्रमण से बचाव, उपचार के संबंध में बच्चों एवं आम नागरिकों को जागरूक करने के निर्देश दिए।बरसात के मौसम में विभिन्न संक्रामक बीमारियों के रोकथाम समुचित उपचार सहित मलेरियों जांच को बढ़ाने पाजिटिव्ह मरीजों का बेहतर उपचार करने सहित जिला अस्पताल की व्यवस्थाओं का जायजा लेते हुए आवश्यक निर्देश दिए।राष्ट्रीय राजमार्ग सहित विभिन्न सड़कों पर आवारा पशुओं के भीड़ को हटाने, दुर्घटना को रोकने आवश्यक कदम उठाने पशुपालकों को जुर्माना लगाने सहित संयुक्त कार्रवाई कर सड़क से पशुओ को हटाने के निर्देश दिए।

स्वतंत्रता दिवस की तैयारी हेतु जिला स्तर के अधिकारियों को दी गई जिम्मेदारी

बीजापुर, 3 अगस्त (तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता)। कलेक्टर श्री राजेन्द्र कुमार कटारा ने राष्ट्रीय पर्व स्वतंत्रता दिवस के सफल आयोजन हेतु सभी नामजद अधिकारियों को जिम्मेदारी सौंपते हुए कार्यक्रम के सफलता पूर्वक संचालन हेतु दिशा-निर्देश दिए। जिसके तहत बारिश के मौसम को मद्देनजर रखते हुए बैठक व्यवस्था, पंडाल की व्यवस्था, परेड की तैयारी, पेयजल की व्यवस्था सहित मंच संचालन, पुरूस्कार वितरण, मैदान की साफ-सफाई, ध्वनि विस्तार यंत्रों की व्यवस्था, मुख्य अतिथियों का स्वागत, मीडिया गैलरी, स्वल्पाहार सहित आवश्यक तैयारियां समय पर पूर्ण करने के निर्देश दिए। वहीं स्वतंत्रता दिवस की तैयारी का अंतिम रिहर्सल 13 अगस्त को सुबह 9 बजे मुख्य समारोह स्थल पर सभी अधिकारियों को उपस्थित होने के निर्देश दिए। बैठक में डीएफओ श्री अशोक पटेल, सीईओ जिला पंचायत श्री रवि कुमार साहू, एसडीएम एवं कार्यक्रम के नोडल अधिकारी श्री पवन कुमार प्रेमी, संयुक्त कलेक्टर श्रीमती सुमन राज सहित जिला स्तर के सभी वरिष्ठ अधिकारीगण मौजूद थे।

कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी ने ली राजनीतिक दलों की बैठक

बीजापुर, 3 अगस्त (तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता)। विधान सभा आम निर्वाचन 2023 के पूर्व निर्वाचक नामावलियों के द्वितीय विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण कार्यक्रम के अर्न्तगत 02 अगस्त को मतदाता सूची का प्रारंभिक प्रकाशन सहित मतदान केन्द्रों के युक्तिकरण के संदर्भ में कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री राजेन्द्र कुमार कटारा ने विभिन्न राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों की बैठक ली। जिसमें निर्वाचन आयोग के दिशा-निर्देश, मतदान केन्द्रों के युक्तियुक्तकरण सहित 02 अगस्त को मतदाता सूची के प्रारंभिक प्रकाशन के बारे में विस्तृत जानकारी दी। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री कटारा ने बाताया कि आयोग के दिशा-निर्देश के तहत 01 अक्टूबर 2023 को 18 वर्ष पूर्ण करने वाले सभी नागरिकों को वोटर लिस्ट में नाम जुड़वाने सहित नाम विलोपन एवं संशोधन के प्रक्रिया को बताया। 02 अगस्त से 31 अगस्त तक दावा आपत्ति प्राप्त करने, दावाआपत्ति आनलाईन/आफलाईन दोनो की सुविधा, वोटर हेल्पलाईन, निर्वाचन आयोग के वेबसाइट के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि सभी मतदान केन्द्रों में अभिहीत अधिकारी के द्वारा आफलाईन दावा आपत्ति स्वीकार किए जाएंगे। वहीं बूथ लेवल आफिसर को भी दावाआपत्ति दिया जा सकेगा।

एक नजर

आपदा पीड़ित 2 परिवारों को 8 लाख की आर्थिक सहायता

बलौदाबाजार, 3 अगस्त (तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता)। प्राकृतिक आपदा से मृत 2 लोगों के निकट परिजनों के लिए 8 लाख रूपये की आर्थिक सहायता स्वीकृत की गई है। प्रत्येक व्यक्ति के लिए 4-4 लाख रूपये की स्वीकृति प्रदान की गई है। कलेक्टर चंदन कुमार ने राजस्व पुस्तक परिपत्र की धारा 6-4 के तहत 27 जुलाई 2023 को ये स्वीकृतियां प्रदान की हैं। जिला कार्यालय से प्राप्त जानकारी के अनुसार लाभान्वित हितग्राहियों में चित्ररेखा पति स्व. एकादशिया निवासी ग्राम कटगी, तहसील कसडोल एवं चन्द्रशेखर महिलांग पिता मुनिराम महिलांग निवासी ग्राम पेण्ड्री तहसील सुहेला शामिल हैं। हितग्राहियों के निकट परिजनों के तालाब में डूबने, आग में जलने से मौत हो गई थी। कलेक्टर ने संबंधित तहसीलदारों को आरटीजीएस के जरिये पीड़ित लोगों के खाते में राशि जमा करने के निर्देश दिये हैं।

वजन त्यौहार स्थगित

बलौदाबाजार, 3 अगस्त (तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता)। राज्य शासन द्वारा वजन त्यौहार का आयोजन 1 से 13 अगस्त 2023 के बीच में किया जाना था। जिसमें जीरो से 6 साल तक के सभी बच्चों का विभिन्न तिथि वार वजन लिया जाना था। वर्तमान में निर्वाचन संबंधी मतदाता सूची का पुनरीक्षण का कार्य चालू है इसमें आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं को भी बूथ लेवल ऑफिसर बनाया गया है जिसके कारण आंगनबाड़ी कार्यकर्ता को दोनों कार्य करने में कठिनाई हो रही थी जिसे देखते हुए वजन त्यौहार का कार्य स्थगित किया गया है। राज्य शासन से वजन त्यौहार कराए जाने का निर्देश प्राप्त होने पर किया जाएगा। उक्त जानकारी जिला कार्यक्रम अधिकारी महिला एवं बाल विकास विभाग एल आर कच्छप के द्वारा दी गयी है।

अब 16 अगस्त तक किसान करवा सकते हैं फसल बीमा का आवेदन

बलौदाबाजार, 3 अगस्त (तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता)। प्रधानमंत्री फसल बीमा योजनान्तर्गत अब 16 अगस्त 2023 तक फसल बीमा करवा सकते हैं। इस हेतु जिले के ऋणी एवं अऋणी कृषक निकटतम जिला सहकारी केंद्रीय बैंक, छत्तीसगढ़ राज्य ग्रामीण बैंक या व्यावसायिक बैंकों तथा सामान्य सुविधा केन्द्रों में जाकर अपने फसल का फसल बीमा करवा सकते हैं। उपसंचालक कृषि बलौदाबाजार- भाटापारा से मिली जानकारी के अनुसार प्रधानमंत्री फसल बीमा योजनान्तर्गत वर्ष 2023-24, 2024-25 एवं 2025-26 के खरीफऔर रबी फसल सीजन के लिए फसल बीमा योजना लागू की गयी है। जिसके तहत खरीफसीजन के धान सिंचित, धान असिंचित, मक्का, कोदो-कुटकी, रागी, अरहर, उड़द एवं मूंग फसल शामिल हैं। वहीं रबी सीजन के चना, गेहूं सिंचित एवं असिंचित एवं राई और सरसों फसल को अधिसूचित किया गया है। जिसके लिये खरीफफसल हेतु बीमित राशि का 2 प्रतिशत और रबी फसल के लिए बीमित राशि का डेढ़ प्रतिशत अथवा वास्तविक प्रीमियम जो भी हो, प्रीमियम के रूप में वहन किया जाएगा। फसल बीमा करवाने की अंतिम तिथि 31 जुलाई 2023 निर्धारित की गई है। प्रधानमंत्री फसल बीमा योजनान्तर्गत 3 वर्षों के लिये जिले में चयनित एचडीएफसी इर्गो जनरल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड को फसल बीमा करने निर्धारित किया गया है।

स्वीप कार्यक्रमः सायकल-बाइक रैली को कलेक्टर और एसपी ने हरी झंडी दिखा कर किया रवाना

बलौदाबाजार, 3 अगस्त (तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता)। स्वीप कार्यक्रम के तहत मतदाताओं को जागरूक करने के उद्देश्य से रिमझिम बारिसों के बीच में जिला मुख्यालय स्थित शासकीय दाउ कल्याण् सिंह महाविद्यालय बलौदाबाजार में सायकल-बाइक रैली का आयोजन किया गया। जिला निर्वाचन अधिकारी एवं कलेक्टर चंदन कुमार एवं वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक दीपक झा ने हरी झण्डी दिखाकर सायकल-बाइक रैली को रवाना किया गया। रैली में जनपद पंचायत के अधिकारियों कर्मचारियों सहित बड़ी संख्या में कालेज के छात्र-छात्राओं ने उत्साह से भाग लिया। रैली शहर के प्रमुख मार्गो से होते हुए संयुक्त जिला कार्यालय भवन में संपन्न हुआ। समापन के अवसर पर कलेक्टर चंदन कुमार ने कलेक्टोरेट के समस्त विभागों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को जागरूक मतदाता बनने के लिए शपथ दिलाया। इस मौके पर स्वीप के नोडल अधिकारी जिला पंचायत सीईओ श्रीमती नम्रता जैन, बलौदाबाजार एसडीएम रोमा श्रीवास्तव, उप जिला निर्वाचन अधिकारी आर.आर दुबे एवं विभिन्न विभागों के जिला अधिकारी सहित कालेज के छात्र-छात्राएं बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

शिव महापुराण कथा व सुनने वालों से शिवमय हुआ तिल्दा-नेवरा

तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

तिल्दा-नेवरा, 3 अगस्त। 7 अगस्त तक नेवरा बीएनबी हाई स्कूल ग्राउंड में हो रहा है भव्य शिव महापुराण का आयोजन, अंतरराष्ट्रीय कथावाचक पंडित प्रदीप मिश्रा शिव महापुराण की कथा सुना रहे हैं।

पंडित प्रदीप मिश्रा को देखने और सुनने के लिए उमडे भीड़ सावन माह के दौरान शिव महापुराण का हो रहा है आयोजन जिसके चलते लाखों की संख्या में भक्तजन हो रहे हैं उपस्थित साथ हीप्रथम दिन होने पर विभिन्न पार्टियों के राजनेता उपस्थित हुए। शिव महापुराण कथा का श्रवण करने पहुंचे विधायक प्रमोद कुमार शर्मा, औषधि पादप बोर्ड उपाध्यक्ष खुशवंत गुरु साहेब, पूर्व राज्यसभा सांसद छाया वर्मा, जिला पंचायत एवं सभापति, सिंधी अकादमी अध्यक्ष राम गिडलानी, बाल संरक्षण आयोग सदस्य आशा यादव, तिल्दा नेवरा नगर पालिका अध्यक्ष लेमिक्छा गुरु डाहरिया, उपाध्यक्ष बीजेपी प्रदेश उपाध्यक्ष लक्ष्मी वर्मा। राम पंजवानी सहित अनेक लोग साथ पार्षद एल्डरमैन आदि लोग उपस्थित रहे। आयोजक घनश्याम अग्रवाल उनके साथ रमेश रिंकू अग्रवाल सहित परिवार जन उपस्थित थे। इस भव्य आयोजन में शांति बनाए रखने के लिए सैकड़ों पुलिसकर्मी एवं सैकड़ों बाउंसर बुलाए गए साथ ही सैकड़ों कार्यकर्ता रहे।

कथा के चलते सरकारी आफिस वीरानः नगर में चल रही कथा में सरकारी कार्यालयों में विरानी देखी गई मुख्य बाजार भी दो से पांच बजे तक स्नाटा रहा हर कोई कथा पंडाल की ओर थे।

स्कूलों के समय में बदलावः श्री कावड़ महा शिव पुराण को देखते हुए शिक्षा विभाग ने सभी स्कूलों को सुबह सात बजे से बारह बजे तक की गई गांव गांव में भी स्कूल प्रभावित हो रहे है।

वाहनों के लिए सड़क बंदः नगर की कुछ सड़कों को भारी वाहनों के लिय बंद किया गया पंडित दीनदयाल मार्ग तिल्दा से हाई स्कूल नेवरा। नेवरा से कोहका मार्ग को खाली रखा गया है जगह जगह यातायात पुलिस को तैनाती की गई है। कथा में आने वाले भक्तो के लिय आयोजको ने ऑटो रिक्शा भी कम दर पर इंतजाम किया है।

कथा में आ सकते हैं कई नेता : प्रदेश के मुख्य मंत्री भूपेश बघेल पूर्व मुख्य मंत्री रमन सिंह सहित अनेक दिगज स्मलित होने की खबर है। नगर में बारिश रिम झीम बरस रही है और सुबह से लाखो लोग कथा पंडाल में आ चुके है।

सिद्धखोल में पुलिस ने शुरु की कार्रवाई, पेट्रोलिंग भी बढ़ाई

असामाजिक तत्वों को रोककर की गई पूछताछ, 22 वाहन चालकों पर की गई चालानी कार्रवाई

तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

कसडोल, 3 अगस्त। बलौदाबाजार जिला के कसडोल क्षेत्र से 10 किमी दूर सिद्धखोल जलप्रपात का मनमोहक दृश्य इन दिनों देखते ही बनता है किंतु इस पर्यटक स्थल में कई असामाजिक तत्व व मनचले लोगों का भी आना जाना लगा रहता है जिनके ऊपर अब पुलिस ने कार्रवाई करनी शुरू की गई है। थाना प्रभारी केसी दास ने बतलाया कि समाचार पत्रों के माध्यम से तथा आम जनों से भी लगातार यह सूचना प्राप्त हो रही थी कि कुछ मनचले व बदमाश प्रवृत्ति के लोगों द्वारा पर्यटक स्थल में बहुत तेज गति से वाहन चालन किया जाता है। इससे आने जाने वालों को परेशानी होती है तथा इन्हें यदि रोका नहीं गया तो भविष्य में कोई गंभीर दुर्घटना भी कर सकती है। इसके अलावा कई लोगों द्वारा इस पर्यटन स्थल की गरिमा को धूमिल करते हुए यहां शराब का सेवन भी किया जाता है जिससे यहां (सिद्धखोल में)आने वाले परिवार , महिलाएं और बच्चे आदि असहज और असुरक्षित महसूस करते हैं। उपरोक्त बिंदुओं को दृष्टिगत रखते हुए सिद्धखोल जलप्रपात पर्यटक स्थल में शांति व्यवस्था बनाए रखने एवं मनचले लोगों पर लगाम लगाना अत्यंत आवश्यक हो गया था।

वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक दीपक कुमार झा के निर्देशन में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक एवं उप पुलिस अधीक्षक मुख्यालय अभिषेक सिंह के मार्गदर्शन में थाना प्रभारी निरीक्षक केसी दास के नेतृत्व में थाना कसडोल पुलिस टीम द्वारा सिद्धखोल जलप्रपात स्थल एवं इसके आसपास लगातार पेट्रोलिंग की जा रही है। कसडोल पुलिस टीम द्वारा अब तक पर्यटन स्थल में यातायात नियमों का पालन नहीं करने वाले 22 वाहन चालकों के विरुद्ध कार्रवाई की गई है। इसी प्रकार 29 जुलाई को सिद्धखोल जलप्रपात स्थल में खतरनाक ढंग से वाहन चालन करते हुए एक एक्सयूवी को पकड़ा गया। उक्त वाहन को धारा 185 एमवी एक्ट के तहत जप्त कर न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत किया जाएगा। इसके अतिरिक्त जलप्रपात स्थल में शांति एवं सुरक्षा बनाए रखने हेतु थाना कसडोल पुलिस द्वारा लगातार पेट्रोलिंग कर, वहां पहुंचने वाले पर्यटकों एवं आम जनों को पर्यटन स्थल की प्राकृतिक सुंदरता एवं गरिमा बनाए रखने हेतु लगातार समझाइश दी जा रही है। कसडोल पुलिस सिध्दखोल जाने वालों पर निगरानी रखने चेकिंग कर रही है।

सेवानिवृत्त उप पुलिस अधीक्षक वाजपेई एवं सहायक उपनिरीक्षक रावटे को विदाई

तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

बलौदाबाजार 3 अगस्त। 31 अगस्त को पुलिस कार्यालय सभाकक्ष में सेवानिवृत्त उप पुलिस अधीक्षक अनूप वाजपेई एवं सहायक उपनिरीक्षक बलीराम रावटे का विदाई कार्यक्रम का आयोजन किया गया। अनूप वाजपेई पिता सहित चंद्रभूषण वाजपेई पुलिस विभाग मे14 जुलाई 1990 को उप निरीक्षक के पद पर भर्ती हुए थे। तत्पश्चात दिनांक 14 सितम्बर 2021 को राजपत्रित अधिकारी उप पुलिस अधीक्षक के पद पर पदोन्नत हुए हैं। पूर्व में वे जिला महासमुंद मे पदस्थ होकर कार्य किये है। वर्तमान में अनूप वाजपेई जिला बलौदाबाजार-भाटापारा में उप पुलिस अधीक्षक, विशेष किशोर पुलिस इकाई के रूप में पदस्थ होकर कार्यरत थे तथा थाना राजादेवरी, गिधपूरी एवं चौकी बया का पर्यवेक्षण कार्य संपादित कर रहे थे। अनूप वाजपेई 31 अगस्त को सेवानिवृत्त हुए हैं।

बलीराम रावटे पिता रामलाल पुलिस विभाग मे 3 दिसम्बर 1982 को आरक्षक के पद पर भर्ती हुए थे। तत्पश्चात 30 अक्टूबर 2014 को सहायक उप निरीक्षक के पद पर पदोन्नत हुए हैं। पूर्व में वे जिला रायपुर के कई थानों में तथा जिला बलौदाबाजार-भाटापारा में सिमगा, सिटी कोतवाली, सुहेला आदि थानों में पदस्थ होकर कार्य किये है तथा अभी वर्तमान में थाना पलारी में पदस्थ होकर कार्यरत थे। बलीराम रावटे 31 अगस्त को सेवानिवृत्त हुए हैं।

कार्यक्रम के दौरान वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक दीपक कुमार झा एवं हरीश यादव अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक ने उप पुलिस अधीक्षक अनूप वाजपेई एवं सहायक उपनिरीक्षक बलीराम रावटे के उज्जवल भविष्य एवं स्वस्थ जीवन की कामना करते हुए उनका विभाग के प्रति किए गए उल्लेखनीय कार्यो की प्रशंसा किये तथा इन्हे शाल एवं श्रीफल से सम्मानित कर पुलिस विभाग की ओर से स्मृति चिन्ह तथा उपहार भेंट किया गया।

पुण्यतिथि पर मोहम्मद रफी को कलाकारों ने किया याद

तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

छुरा, 3 अगस्त। हिंदी सिनेमा के मशहूर गायक मोहम्मद रफ़ी साहब के पुण्य तिथि पर विगत दिनों छुरा नगर के संगीत प्रेमियों द्वारा यादें रफ़ी कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें छुरा सहित विभिन्न स्थानों से पधारे कलाकारों ने अपनी प्रस्तुति दिया। मां सरस्वती के पूजन और रफ़ी साहब के छायाचित्र पर माल्यार्पण पश्चात कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत रायपुर निवासी सुबोध फ्रेंक्लिन ने मै जट यमला पगला दीवाना और गुलाबी आँखे जो तेरी देखी गीत से किया। उनके बाद उत्तम पवार(रायपुर)ने

हार्मोनिका में है दुनिया उसी की जमाना उसी का और वादियाँ मेरा दामन, छुरा निवासी श्रीमती सपना कंसारी ने तेरी गलियों में न रखेंगें कदम, और सलीम मेमन ने तुम मुझे यू भुला न पाओगे और हाल क्या है दिलो का न पूछो सनम गाया रामरतन मरकाम ने चौदहवी का चांद हो और चाहूंगा मै तुम्हे साँझ सवेरे, राजिम के गायक क्रांति साहू ने दिल का सुना सा तराना ढूंढ़ेगा और सुन सुन मोर मया पीरा के संगवारी रे, इमरान अली ने सात अजूबे इस दुनिया में, मंगलमूर्ति सोनी ने तुझको पुकारे मेरा प्यार, लिलेश्वर प्रसाद साहू, राजिम ने परदेशियों से ना अंखियां मिलाना और खुदा भी आसमां से जब जमीन पर, गरियाबंद निवासी हरीश ठक्कर ने छू लेने दो नाजुक होठों, रुपेश कुमार शर्मा ने ये दुनिया ये महफ़िल?, दिनेश मरकाम छुरा ने

एक न एक दिन ये कहानी बनेगी, ओमप्रकाश साहू ने शिरडी वाले साई बाबा, नफ़रत की दुनिया को छोड़कर, डॉ आनंद गुप्ता ने ओ मेरी महबूबा और तुमने मुझे देखा होकर मेहरबां जैसे एक से बढ़कर एक खूबसूरत गीतों की प्रस्तुतियां दी। इनके अलावा धनंजय हरित फिगेश्वर, योगेश गुप्ता धमतरी, नेमीचंद यादव, ऋषि साहू, सलीम मेमन, संजय महाडिक, हेमंत विश्वकर्मा, मीनू देवदास, भूपेंद्र देवदास, पंकज गुप्ता, ने भी गीत प्रस्तुत किया।

बार नवापारा अभयारण्य जाने का मार्ग जर्जर

तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

कसडोल, 3 अगस्त। बलौदाबाजार जिला के कसडोल नगर पंचायत से 40 किलोमीटर की दूरी पर पर्यटन केंद्र एवं अभ्यारण बार - नवापारा एवं आसपास के कई ग्रामों को जोड़ने वाली सड़क अत्यधिक जर्जर स्थिति में है।

कसडोल से बोरसी, बकला होते हुए बार- नवापारा अभ्यारण जाने के लिए आवागमन का यह मुख्य मार्ग है। बारिश के कारण सड़क इतनी अत्यधिक जर्जर हो चुकी है कि राहगीर प्रतिदिन गिरकर चोटिल हो रहे हैं। इस मार्ग से चलकर तमाम स्कूली छात्र- छात्राएं आवागमन करते हैं जिन्हें कीचड़ और गड्ढों से रोज सामना करना पड़ता है और आए दिन चलने वाले चार पहिया वाहनों से उछलते कीचड़ के कारण, इस मार्ग पर रोजाना छात्रों के कपड़े खराब होते हैं।

सैकड़ों छात्र-छात्राएं पढ़ने हेतु इसी मार्ग से आने जाने को मजबूर है क्यों कि इसके अतिरिक्त अन्य कोई मार्ग नहीं है। इस मार्ग निर्माण की मांग आसपास के ग्रामीणों द्वारा पिछले काफी लंबे समय से करते आ रहे हैं किंतु मार्ग निर्माण अभी तक नहीं किया गया। विभागीय अधिकारियों को इसकी सूचना देने के बाद भी उनके द्वारा कोई मरम्मत कार्य नहीं कराया गया है! यदि शीघ्र ही इस मार्ग की मरम्मत नहीं किया गया तो कभी भी कोई गंभीर दुर्घटना घट सकती है।

न्यायालय तहसीलदार डोंगरगढ़
तहसील डोंगरगढ़ जिला - राजनांदगाँव
रा.प्र.क्रमांक- 202306092100050
अ/ 6 (अ) वर्ष 2022-23

ईश्तहार

एतद् सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदक काशीराम पिता सोईदा व अन्य 01 जाति कुंबी दोनों निवासी व कृषक ग्राम चौथना तहसील डोंगरगढ़ जिला राजनांदगांव (छ.ग.) द्वारा आवेदन पत्र पेश किया है कि ग्राम चौथना प.ह.न. 24 रा.नि.म. चौथना स्थित भूमि आवेदक क्रमांक 01 काशीराम पिता साईदा कुंबी ख.न. 122/3 रकबा 0.426 हे. भूमि तथा ख.न. 122/2 रकबा 0.951हे. आवेदक क्रमांक 02 के नाम से राजस्व अभिलेख में दर्शाया गया है जबकि वास्तविक मौके में भौतिक रूप से ख.न. 122/2 रकबा 0.426 हे. भूमि आवेदक क्रमांक 01 के कब्जे एवं आधिपत्य की है, तथा ख.नं. 122/3 रकबा 0.951 हे. भूमि आवेदक क्रमांक 02 के कब्जे एवं आधिपत्य की है। हल्का पटवारी द्वारा बंटाकन किये जाने के समय आवेदक क्रमांक 01 की भूमि का बंटाकन 122/2 के स्थान पर 122/3 और आवेदक क्रमांक 02 की भूमि का बंटाकन 122/3 के स्थान 122/3 लिपिकीय त्रुटिवश दर्ज हो गया है, जिसके कारण आवेदकगणों को शासकीय कार्यों में बहुत कठिनाईयों का सामना करना पड़ रहा है। अतः ख.न. में पूर्व हल्का पटवारी द्वारा बंटाकन में हुई त्रुटि को संशोधन किये जाने. का निवेदन किया गया है।

उक्त संबंध में जिस किसी को किसी भी प्रकार की दावा आपत्ति हो तो पेशी दिनांक 07.08.2023 तक स्वयं अथवा अपने अधिवक्ता के माध्यम से दावा आपत्ति प्रस्तुत कर सकते हैं, समयावधि पश्चात प्राप्त दावा आपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जावेगा।

यह आज दिनांक 14.07.2023 को मेरे हस्ताक्षर से अभिकरण की मुद्रा लगाकर दिया गया है।

तहसीलदार
डोंगरगढ़

मुहर

न्यायालय तहसीलदार डोंगरगढ़
तहसील डोंगरगढ़ जिला - राजनांदगाँव
रा.प्र.क्रमांक- 202304092100031
अ/6 (अ) वर्ष 2022-23

ईश्तहार

एतद् सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदक मिलू कंवर पिता सुबेदार निवासी देवकट्टा तहसील डोंगरगढ़ जिला राजनांदगाँव (छ.ग.) द्वारा आवेदन पत्र पेश किया है कि ग्राम देवकट्टा प.ह.न. 18 रा.नि.म. बेलगाँव में स्थित भूमि खसरा नम्बर 754/3 क्षेत्रफल 0.405 हे./1.00 एकड़ भूमि राजस्व अभिलेख में दर्ज है। उक्त भूमि में कब्जा एवं विक्रय पत्र में उल्लेखित चौहाद्दी अनुसार त्रुटिपूर्ण दर्ज खसरा नम्बर 754/3 को सुधार कर खसरा नम्बर 754/4 क्षेत्र रकबा 0.405 हे. एवं अनावेदक भाग सिंह कंवर पिता गनपत कंवर जाति कंवर निवासी देवकट्टा की भूमि को कब्जा अनुसार खसरा नम्बर 754/4 को सुधार कर खसरा नम्बर 754/3 क्षेत्रफल 0.534 हे. भूमि को राजस्व अभिलेखों में दर्ज किये जाने का निवेदन किया गया है।

उक्त संबंध में जिस किसी को किसी भी प्रकार की दावा आपत्ति हो तो पेशी दिनांक 07.08.2023 तक स्वयं अथवा अपने अधिवक्ता के माध्यम से दावा आपत्ति प्रस्तुत कर सकते हैं, समयावधि पश्चात् प्राप्त दावा आपत्ति पर कोई विचार नही किया जावेगा।

यह आज दिनांक 14.07.2023 को मेरे हस्ताक्षर से अभिकरण की मुद्रा लगाकर दिया गया है।

तहसीलदार
डोंगरगढ़

मुहर

प्रारंभिक प्रकाशन में मतदाताओं की कुल संख्या 853992, 31अगस्त तक लिए जाएंगे दावा-आपत्ति

कलेक्टर ने ली राजनैतिक दलों के प्रतिनिधियों की बैठक

तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

बलौदाबाजार 3 अगस्त। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी चंदन कुमार ने बुधवार को राष्ट्रीय एवं राज्य मान्यता प्राप्त राजनैतिक दलों के प्रतिनिधियों की बैठक लेकर मतदाता सूची के द्वितीय विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण कार्यक्रम एवं मतदाता सूची का प्राम्भिक प्रकाशन की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि 2 अगस्त 2023 की स्थिति में जिले में कुल 853992 मतदाता है जिनमे पुरुष मतदाता 430110, महिला 423870, तृतीय लिंग 12 तथा निःशक्तजन 8136 शामिल है। इसमे 18 से 19 आयु वर्ग के 14338 मतदाता हैं।

कलेक्टर ने बताया कि भारत निर्वाचन आयोग द्वारा जारी कार्यक्रम अनुसार फोटोयुक्त निर्वाचक नामावली का द्वितीय विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण अर्हता तिथि 01 अक्टूबर 2023 की स्थिति में जिले के चारों विधानसभा निर्वाचन क्षेत्रों क्रमशः क्रमांक 43बिलाईगढ़, 44- कसडोल,45 बलौदाबाजार एवं 46 -के सभी मतदान केन्द्रों में निर्वाचक नामावली का प्रारंभिक प्रकाशन 02 अगस्त को

किया गया है तथा प्रारंभिक प्रकाशन किए गये निर्वाचक नामावली का जिले के सभी ग्राम पंचायतों में ग्राम सभा में वाचन किया गया। निर्वाचक नामावलियों का वाचन कर निर्वाचक नामावली का शत-प्रतिशत शुद्धिकरण तथा मतदान के लिए कोई भी मतदाता न छूटे एवं अधिक से अधिक मतदाताओं को मतदान के लिए जागरूक किया जएगा। प्रारंभिक प्रकाशन 02 अगस्त से 31 अगस्त 2023 तक निर्वाचक नामावली में नाम जोड़ने, नाम विलोपन करने तथा त्रुटि सुधार करने हेतु दावा आपत्ति स्वीकार किए जायेंगे। 12 अगस्त शनिवार, 13 अगस्त रविवार, 19 अगस्त शनिवार एवं 20 अगस्त रविवार को विशेष शिविर के माध्यम से पात्र व्यक्तियों के नाम मतदाता सूची में जोड़ने, संशोधन तथा विलोपन हेतु फॉर्म 06, 07, 08 भरवाने विशेष शिविर आयोजित होंगे। दावा आपत्ति निराकरण की अवधि 22 सितम्बर निर्धारित है तथा निर्वाचक नामावलियों का अंतिम प्रकाशन 04 अक्टूबर 2023 को किया जाएगा।उन्होंने बताया कि बिलाईगढ़ विधानसभा क्षेत्र अंतर्गत-129, कसडोल में 402,बलौदाबाजार में 196 तथा भाटापारा विधानसभा क्षेत्र में 282 कुल 1009 मतदान केन्द्र बनाये गये हैं।

बैठक में वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक दीपक झा, जिला पंचायत सीईओ श्रीमती नम्रता जैन, उप जिला निर्वाचन अधिकारी रामरतन दुबे सहित राष्ट्रीय एवं राज्य मान्यता प्राप्त राजनीतिक दल के प्रतिनिधि एवं जिला निर्वाचन कार्यालय के अधिकारी-कर्मचारी उपस्थित थे।

कार्यालय कार्यपालन अभियन्ता
ग्रामीण यांत्रिकी सेवा संभाग, दन्तेवाड़ा, जिला दक्षिण बस्तर दन्तेवाड़ा (छ.ग.)
//मैनुअल पद्धति निविदा सूचना क्रमांक-01 (द्वितीय बार)//

क्रमांक/744/व.ले.लि./ग्रा.यां.सेवा/2023, दन्तेवाड़ा दिनांक-01/08/2023

1. एकीकृत पंजीयन प्रणाली अंतर्गत सक्षम श्रेणी में पंजीकृत ठेकेदारों से निम्नलिखित निर्माण कार्यों हेतु मैनुअल निविदा दिनांक **10/08/2023** तक आमंत्रित की जाती है:-

सं.क्र.	कार्य का विवरण	अनुमानित लागत (रू. लाख में)
1	2	3
01.	जोनल निविदा जनपद पंचायत कटेकल्याण	40.00 लाख

2. उपरोक्त निर्माण कार्यों की निविदा की सामान्य शर्तें, धरोहर राशि, विस्तृत निविदा विज्ञप्ति, निविदा दस्तावेज व अन्य जानकारी विभागीय वेब साईट **http://res.cg.gov.in** में दिनांक **03/08/2023** से **07/08/2023** तक निशुल्क डाऊनलोड की जा सकती है।

कार्यपालन अभियंता
ग्रामीण यांत्रकी सेवा संभाग दन्तेवाड़ा
जिला-दक्षिण बस्तर दन्तेवाड़ा (छ.ग.)

जी-03925/4

एक नजर

नए चेहरों को अपनी कला दिखाने का मौका देता है 'चनाजोर'

रायपुर, 3 अगस्त। अभी हाल ही में एक नया ओटीटी प्लेटफॉर्म लॉन्च हुआ है 'चनाजोर' जो एक बेजोड़ कॉमेडी एक्सपीरियंस प्रदान कर रहा है। चनाजोर के सभी शोज में आपको नए चेहरे ही देखने को मिलेंगे। ये प्रेश कलाकार हैं जो अभी तक किसी बड़े पर्दे पर या डिजिटल स्क्रीन पर नहीं गए हैं या ज्यादा फेमस नहीं हुए हैं, पर एक्टिंग की इनके अंदर कोई कमी नहीं है और ये किसी को भी अपने निराले अंदाज़ से गुदगुदाने का पूरा दम रखते हैं। चनाजोर पर एक शो है भूतिया और इसके कलाकार हैं प्रतीक शुक्ला, देव जोशी और कृपा मिश्रा। ये तीनों ही गुजराती थिएटर आर्टिस्ट्स हैं पर इस शो के संवाद और एक्टिंग ऐसी है कि आप हँसते हँसते लोटपोट हो जाएंगे। ठीक इसी प्रकार से नहीं आज नहीं में संजीत धूरी, निहारिका शर्मा और भावेश प्रजापति ने काफी अच्छा काम किया है। हम निकम्मा बनाते हैं वेब सीरीज जो कि कानपुर के काकादेव में शूट हुई है वह होस्टल में रह रहे उन लड़कों की कहानी बताती है जिन्होंने अपने जीवन से सारी उम्मीदें छोड़ दी है और बस अपना समय व्यतीत कर रहे हैं। फ़िर उनकी जिंदगी में एक घटना घटित होती है जिससे उन्हें सबक मिलता है और वह सही जिंदगी की और अग्रसर होते हैं। इस सीरीज में टेलीविजन के उभरते हुए कलाकार हरवीर सिंह, आशुतोष सेमवाल, अलीशा प्रवीण, रूचि त्रिपाठी, राकेश श्रीवास्तव, संजय चौधरी और प्रतीक सिंह ने काफी अच्छा काम किया है।

समय सीमा पर सड़कों के निर्माण और मरम्मत कार्य पूर्ण करें: कलेक्टर

रायपुर , 3 अगस्त। कलेक्टर डॉ सर्वेश्वर नरेन्द्र भुरे ने कलेक्टोरेट परिसर स्थित सभाकक्ष में लोक निर्माण विभाग की समीक्षा बैठक ली। बैठक में उन्होंने कहा कि जिले में जिन सड़कों की स्वीकृति मिली है उन्हें समय सीमा में पूर्ण करें ताकि आमजनता को राहत मिले। उन्होंने कहा कि जिन सड़कों में मरम्मत की आवश्यकता है उन सड़कों में पैच वर्क करते हुए सुधार करें। जहां पर मुआवजा से संबंधित प्रकरणों आकलन कर निपटारा करें। साथ ही जहां पर बिजली के पोल शिफ्टिंग की समस्या है वहां पर सीएसपीडीसीएल जल्द कार्रवाई करें ताकि कार्य में गति आ सकें। उन्होंने बारिश खत्म होने के तुरंत बाद सड़कों की मरम्मत करवाने के निर्देश दिए हैं। इस अवसर पर लोक निर्माण विभाग के सभी जोन के कार्यपालन अभियंता और कार्यक्रम अभियंता उपस्थित थे।

स्मार्ट मीटरिंग परियोजना के लिए 1744 करोड़ का ऑर्डर

रायपुर, 3 अगस्त। टाटा पावर को छत्तीसगढ़ राज्य विद्युत् वितरण कंपनी लिमिटेड (सीएसपीडीसीएल) में स्मार्ट मीटरिंग परियोजना के कार्यान्वयन का लेटर ऑफ़अवार्ड (एलओए) मिला है। छत्तीसगढ़ डिस्कॉम के तहत विभिन्न क्षेत्रों के लिए तीन पैकेजेस के लिए सीएसपीडीसीएल द्वारा जारी निविदा के निष्कर्ष में एलओए को जारी किया गया है। टाटा पावर ने पैकेज 2 में हिस्सा लिया था और उस में उन्हें सफलता मिली है। टीपीसीएल को मिली परियोजना का मूल्य - 1744 करोड़ रुपये है और इसकी अवधि 10 वर्ष होगी। टाटा पावर के सीईओ और एमडी, डॉ. प्रवीर सिन्हा ने कहा, हमें यह बताते हुए बहुत खुशी हो रही है कि, छत्तीसगढ़ राज्य विद्युत वितरण कंपनी लिमिटेड में स्मार्ट मीटरिंग परियोजना के कार्यान्वयन के लिए 1744 करोड़ रुपयों का एक महत्वपूर्ण ऑर्डर हमें मिला है। विद्युत वितरण क्षेत्र में नए परिवर्तन लाने के उद्देश्य से शुरू की जा रही, उच्च मूल्य की विशेष परियोजनाओं को सफलतापूर्वक पूरा करने की हमारी विशेषज्ञता का यह एक प्रमाण है। परियोजना में डिज़ाइन, आपूर्ति, स्थापना, कमीशनिंग के बाद उपभोक्ता स्तर पर और वितरण ट्रान्सफॉर्मर्स स्तर पर स्मार्ट मीटर्स का संचालन और रखरखाव शामिल होगा। परियोजना को संशोधित वितरण क्षेत्र योजना (आरडीएसएस) के तहत कार्यान्वित किया जाएगा।

जूनियर डाक्टरों की हड़ताल से स्वास्थ्य सेवाएं प्रभावित

स्टायफंड बढ़ाया जाए तथा बांड्स में कमी लाई जाए : अध्यक्ष

■ तरुण छत्तीसगढ़ (मुख्य नगर संवाददाता)

रायपुर, 3 अगस्त। प्रदेश के सभी मेडिकल कालेजों में कार्यरत जूनियर डॉक्टर आज भी हड़ताल पर रहे जिसके कारण सभी स्वास्थ्य सेवाएं प्रभावित हुई। मेकाहारा में सीनियर डॉक्टर्स मोर्चा संभाले हुए हैं। ओपीडी में मरीजों का पंजीयन हो रहा है लेकिन सभी फैकल्टी में आवश्यक चिकित्सकीय सुविधाएं प्रभावित हो रही है।

प्रदेश के जूडो अध्यक्ष भानुप्रताप सिंह ने बताया कि बढ़ती महंगाई के साथ हमारे स्टायफंड में कोई वृद्धि नहीं हो रही है। जूनियर और सीनियर डॉक्टर के स्टायफंड में वृद्धि होनी चाहिए। सरकार द्वारा संविदा कर्मचारियों के वेतन में वृद्धि की गई है। उन्होंने कहा कि पीजी करने के लिए बांड्स की अवधि में कमी लानी चाहिए तथा अन्य चिकित्सा क्षेत्रों में पढ़ाई के लिए सुविधाएं देनी चाहिए। हमने शिक्षा मंत्री, सचिव को ज्ञापन दिया है लेकिन हमारी मांगें अभी तक पूरी नहीं हुई है। प्रदेश के स्वास्थ्य मंत्री आज अंबिकापुर चले गए हैं जिसके चलते यह बातचीत नहीं हो पाई है।

मरीजों को हो रही परेशानी

मेडिकल कालेज रायपुर के बीआर अंबेडकर हास्पिटल में रायपुर तथा विभिन्न शहरों व गांवों के लोग बड़ी संख्या में आते हैं। जूनियर डॉक्टर सभी फैकल्टी में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। शिशु, स्त्री, अस्थि व नेत्र रोग विभाग में जूनियर डॉक्टरों के नहीं होने से आवश्यक चिकित्सा सुविधाएं प्रभावित हुई हैं।

संविदा कर्मी वापस लौटे

स्वास्थ्य विभाग में चिकित्सा सेवाओं में आवश्यक सेवा देने वाले लैब सहायक सीनियर नर्स, नर्स एवं एनएम जो कि संविदा में कार्यरत थे वे काम पर वापस लौट आए हैं। इधर प्लेसमेंट के कर्मचारियों ने भी संविदा में रखने की मांग की है। मेकाहारा में 500 से अधिक सफाई कर्मचारी प्लेसमेंट में हैं। स्वास्थ्य मंत्री ने निर्देश दिया है कि इन कर्मचारियों को संविदा में रखने की प्रक्रिया पूरी की जाए।

औसत से अधिक वर्षा कृषि कार्य में आई तेजी

■ तरुण छत्तीसगढ़ (मुख्य नगर संवाददाता)

रायपुर, 3 अगस्त। पूरे प्रदेश में औसत से अधिक वर्षा रायपुर जिले में हुई है। मौसम विभाग के अनुसार फिलहाल झड़ी रुक गई है लेकिन पूर्वी मध्य प्रदेश से लगे कोरिया, बलरामपुर, कवर्धा, बेमेतरा में आज भारी वर्षा की चेतावनी दी गई है। वहीं रविशंकर जलाशय परियोजना के गेट खोले गए हैं। सिकासेर के दरवाजे भी खोले जाने से महानदी का जलस्तर बढ़ता जा रहा है। शिवनाथ के अलावा हसदो, व केलो नदी के जलस्तर में भी वृद्धि हुई है। राजस्व विभाग के अनुसार फिलहाल यहां पर बाढ़ की स्थिति नहीं है।

मौसम विभाग के वैज्ञानिक डॉ. चंद्रा के अनुसार रायपुर में 36 प्रतिशत वर्षा हुई है जो कि सामान्य से ज्यादा है। उन्होंने बताया कि पूरे प्रदेश में इस समय 33 प्रतिशत वर्षा हुई है। इस तरह रायपुर जिले में सर्वाधिक वर्षा रिकार्ड की गई है। मध्य प्रदेश के ऊपर एक चक्रवाती घेरा एवं द्रोणिका होने के कारण पूर्वी मध्यप्रदेश से लगे कवर्धा, राजनांदगांव, कोरिया में भारी वर्षा की चेतावनी दी गई है। पिछले तीन दिनों से हो रही वर्षा से अनेक स्थानों पर जलभराव की स्थिति बन गई है।

बांधों एवं नदियों के जल स्तर में वृद्धि

राजस्व सचिव एनआर एक्का के अनुसार उत्तरी छत्तीसगढ़ में भारी वर्षा हो रही है लेकिन यहां पर बाढ़ की कोई अप्रिय स्थिति नहीं है। राज्य में शिवनाथ, खारुन, महानदी, सोनपैरी, सोढूर तथा केलो-हसदो नदी का जल स्तर बढ़ रहा है। यहां सभी बांध लबालब हैं। उन्होंने कहा कि जल संसाधन विभाग से इसका रिकार्ड मंगाया जा रहा है। राजिम के सीमावर्ती क्षेत्रों में भी मुनादी करा दी गई है। कई जलाशयों में भी पानी भर गया है। कृषि विभाग के अनुसार इस समय रोपाई का काम तेजी से चल रहा है। अच्छी वर्षा होने से किसान खुश हैं।

बरसाती नालों का भी जलस्तर बढ़ा

रायपुर में भी कई स्थानों पर पानी भर गया है। छोकरा नाला, जब्बार नाला, देवरानी-जेठानी नाला के अलावा कांकेर के पास भी नालों में बाढ़ आ गई है। गरियाबंद से रायपुर का मार्ग खुला हुआ है। मौसम विभाग के अनुसार फिलहाल वर्षा थम गई है। लोग भी निरंतर वर्षा होने से परेशान हो गए हैं।

रमन सिंह दिल्ली में मिल रहे वरिष्ठ भाजपा नेताओं से

■ तरुण छत्तीसगढ़ (मुख्य नगर संवाददाता)

रायपुर, 3 अगस्त। प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री एवं भाजपा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष डॉ. रमन सिंह दिल्ली यात्रा पर हैं। वे दिल्ली में छत्तीसगढ़ के सहप्रभारी मनसुख मांडविया सहित अन्य नेताओं से मुलाकात कर रहे हैं।

मिली जानकारी के अनुसार राज्य में विधानसभा चुनाव को देखते हुए अब सभी बड़े नेता दिल्ली का दौरा कर रहे हैं। प्रधानमंत्री के आगामी प्रवास को लेकर रणनीति बनाई जा रही है। 7 अगस्त को प्रधानमंत्री के रायगढ़ आने के कार्यक्रम के अंतिम रूप दिया जा रह है। डॉ. रमन सिंह को फिलहाल हाईकमान द्वारा काफी प्रोजेक्ट किया जा रहा है।

कांग्रेस की स्क्रीनिंग कमेटी गठित

कांग्रेस ने भी अब अपनी स्क्रीनिंग कमेटी का गठन बीती रात कर दिया है। इसमें अजय माकन को रखा गया है। अजय माकन पिछले कई वर्षों से छत्तीसगढ़ आ रहे हैं। दिल्ली निवासी माकन हाईकमान के काफी विश्वस्त नेताओं में से एक हैं। उनके भी शीघ्र रायपुर आने की चर्चा है।

भाजपा घोषणा पत्र समिति का अभियान शुरू

रायपुर,3 अगस्त। भारतीय जनता पार्टी के घोषणा पत्र समिति का अभियान आज से शुरू हो गया है. घोषणा पत्र समिति के संयोजक और दुर्ग सांसद विजय बघेल ने बताया कि अभियान के तहत लोगों के बीच पहुंचकर उनके मन की बात जानेंगे. लोगों से मिले सुझाव को पार्टी अपने घोषणा पत्र में शामिल करेगी. इस अभियान पर कांग्रेस ने तंज कसते हुए कहा कि भाजपा के लिए जनता के बीच जाकर माफीनामा पत्र बनाना ज्यादा बेहतर होगा. भाजपा घोषणा पत्र समिति अभियान को लेकर पूर्व मंत्री केदार कश्यप ने कहा कि घोषणापत्र समिति के 32 लोगों की टीम विभिन्न जिलों व गांवों में जाकर आने वाले समय में छत्तीसगढ़ के लिए क्या अलग करना है, इन विषयों पर लोगों से चर्चा करेगी. इसके उपरांत इन विषयों को, मुद्दों को अपने घोषणा पत्र में शामिल करेंगे.

कांग्रेस द्वारा स्क्रीनिंग कमेटी की लिस्ट जारी करने पर पूर्व मंत्री केदार कश्यप ने कहा कि ओम माथुर को भाजपा प्रदेश प्रभारी बनाए जाने के बाद कांग्रेस में बदलाव के बयार देखने को मिली है. चाहे मंत्री का इस्तीफा हो, पीसीसी अध्यक्ष बदले जाएं. कांग्रेस पार्टी सभी में बदलाव ला रही है. इस भ्रष्ट सरकार में अब बदलाव आएगा.

वहीं बीजेपी के घोषणापत्र बनाने के लिए अभियान की शुरुआत किए जाने पर कांग्रेस के संचार प्रमुख सुशील आनंद शुक्ला ने कहा बीजेपी घोषणा पत्र बनाने

के बजाय जनता के बीच जाकर माफीनामा पत्र बनाए तो उनके लिए ज्यादा ठीक रहेगा. तीन बार उन्होंने घोषणा पत्र बनाया. तीनों बार छत्तीसगढ़ की जनता ने उनके घोषणा पत्र पर भरोसा किया. दुर्भाग्य है कि तीनों बार उन्होंने जनता को धोखा दिया. अब ये घोषणा पत्र बनाएंगे तो जनता कैसे भरोसा करेगी.

हमने 36 में से 34 वादे किए पूरे: कांग्रेस

बीजेपी द्वारा हर विधानसभा में यात्रा निकाले जाने पर सुशील आनंद शुक्ला ने कहा कि हम भी जनता के बीच सकारात्मक बातों को लेकर जा रहे हैं. जनघोषणा पत्र के 36 में से 34 वादे हमने पूरे किए. बीजेपी के पास क्या है. उनको लगता है नरेंद्र मोदी की योजनाओं को लेकर जाएंगे. अगर उनकी तथाकथित योजनाएं सफल हुई हैं, तो यह हमारी सफलता को सुनिश्चित करता है. केंद्रीय योजनाओं की एजेंसी राज्य सरकार होती है. जनता बीजेपी को बेहतर ढंग से समझ रही है.

केंद्रीय विद्यालय में खेलकूद प्रतियोगिता

रायपुर, 3 अगस्त। केंद्रीय विद्यालय क्रमांक 2 रायपुर में संभाग स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता का शुभारंभ

2 अगस्त को केंद्रीय विद्यालय क्रमांक 2 रायपुर में संभाग स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता का शुभारंभ हुआ। यह प्रतियोगिता 2 से 4 अगस्त तक 3 दिनों तक चलेगी। इस प्रतियोगिता में रायपुर संभाग के 37 केंद्रीय विद्यालयों से खिलाड़ी वालीबॉल तथा योगासन प्रतियोगिता में भाग ले रहे हैं। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि ज्ञानेश शर्मा अध्यक्ष, योग आयोग छत्तीसगढ़ शासन एवं विशिष्ट अतिथि विनोद

कुमार, उपायुक्त केंद्रीय विद्यालय संगठन रायपुर संभाग के द्वारा किया गया। इस प्रतियोगिता में पर्यवेक्षक के रूप में श्रीमती सीमा प्रधान, प्राचार्य केंद्रीय विद्यालय सरायपाली एवं तकनीकी सहायक के रूप में राकेश केंतुरा, खेल शिक्षक केंद्रीय विद्यालय जशपुर उपस्थित रहे। प्रतियोगिता के निर्णायक मंडल के रूप में छत्तीसगढ़ योगासन स्पोर्ट्स एसोसिएशन के सदस्य एवं छत्तीसगढ़ स्टेट वालीबाल एसोसिएशन के सदस्य 3 दिनों तक अपनी सेवाएं देंगे एवं प्रतियोगिता को संपन्न कराने में अपना योगदान देंगे। कार्यक्रम के उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि ज्ञानेश शर्मा ने विश्व स्तर पर योग की असीम संभावनाओं पर प्रकाश डाला तथा सभी को अपने जीवन में योग अपनाने का आह्वान किया। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि विनोद कुमार जी उपायुक्त, केंद्रीय विद्यालय संगठन रायपुर संभाग ने खिलाड़ियों को खेल भावना के साथ खेलने तथा उत्कृष्ट प्रदर्शन की शुभकामनाएं दी। अतिथियों का स्वागत केंद्रीय विद्यालय क्रमांक 2 रायपुर के प्राचार्य सुजीत सक्सेना जी ने हरा पौधा भेंट कर किया। इस अवसर पर केंद्रीय विद्यालय संगठन का ध्वज अतिथियों के द्वारा फहराया गया। खिलाड़ियों के द्वारा सद्भावना के साथ प्रतिस्पर्धा करने की प्रतिज्ञा ली गई। मशाल प्रज्वलित किया गया।

बैठक

रायपुर, 3 अगस्त। कांग्रेस के राष्ट्रीय कार्यालय में एनएसयूआई राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक रखी गई है। जिसमें राष्ट्रीय प्रभारी कन्हैया कुमार और राष्ट्रीय अध्यक्ष नीरज कुंदन सभी प्रदेश के अध्यक्षों और राष्ट्रीय कार्यकारिणी के पदाधिकारियों की बैठक ले रहे हैं। विगत दिनों कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने भी बैठक में हिस्सा लिया था। बैठक में छत्तीसगढ़ के प्रदेश अध्यक्ष नीरज पांडेय भी शामिल हुए। उन्होंने प्रदेश में चल रही गतिविधियों की जानकारी बैठक में दी।

प्रधानमंत्री मुद्रा लोन मेला, बड़ी संख्या में हितग्राहियों ने उठाया लाभ : पारवानी

रायपुर, 3 अगस्त। कन्फेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (कैट) के राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष अमर पारवानी, चेयरमेन मगेलाल मालू, अमर गिदवानी, प्रदेश अध्यक्ष जितेन्द्र दोशी, कार्यकारी अध्यक्ष विक्रम सिंहदेव, परमानन्द जैन, वाशु माखीजा, महामंत्री सुरिन्द्रर सिंह, कार्यकारी महामंत्री भरत जैन, एवं कोषाध्यक्ष अजय अग्रवाल ने बताया कि आज कैट के प्रदेश कार्यालय में शाम 3: 30 बजे से शाम 6: 00 तक प्रधानमंत्री मुद्रा लोन मेला का आयोजन किया गया। मुद्रा लोन मेले में व्यपारियों एवं हितग्राहियों को प्रधानमंत्री मुद्रा लोन योजना का लाभ देने

कैट के टेक्नीकल टीम के साथ ही विभिन्न राष्ट्रीयकृत बैंक भी शामिल हुए। मुद्रा लोन मेले में व्यापारियों को इस योजना के अंतर्गत आवेदन करने की प्रक्रिया और आवश्यक दस्तावेजों के बारे में विस्तार से बताया गया।

कैट के राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री अमर पारवानी एवं प्रदेश अध्यक्ष श्री जितेन्द्र दोशी ने बताया कि आज कैट के प्रदेश कार्यालय में प्रधानमंत्री मुद्रा लोन योजना के अंतर्गत लोन मेले का आयोजन किया गया। जिसमें विभिन्न व्यापारिक संगठनो के प्रमुखों सहित व्यापारीगण शामिल हुए और इस योजना के बारे में हितग्राहियों ने विस्तार से जाना तथा लाभ उठाया । इस योजना के तहत 50 हजार से 10 लाख तक लोन, बिना गारंटी (पात्रता अनुरूप), आकर्षक ब्याज दर एवं अन्य लोन सम्बन्धी समस्याओं का समाधान किया जाना इत्यादि शामिल हैं। लोन मेले में राष्ट्रीयकृत बैंकों में बैंक ऑफ बडौदा, यूनियन बैंक, इण्डियन ओवरसीज बैंक आईडीबीआई बैंक, आरबीएल बैंक ने अपने स्टॉल लगाये तथा लगभग 100 लाभार्थी पहुंचे। कई हितग्राहियों के लोन तत्काल स्वीकृत हुए।

बेटी बचाओ मंच ने हरित श्रृंगार, सावन गीत तथा विविध खेल प्रतियोगिताओं का किया आयोजन

रायपुर, 3 अगस्त। संजय नगर बेटी बचाओ मंच का हरित श्रृंगार, छत्तीसगढ़ी व्यंजन , सावन आधारित गीत तथा पारंपरिक गेम्स फुड़ी व गोटा प्रतियोगिता टिकरापारा स्थित हरदेव लाला मंदिर प्रांगण में हर्ष व उल्लास के साथ संपन्न हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मंच के प्रदेश अध्यक्ष ललित मिश्रा तथा विशेष अतिथि अमलेश्वर परिक्षेत्र अध्यक्ष स्वरा मिश्रा थे। छत्तीसगढ़ महतारी व भारत माता की तस्वीर पर पूजा अर्चना तथा दीप प्रज्वलन के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। ग्रीन परिधान, सावन आधारित प्रश्नोत्तरी तथा कैटवॉक जैसे विभिन्न चरणों से गुजरकर अंकों के आधार पर लिए गए निर्णय अनुसार संजना तिवारी विजेता तथा सुनीता चौहान व उषा विश्वकर्मा उपविजेता घोषित हुए। प्रश्नोत्तरी में प्रथम शशि साहू, छत्तीसगढ़ी व्यंजन प्रथम डागेश्वरी साहू , फुड़ी प्रथम सरिता श्रीवास, गोटा प्रथम केजई साहू ,सावन गीत प्रथम लक्ष्मी यादव रहे । विजेताओं को ललित मिश्रा, राम कुमारी शर्मा तथा स्वरा मिश्रा ने पुरस्कार वितरित किया।

कौशल किशोर मिश्र प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी की ओर से तरूण छत्तीसगढ़, तरूण छत्तीसगढ़ प्रेस टॉवर, प्रेस काम्पलेक्स, रजबंधा मैदान, रायपुर (छ.ग.) से मुद्रित एवं प्रकाशित प्रधान संपादक- कौशल किशोर मिश्र, पंजी. क्रं. 45088/85 डाक पं.छ.ग./रायपुर संभाग/33/2021-23